हिन्द पाकेट बुक्स प्राइवेट लिमिटिड सस्ते मूल्य पर हिन्दी में उत्कृष्ट, मौलिक और अनुवादित पुस्तकें प्रकाशित करने वाली सर्वप्रथम भारतीय संस्था है

दीवान-ए-ग़ालिब



हिन्द पॉकेट बुक्स प्राइवेट लिमिटिड

प्रथम संस्करण : मार्च, १९५९

मूल्य : एक रुपया

प्रकाशक : हिन्द पाकेट बुक्स प्रा० लिमिटिड
जी० टी० रोड, शाहदरा, दिल्ली
मुद्रक : इण्डिया प्रिंटर्स, दिल्ली–६

दीवाने गालिब

✤ ✤ ✤ ✤ ✤

नक़्श[1] फ़रियादी है किसकी शोखी-ए तहरीर[2] का
कागज़ी है पैरहन[3] — हर पैकरे-तस्वीर[4] का

कावे-कावे-सख़्तजानीहा-ए-तन्हाई[5], न पूछ
सुबह करना शाम का लाना है जू-ए-शीर[6] का

जज़्बए-बेइख़्तियारे-शौक़[7] देखा चाहिये
सीनए-शमशीर[8] से बाहर है दम शमशीर का

आगही[9]-दामे-शुनीदन[10] जिस क़दर चाहे बिछाये
मुद्दआ[11] अन्क़ा[12] है — अपने आलमे तक़रीर का

बस कि हूं 'ग़ालिब' असीरी[13] में भी आतिश-ज़ेर-पा[14]
मूए-आतिश-दीदा[15] है हल्क़ा मेरी ज़ंजीर का

✤ ✤ ✤ ✤

जुज़[16] क़ैस और कोई न आया बरूए-कार[17]
सहरा, मगर बतङ्गिए-चश्मे-हुसूद[18] था

---

१. चिह्न, २. लिखावट की विशेषता, ३. पहनावा, ४. चित्र का आकार, ५. विरह-वेदना, ६. दूध की नदी, ७. उन्माद, भावना की तीव्रता, ८. म्यान ९. समक्ष, १०. श्रवण का जाल, ११. उद्देश्य, १२. दुर्लभ, १३. क़ैद, १४. पांव के तलवे, १५. जला हुआ बाल, १६. सिवाय, १७. सामने; काम के लिए, १८. ईर्ष्यालुओं की आंख की तंगी।

आशुफ़्तगी[1] ने नक़्शे - सुवैदा[2] किया दुरुस्त
ज़ाहिर हुआ कि दाग़ का सरमाया दूद[3] था

था ख़्वाब में ख़्याल को तुझसे मुआमला
जब आंख खुल गई न ज़ियाँ[4] था न सूद था

लेता हूँ मकतबे - ग़मे - दिल[5] में सबक़ हनोज़[6]
लेकिन यही कि 'रफ़्त' गया, और 'बूद' था

ढांपा कफ़न ने दाग़े अयूबे - बरहनगी[7]
मैं, वरना हर लिबास में नंगे - वुजूद[8] था

तेशे बग़ैर मर न सका कोहकन[9] 'असद'
सर - गश्तए[10] - ख़ुमारे - रुसूमो - क़ुयूद[11] था

✦ ✦ ✦ ✦ ✦

कहते हो, न देंगे हम, दिल अगर पड़ा पाया
दिल कहां कि गुम कीजे? हमने मुद्दआ पाया

इश्क़ से तबीअत ने ज़ीस्त[12] का मज़ा पाया
दर्द की दवा पाई, दर्द बे - दवा पाया

दोस्तदारे - दुश्मन[13] है! एतमादे - दिल[14] मालूम
आह बेअसर देखी, नाला[15] ना - रसा[16] पाया

सादगी[17] व पुरकारी,[18] बेख़ुदी[19] व हुशियारी
हुस्न को तग़ाफ़ुल[20] में जुरअत - आज़मा पाया

१. परेशानी, २. दिल के दाग़ का चिह्न, ३. धुआं, ४. हानि, क्षति, ५. दिल के ग़म का मदरसा, ६. अभी, ७. नग्नता के दोष, ८. अस्तित्व का कलंक, ९. शीरीं का प्रेमी फ़रहाद, १०. बँधा हुआ, ११. रीति-रिवाज, १२. जिन्दगी, १३. दुश्मन का दोस्त, १४. मन का विश्वास, १५. रुदन, १६. न पहुँचने वाला, १७. सरलता, १८. चालाकी, १९. मस्ती, २०. उदासीनता।

गुन्चा फ़िर लगा खिलने, आज हमने अपना दिल
ख़ूं किया हुआ देखा, गुम किया हुआ पाया
हाले दिल नहीं मालूम, लेकिन इस क़दर—यानी
हमने वारहा ढूंढा, तुमने वारहा पाया
शोरे-पन्दे-नासेह[1] ने ज़ख़्म पर नमक छिड़का
आपसे कोई पूछे, तुमने क्या मज़ा पाया ?

✤ ✤ ✤ ✤ ✤

दिल मिरा सोज़े-निहां[2] से बेमहाबा[3] जल गया
आतिशे-ख़ामोश[4] की मानिन्द गोया जल गया
दिल में ज़ौक़े[5] वस्लो[6] यादे यार तक बाक़ी नहीं
आग इस घर को लगी ऐसी कि जो था जल गया
मैं अदम[7] से भी परे हूं वरना ग़ाफ़िल वारहा
मेरी आहे-आतिशीं[8] से वाले-अंक़ा[9] जल गया
अर्ज़ कीजे जौहरे-अन्देशा[10] की गरमी कहां!
कुछ ख़याल आया था वहशत[11] का—कि सहरा जल गया
दिल नहीं तुझको दिखाता वरना दाग़ों की वहार
इस चिराग़ां[12] का करूं क्या, कारफ़रमा[13] जल गया
मैं हूं और अफ़सुरदगी[14] की आरज़ू 'ग़ालिब'! कि दिल
देखकर तर्ज़े-तपाके[15] अहले दुनिया जल गया

✤ ✤ ✤ ✤ ✤

१. उपदेशक की सीख; शोर, २. आन्तरिक जलन, ३. एकदम, ४. मूक आग, ५. चाह, ६. मिलन ७. अस्तित्वहीन, ८. जलती हुई आह, ९. अंका नामी पक्षी का पंख, १०. चिंतन-तत्व, ११. उन्माद, १२. दीपमाला १३. कृपालु, १४. विषाद, १५. व्यवहार का ढंग।

शौक़ हर रंग रक़ीबे[1] सरो सामां निकला
क़ैस तस्वीर के पर्दे में भी उरियां[2] निकला
ज़ख़्म ने दाद न दी तंगिए दिल की या रब
तीर भी सीनए-बिस्मिल[3] से पर-अफ़शां[4] निकला
बूए-गुल,[5] नालाए-दिल,[6] दूदे-चिराग़े-महफ़िल[7]
जो तिरी बज़्म से निकला सो परीशां निकला
है नौ-आमोज़े-फ़ना[8] हिम्मते-दुश्वार-पसन्द[9]
सख़्त मुश्किल है कि यह काम भी आसां निकला
दिल में फिर गिरिये[10] ने इक शोर उठाया 'ग़ालिब'
आह! जो क़तरा न निकला था, सो तूफ़ां निकला

✤ ✤ ✤ ✤ ✤

धमकी में मर गया, जो न बाबे-नबर्द[11] था
इश्क़े नबर्द पेशा तलबगार मर्द था
था ज़िन्दगी में मर्ग[12] का खटका लगा हुआ
उड़ने से पेशतर भी मिरा रंग ज़र्द था
तालीफ़[13] नुस्ख़ा-हाए-वफ़ा[14] कर रहा था मैं
मजमूअए-ख़याल[15] अभी फ़र्द-फ़र्द[16] था
दिल ता जिगर, कि साहिले दरियाए ख़ूं है अब
इस रहगुज़र में जल्वए-गुल, आगे गर्द था

---

१. प्रतिद्वन्द्वी, २. नग्न, ३. घायल का वक्ष, ४. फड़फड़ाता, ५. फूल की सुगन्ध, ६. दिल की आह, ७. महफ़िल के चिराग़ का धुआँ, ८. नौसिखिया, ९. कठिनाई का इच्छुक; साहसी, १०. रुदन, ११. अजेय, १२. मृत्यु, १३. रचना, १४. वफ़ा का पुतला, १५. विचार-संकलन, १६, बिखरा हुआ।

जाती है कोई ? कशमकश अन्दोहे-इश्क़[1] की !
दिल भी अगर गया, तो वही दिल का दर्द था
अहबाब[2] चारा-साज़िए-वहशत[3] न कर सके
ज़िन्दां में भी ख़याल, बयाबां-नवर्द[4] था
यह लाशे बेकफ़न 'असदे' ख़स्ता-जां की है
हक़ मग़फ़िरत[5] करे अजब आज़ाद मर्द था !

* * * * *

दहर[6] में नक़्शे-वफ़ा वजहे तसल्ली न हुआ
है यह वो लफ़्ज़ कि शर्मिन्दए-मानी[7] न हुआ
सब्ज़ए-ख़त[8] से तिरा काकुले-सरकश[9] न दबा
यह ज़मुर्रूद[10] भी हरीफ़े[11] दमे-अफ़ई[12] न हुआ
मैंने चाहा था कि अन्दोहे-वफ़ा[13] से छूटूं
वो सितमगर मिरे मरने पे भी राज़ी न हुआ
दिल गुज़रगाहे ख़याले मओ साग़र ही सही
गर नफ़स[14] जादए[15] सरे मंज़िले-तक़्वा[16] न हुआ
हूं तिरे वादा न करने में भी राज़ी कि कभी
गोश[17] मिन्नत-कशे[18] गुलबांगे-तसल्ली[19] न हुआ
किससे महरूमिए-क़िस्मत[20] की शिकायत कीजे ?
हमने चाहा था कि मर जायँ, सो वो भी न हुआ

१. प्रेम के विषाद की वेदना २. मित्र, ३. उन्माद का उपचार, ४. जंगल में घूमना। ५. मुक्ति ६. ज़माना, ७. सार्थक, ८. चेहरे के बाल; दाढ़ी; बढ़ता हुआ, ९. शोख़ ज़ुल्फ़, १०. लाल हीरा, ११. विरोधी, १२. सांप, १३. वफ़ा का ग़म, १४. सांस, १५. मार्ग, १६. परलोक की मंज़िल, १७. कान, १८. कृतज्ञ, १९. सान्त्वना की मधुर ध्वनि, २०. भाग्यहीन।

मर गया सदमए[1] यक जुम्बिशे[2] लब से 'ग़ालिब'
नातवानी[3] से हरीफ़े[4] दमे-ईसा[5] न हुआ

    

सताइश-गर[6] है ज़ाहिद[7] इस क़दर, जिस बाग़े-रिज़्वां[8] का
वो इक गुलदस्ता है हम बेख़ुदों[9] के ताक़े-निसियां[10] का
बयां क्या कीजिये बेदादे-काविश-हाए-मिज़गां[11] का
कि हर यक क़तरए-ख़ूं दाना है तस्बीहे मरजां[12] का
न आई सतवते-क़ातिल[13] भी माना मेरे नालों को
लिया दांतों में जो तिनका, हुआ रेशा-नयस्तां[14] का
दिखाऊंगा तमाशा, दी अगर फ़ुर्सत ज़माने ने
मिरा हर दाग़ेदिल, इक तुख़्म है सर्वे-चिराग़ां[15] का
किया आइनाख़ाने[16] का वो नक़्शा तेरे जल्वे ने
करे जो परतवे-ख़ुर्शीदे-आलम,[17] शबनमिस्तां[18] का
मिरी तामीर[19] में मुज़्मिर[20] है इक सूरत ख़राबी की
हयूला[21] बर्क़े-ख़िरमन[22] का है, ख़ूने गर्म दहक़ां का
उगा है घर में हर सू[23] सब्ज़ा, वीरानी, तमाशा कर
मदार अब खोदने पर घास के है मेरे दरबां का

---

१. आघात, २. हरकत, ३. दुर्बलता, ४. प्रतिद्वन्द्वी, ५. ईसा के मन्त्र, ६. प्रशंसक, ७. भक्त, ८. स्वर्ग, ९. मस्ती, १०. विस्मृति का ताक़, ११. पलकों के चुभने की पीड़ा, १२. मूंगे की माला, १३. हत्यारे का आतंक १४. जंगल का रेशा, १५. चिरागों का सरू; बहुत उज्ज्वल, १६. शीशों का घर, १७. दुनिया के सूरज का प्रतिबिम्ब १८. जहाँ ओस पड़ती हो, १९. निर्माण, २०. निहित, २१. भौतिक तत्त्व, २२. खलिहान पर गिरने वाली बिजली, २३. ओर: तरफ़।

ख़मोशी में निहां[1] ख़ूंगश्ता[2] लाखों आरज़ूएं हैं
चिराग़े-मुर्दा[3] हूं मैं बेज़ुबां गोरे-ग़रीबां[4] का

हनूज़ इक परतवे-नक़्शे-ख़याले-यार[5] बाक़ी है
दिले अफ़सुर्दा गोया हुजरा[6] है यूसुफ़ के ज़िन्दां का

बग़ल में ग़ैर की आप आज सोए हैं कहीं, वरना
सबब क्या! ख़्वाब में आकर तबस्सुम-हाए पिन्हां[7] का

नहीं मालुम किस किसका लहू पानी हुआ होगा!
क़यामत है सरश्क-आलूदा[8] होना तेरी मिज़गां[9] का

नज़र में है हमारी जादए-राहे-फ़ना[10] 'ग़ालिब'
कि यह शीराज़ा[11] है, आलम के अजज़ाए[12]-परीशां का

✢ ✢ ✢ ✢ ✢

न होगा यक बयाबां[13] मान्दगी[14] से ज़ौक़ कम मेरा
हबाबे-मौजए-रफ़्तार[15] है नक़्शे-क़दम[16] मेरा

मुहब्बत थी चमन से लेकिन अब यह बेदिमाग़ी है
कि मौजे-बूए-गुल[17] से नाक में आता है दम मेरा

✢ ✢ ✢ ✢ ✢

सरापा[18] रहने-इश्क़ो[19] नागुज़ीरे-उल्फ़ते-हस्ती[20]
इबादत[21] बर्क़[22] की करता हूं और अफ़सोस हासिल[23] का

---

१. निहित, २. खून की हुई, ३. बुझा हुआ चिराग़, ४. ग़रीब की क़ब्र, ५. प्रेमी-के विचार-चिन्ह का प्रतिबिम्ब ६. कोठरी, ७. आंसुओं में भीगी, ८. पलकें, ९. अंत का मार्ग, १०. संग्रह ११. बिखरे हुए तत्व, १२. जंगल, १३. थकन, १४. गतिमान तरंग पर बना बुद्बुद, १५. पद-चिह्न, १६. फूल की सुगन्ध की लहर, १७. सिर से पांव तक, १८. प्रेम-धरोहर, १९. अवश्यम्भावी जीवन-प्रेम, २०. पूजा, २१. बिजली, २२. प्राप्ति।

बक़दरे-ज़र्फ़[1] है, साक़ी! ख़ुमारे-तश्नाकामी[2] भी
जो तू दरियाए-मै[3] है, तो मैं ख़मियाज़ा[4] हूं साहिल का

✤ ✤ ✤ ✤ ✤

मेहरम[5] नहीं है तू ही नवाहाए-राज़[6] का
यां वरना जो हिजाब[7] है—पर्दा है साज़ का
रंगे-शिकस्ता[8] सुबहे बहारे नज़ारा है
यह वक़्त है शगुफ़्तने-गुलहाए-नाज़[9] का
तू और सूए-ग़ैर[10] नज़र हाए तेज़ तेज़
मैं और दुख तिरी मिज़ाहाए-दराज़[11] का
सर्फ़ा[12] है ज़ब्ते आह में मेरा, वगरना मैं
तामा[13] हूं एक ही नफ़से-जां-गुदाज़[14] का
हैं बस कि जोशे बादा से शीशे उछल रहे
हर गोशए-बिसात[15] है, सर शीशा बाज़ का
काविश[16] का दिल करे है तक़ाज़ा कि है हनोज़
नाख़ुन पे क़र्ज़, उस गिरहे-नीम-बाज़[17] का
ताराजे-काविशे-ग़मे-हिजरां[18] हुआ 'असद'
सीना, कि था दफ़ीना गुहर हाए-राज़[19] का

---

१. सामर्थ्य के अनुसार, २. प्यास का खुमार, ३. शराब की नदी, ४. अंगड़ाई; परिणाम। ५. जानने वाला, ६. भेद भरी आवाजें, ७. पर्दा, ८. उड़ा हुआ रंग, ९. रकीब की ओर, १०. लम्बी पलकें, ११. लाभ, १२. ग्रास, १३. प्रतिद्वन्द्वी घातक सांस, १४. संसार का कोना, १५. कुरेद, १६. अध खुली गांठ, १७. विरह की पीड़ा से बरबाद, १८. रहस्य के हीरे।

* * * * *

बज़्मे शाहनशाह में अशआर का दफ़्तर खुला
रखियो यारब ! यह दरे-गन्जीनए-गौहर[1] खुला

शब[2] हुई फिर अंजुमे-रख़्शन्दा[3] का मन्ज़र[4] खुला
इस तकल्लुफ़ से कि गोया बुतकदे का दर खुला

गरचे हूं दीवाना, पर क्यों दोस्त का खाऊं फ़रेब
आस्तीं में दश्ना[5] पिन्हां,[6] हाथ में नश्तर खुला

गो न समझूं उसकी बातें, गो न पाऊं उसका भेद
पर यह क्या कम है कि मुझसे वो परी-पैकर[7] खुला

है ख़याले हुस्न में हुस्ने-अमल का सा ख़याल
ख़ुल्द[8] का इक दर है, मेरी गोर[9] के अन्दर खुला

मुंह न खुलने पर है वो आलम कि देखा ही नहीं
ज़ुल्फ़ से बढ़कर नक़ाब उस शोख़ के मुंह पर खुला

दर पै रहने को कहा और कहके कैसा फिर गया
जितने अर्से में मिरा लिपटा हुआ बिस्तर खुला

क्यों अंधेरी है शबे-ग़म[10] ? है बलाओं[11] का नुज़ूल[12]
आज उधर ही को रहेगा दीदए-अख़्तर[13] खुला

क्या रहूँ ग़रबत में ख़ुश ? जब हो हवादिस[14] का यह हाल
नामा लाता है वतन से नामाबर[15] अकसर खुला

उसकी उम्मत[16] में हूं मैं, मेरे रहें क्यों काम बन्द
वास्ते जिस शै के 'ग़ालिब' गुम्बदे-बे-दर[17] खुला

---

१. हीरों के कोष का द्वार, २. रात, ३. चमकता हुआ तारा, ४. दृश्य, ५. चाकू, ६. छिपा हुआ, ७. परी जैसे शरीर वाला, सुन्दर, ८. स्वर्ग, ९. क़ब्र, १०. विषादमय रात, ११. विपत्तियों, १२. अवतरण, १३. सितारे की आँख, १४. दुर्घटनाएँ, १५. संदेश-वाहक, १६. अनुयायी वर्ग, १७. आकाश ।

* * * * *

शब, कि बर्क़े-सोज़े-दिल[१] से, ज़हरए-अब्र[२] आब[३] था
शोलए - जव्वाला[४] हर इक हल्क़ए-गिरदाब[५] था
वां, करम को उज़्रे - बारिश[६], था अनागीरे - ख़राम[७]
गिरियां[८] से यां पम्बए - बालिश[९] कफ़े - सैलाब[१०] था
वां, ख़ुद - आराई[११] को था मोती पिरोने का ख़याल
यां, हुजूमे - अश्क[१२] में तारे - निगह[१३] नायाब[१४] था
जल्वए - गुल[१५] ने किया था वां चिरागां आबेजू[१६]
यां, रवां[१७] मिज़गाने - चश्मेतर[१८] से ख़ूनेनाब[१९] था
यां, सरे - पुर - शोर[२०], बेख़्वाबी[२१] से था दीवार - जू[२२]
वां, वो फ़र्क़े - नाज़[२३] महवे - बालिशे कम - ख़्वाब[२४] था
यां नफ़स करता था रौशन शम्ए - बज़्मे - बेख़ुदी[२५]
जल्वए - गुल वां बिसाते - सोहबते - अहबाब[२६] था
फ़र्श से ता अर्श[२७] वां तूफ़ां था मौजे - रंग[२८] का
यां ज़मीं से आस्मां तक सोख़्तन[२९] का बाब[३०] था
नागहां[३१] इस रंग से ख़ूंनाबा[३२] टपकाने लगा
दिल कि ज़ौक़े - काविशे - नाख़ुन[३३] से लज़्ज़त-याब[३४] था

---

१. दिल जलाने वाली बिजली, २. बादल का पित्ता, ३. पानी, ४. घूमती हुई ज्वाला, ५. जल-भंवर, ६. तकिये का बहाना, ७. गति की लगाम थामे हुए, ८. रुदन ९. तकिए की रूई, १०. बाढ़ की आग, ११. आत्म-सज्जा, १२. अश्रु-समूह, १३. दृष्टि का सूत्र; निगाह, १४. अलभ्य, १५. फूलों की छवि, १६. नदी का पानी, १७. बह रहा, १८. भीगी हुई आँख की पलकें, १९. सुर्ख खून, २०. उन्मत्त सिर, २१. नींद न आना, २२. दीवार ढूँढ़ना, २३. कोमल सिर, २४. मखमली तकिये पर सोया हुआ, २५. मस्ती की सभा की शमा, २६. एकत्र मित्रों का बिछावन, २७. आकाश, २८. रंग की लहर, २९. जलना, ३०. कारण, ३१. सहसा, ३२. खून के आँसू, ३३. नाखून की कुरेद का मज़ा, ३४. आनन्दित।



नालए - दिल[1] में शब, अन्दाज़े - असर नायाब था
था सिपन्दे[2] बज़्मे - वस्ले - ग़ैर[3], गो बेताब था!
मक़्दमे - सैलाब[4] से दिल क्या निशात - आहंग[5] है!
ख़ानए - आशिक़[6] मगर साज़े - सदाए - आब[7] था
नाज़िशे - अय्यामे - ख़ाकिस्तर - नशीनी[8], क्या कहूं!
पहलुए - अन्देशा[9], वक़्फ़े - बिस्तरे - संजाब[10] था
कुछ न की, अपने जुनूने - ना - रसा ने, वरना यां
ज़र्रा ज़र्रा रूकशे - खुर्शीदे - आलम - ताब[11] था
आज क्यों परवा नहीं अपने असीरों[12] की तुझे?
कल तलक तेरा भी दिल मेहरोवफ़ा[13] का बाब[14] था
याद कर वो दिन, कि हर इक हल्क़ा तेरे दाम[15] का
इन्तेज़ारे - सैद[16] में इक दीदए - बेख़्वाब[17] था
मैंने रोका रात 'ग़ालिब' को वगरना देखते
उसके सैले - गिरिया[18] में गरदूं[19] कफ़े - सैलाब[20] था



एक एक क़तरे का मुझे देना पड़ा हिसाब
ख़ूने जिगर, वदीअते - मिजगाने - यार[21] था

---

१. दिल की आह, २. एक पौधे का छोटा-सा काला दाना जो आग में गिर कर आवाज़ देता है, ३. प्रतिद्वन्द्वी की मिलन-सभा, ४. बाढ़ का स्वागत, ५. आनन्दित, ६. प्रेमी का घर, ७. पानी के बाजे; आवाज़ ८. धरती पर बैठ कर बिताए दिनों का गर्व, ९. चिंतन की गोद. १०. मखमल पर विश्राम, ११. सूरज से ईर्ष्या करने वाला, १२. क़ैदी, १३. प्रेम, १४. स्रोत, १५. जाल, १६. शिकार, १७. अपलक नेत्र, १८. आँसुओं की बाढ़, १९. आसमान, २०. बाढ़ की आग, २१. प्रेमी के पलकों की धरोहर।

अब मैं हूं और मातमे - यक - शहरे - आरज़ू[१]
तोड़ा जो तूने आईना तिमसाल - दार[२] था
गलियों में मेरी नाश[३] को खींचे फिरो कि मैं
जां - दादए - हवाए - सरे - रह - गुज़ार[४] था
मौजे - सरावे - दश्ते - वफ़ा[५] का न पूछ हाल
हर ज़र्रा मिस्ले - जौहरे - तेग़े - आवदार[६] था
कम जानते थे हम भी ग़मे इश्क़ को पर अब
देखा तो कम हुए पै ग़मे - रोज़गार[७] था

✣ ✣ ✣ ✣ ✣

बस कि दुश्वार है हर काम का आसां होना
आदमी को भी मयस्सर नहीं इन्सां होना
गिरियां[८] चाहे है ख़राबी मिरे काशान[९] की
दरो दीवार से टपके है बयाबां होना
वाए दीवानगिए - शौक़ कि हरदम मुझको
आप जाना उधर और आप ही हैरां होना
जल्वा अज़ - बस[१०] कि तक़ाज़ाए - निगह करता है
जौहरे - आईना[११] भी चाहे है मिज़्गां होना
इशरते-क़त्ल - गहे - अहले - तमन्ना[१२] मत पूछ
ईदे - नज़्ज़ारा है शमशीर का उरियां[१३] होना

---

१. अभिलाषाओं रूपी नगर का शोक, २. प्रतिविम्ब उतारने वाला, ३. शव, ४. मार्ग की वायु से जीवित, ५. वफा के जंगल की मरीचिका, ६. तलवार के पानी के सदृश चमकदार, ७. जीविका का ग़म, ८. रुदन, ९. घर, १०. अवश्य, ११. आईने का पानी, १२. चाहने वालों के हत्या-स्थान का ऐश्वर्य, १३. म्यान से बाहर, नंगा।

ले गये ख़ाक में हम दाग़े - तमन्नाए - निशात[1]
तू हो और आप बसद - रंग[2] गुलिस्तां होना
इशरते - पारए - दिल,[3] ज़ख़्मे - तमन्ना[4] खाना
लज़्ज़ते - रेशे - जिगर,[5] ग़र्क़े - नमकदां[6] होना
की मिरे क़त्ल के बाद उसने जफ़ा से तौबा
हाय उस ज़ूद - पशेमां[7] का पशेमां होना
हैफ़ उस चार गिरह कपड़े की क़िस्मत 'ग़ालिब'
जिसकी क़िस्मत में हो आशिक़ का गरेबां होना

* * * * *

दोस्त ग़मख़्वारी में मेरी सई[9] फ़रमायेंगे क्या ?
ज़ख़्म के भरने तलक नाख़ुन न बढ़ आयेंगे क्या ?
बे - नियाज़ी[10] हद से गुज़री, बन्दा-परवर कब तलक
हम कहेंगे हाले दिल, और आप फ़रमायेंगे, "क्या ?"
हज़रते नासह गर आयें, दीदओ दिल फ़र्शे राह
कोई मुझको यह तो समझादो कि समझायेंगे क्या ?
आज वां तेग़ो - कफ़न बाँधे हुए जाता हूं मैं
उज़्र मेरे क़त्ल करने में वो अब लायेंगे क्या ?
गर किया नासह ने हमको क़ैद, अच्छा ! यूं सही
यह जुनूने इश्क़ के अन्दाज़ छुट जायेंगे क्या ?
ख़ाना - ज़ादे - ज़ुल्फ़[11] हैं, ज़ंजीर से भागेंगे क्यों ?
हैं गिरफ़्तारे वफ़ा ज़िन्दां[12] से घबरायेंगे क्या ?

---

१. उल्लास की अभिलाषा का दाग़, २. सौ रंग, ३. दिल के टुकड़े का आनन्द ४. इच्छा का घाव, ५. जिगर के घाव का आनन्द; ६. नमकदान में डूबना, ७. शीघ्र लज्जित होने वाला, ७. अफ़सोस, ९. यत्न, १०. उदासीनता, उपेक्षा, ११. ज़ुल्फ़ का क़ैदी, १२. जेल ।

है अव इस मामूर[1] में क़हते - ग़मे - उल्फ़त[2] 'असद'
हमने यह माना कि दल्ली में रहें खायेंगे क्या ?

✣ ✣ ✣ ✣ ✣

यह न थी हमारी क़िस्मत कि विसालेयार[3] होता
अगर और जीते रहते यही इन्तेज़ार होता
तिरे वादे पर जिये हम, तो यह जान झूठ जाना
कि खुशी से मर न जाते अगर एतवार होता ?
तिरी नाज़ुकी[4] जाना, कि वंधा था अहद[5] वोदा
कभी तू न तोड़ सकता, अगर उस्तवार[6] होता
कोई मेरे दिल से पूछे, तिरे तीरे - नीमकश[7] को
यह ख़लिश[8] कहां से होती जो जिगर के पार होता ?
यह कहां की दोस्ती है कि वने हैं दोस्त नासेह
कोई चारासाज़[9] होता, कोई ग़मगुसार[10] होता
रगे - संग[11] से टपकता वो लहू कि फिर न थमता
जिसे ग़म समझ रहे हो यह अगर शरार[12] होता
ग़म अगरचे जां - गुसल[13] है पै कहां वचें कि दिल है
ग़मे - इश्क़ गर न होता, ग़मे - रोज़गार होता
कहूं किससे मैं कि क्या है, शवे - ग़म[14] बुरी वला है
मुझे क्या बुरा था मरना अगर एक वार होता
हुए मरके हम जो रुस्वा, हुए क्यों न ग़र्क़े दरिया ?
न कभी जनाज़ा उठता, न कहीं मज़ार होता

---

१. नगर, २. प्रेम के ग़म का अकाल, ३. मत्र-मिलन, ४. कोमलता, ५. प्रतिष्ठा, ६. दृढ़, ७. आधा चुभा हुआ तीर, ८. चुभन; पीड़ा, ९. उपचारक, १०. हमदर्द, ११. पत्थर की नस, १२. शोला; पतंगा, १३. प्राणघातक, १४. विपादमयी रात्रि ।

उसे कौन देख सकता, कि यगाना[1] है वह यक्ता[2] ?
जो दुई की बू भी होती, तो कहीं दुचार होता
ये मसाइले - तसव्वुफ़[3] ! ये तिरा बयान 'ग़ालिब' !
तुझे हम वली[4] समझते जो न बादाख़्वार[5] होता

✣ ✣ ✣ ✣ ✣

हविस को है निशाते - कार[6] क्या क्या ?
न हो मरना तो जीने का मज़ा क्या ?
तजाहुल - पेशगी[7] से मुद्दआ[8] क्या ?
कहां तक ऐ सरापा - नाज़[9] क्या क्या ?
नवाज़िश - हाए - बेजा[10] देखता हूं
शिकायत हाए रंगीं का, गिला क्या ?
निगाहे - बेमहाबा[11] चाहता हूं
तग़ाफ़ुलहाए - तमकीं - आज़मा[12] क्या ?
फ़रोग़े - शोलए -ख़स[13] यक नफ़स है
हविस को पासे - नामूसे - वफ़ा[14] क्या !
नफ़स, मौजे - मुहीते - बेख़ुदी[15] है
तग़ाफ़ुलहाए - साक़ी[16] का गिला क्या
दिमाग़े - इत्रे - पैराहन[17] नहीं है
ग़मे - आवारगीहाए सबा[18] क्या ?

१. २. अद्वितीय, ३. सूफीवाद की समस्याएँ, ४. औलिया, ५. शराबी,
६. काम की खुशी, ७. पूर्व निश्चित अज्ञानता, ८. अभिप्राय, ९. जो सिर से
पैर तक नखरों से पूर्ण हो, नखरे का प्रतीक, १०. अनुचित कृपा, ११. निस्संकोच,
१२. सन्तोष की परीक्षा लेने वाली अपेक्षा, १३. घास की आग का प्रकाश,
१४. प्रेम-प्रतिष्ठा का लिहाज, १५. मस्ती के भंवर की तरंग, १६. वसंत की
वायु।

दिले हर क़तरा है साज़े - अनल - वहर[1]
हम उसके हैं हमारा पूछना क्या ?
महावा[2] क्या है मैं ज़ामिन इधर देख
शहीदाने - निगाह[3] का ख़ूं - वहा[4] क्या ?
सुन ! ऐ ग़ारतगरे - जिंसे - वफ़ा[5] सुन !
शिकस्ते - शीशए - दिल[6] की सदा क्या ?
किया किसने जिगर - दारी[7] का दावा
शकेवे - ख़ातिरे - आशिक़[8] भला क्या
यह क़ातिल, वादए - सब्र - आज़मा[9] क्यों ?
यह काफ़िर फितनए - ताक़त - रुवा[10] क्या !
वलाए जां[11] है 'ग़ालिव' उसकी हर वात
इवारत[12] क्या, इशारत[13] क्या, अदा क्या !



दर ख़ुरे-क़हरो-ग़ज़व[14] जव कोई हमसा न हुआ
फिर ग़लत क्या है कि हमसा कोई पैदा न हुआ
वन्दगी में भी वह आज़ादाओ - ख़ुदवीं[15] हैं, कि हम
उल्टे फिर आये दरे कावा अगर वा[16] न हुआ
सवको मक़वूल[17] है दावा तिरी यक्ताई[18] का
रूवरू[19] कोई वुते - आईन - सीमा[20] न हुआ

---

१. मैं समुद्र हूं, २. संकोच, ३. निगाह के मारे हुए, ४. जान की कीमत, ५. प्रेम रूपी धन का लुटेरा, ६. दिल के शीशे का टूटना, ७. साहस, ८. प्रेमी का संतोप, ६. संतोप की परीक्षा लेने वाला वचन, १०. शक्ति चुराने वाला फितना, ११. जान के लिए मुसीवत, १२. लिखावट, १३. संकेत, १४. क्रोध और अत्याचार का पात्र, १५. स्वच्छन्द और अभिमानी, १६. खुला १७. प्रिय, स्वीकार, १८. अद्वितीयता, १६. सामने, २०. आईने के सदृश चमकने वाला।

कम नहीं, नाज़िशे - हम - नामिए - चश्मे - ख़ूबां[1]
तेरा बीमार, बुरा क्या है, गर अच्छा न हुआ
सीने का दाग़ है वो नाला,[2] कि लब तक न गया
ख़ाक का रिज़्क़[3] है वो क़तरा, जो दरिया न हुआ
नाम का मेरे है वो दुख, कि किसी को न मिला
काम में मेरे है वो फ़ितना, कि बरपा न हुआ
हर बुने - मू[4] से दमे - ज़िक्र न टपके ख़ूंनाब[5]
हमज़ा का क़िस्सा हुआ, इश्क़ का चर्चा न हुआ
क़तरे में दजला दिखाई न दे और जुज़्व[6] में कुल[7]
खेल लड़कों का हुआ, दीदए - बीना[8] न हुआ
थी ख़बर गर्म कि 'ग़ालिब' के उड़ेंगे पुरज़े
देखने हम भी गये थे, पै तमाशा न हुआ

* * * * *

पए - नज़्रे - करम[9] तोहफ़ा है शर्मे - ना - रसाई[10] का
बख़ूं - ग़लतीदए - सद - रंग[11] दावा पारसाई का
न हो हुस्ने तमाशा दोस्त रुस्वा बेवफ़ाई का
बमुहरे - सद - नज़र साबित है दावा पारसाई[12] का
ज़काते - हुस्न[13] दे, ऐ जल्वए - बीनश[14] कि मेहर - आसा[15]
चिराग़े - ख़ानए - दरवेश[16] हो, कासा - गदाई[17] का

---

१. प्रेमिकाओं की आँख, २. रुदन, ३. ख़ुराक, ४. रुएँ की नोक, ५. सुर्ख़ ख़ून, ६ अंश, ७. पूर्ण, ८. देखनेवाली आँख, ९. कृपादृष्टि के लिए, १०, न पहुँच सकने की लज्जा, ११. सौ तरह ख़ून में लिथड़ा हुआ, १२. पवित्रता, १३. सौंदर्य का दान, १४. चमकदार, १५. सूर्य के सदृश, १६. भिखारी के घर का चिराग़, १७. भिक्षा-पात्र ।

न मारा जान कर बेजुर्म, क़ातिल तेरी गर्दन पर
रहा मानिन्दे ख़ूने बेगुनह हक़ आशनाई का
तमन्नाए - जुबां[1] महवे - सिपासे - बे - जुबानी[2] है
मिटा जिससे तक़ाज़ा, शिकवए - बे - दस्तो - पाई[3] का
वही इक बात है जो यां नफ़स, वां नकहते-गुल[4] है
चमन का जल्वा बाइस[5] है मिरी रंगीं - नवाई[6] का
दहाने - हर - बुते - पैग़ारा[7] - जू, ज़ंजीरे - रुस्वाई
अदम[8] तक बेवफ़ा ! चर्चा है तेरी बेवफ़ाई का
न दे नामे[9] को इतना तूल 'ग़ालिब' मुख़्तसर लिख दे
कि हसरत - संज[10] हूं, अर्ज़े - सितमहाए - जुदाई[11] का



गर न अन्दोहे - शबे - फ़ुर्क़त[12] बयां हो जायगा
बे - तकल्लुफ़ दाग़े - मह[13] मुहरे - दहां[14] हो जायगा
ज़ुहरा[15] गर ऐसा ही शामे - हिज्र[16] में होता है अब
परतवे - मेहताब[17] सैले - ख़ानुमां[18] हो जायगा
ले तो लूं सोते में उसके पांव का बोसा, मगर
ऐसी बातों से वो काफ़िर बदगुमां हो जायगा
दिल को हम सर्फ़े - वफ़ा[19] समझे थे क्या मालूम था
यानी यह पहले ही नज्रे - इम्तहां[20] हो जायगा

---

१. जबान की तमन्ना, २. मौन की प्रशंसा में लीन, ३. मजबूरी की शिकायत, ४. फूल की खुशबू, में लीन, ५. कारण, ६. मधुर ध्वनि, ७. हर लड़ाकू प्रेमी का मुँह, ८. परलोक, ९. ख़त, १०. विरह के दुख, ११. वियोग की रात्रि की पीड़ा, १२. चाँद का दाग़, १३. मुँह पर मुहर १४. पित्ता, १५. विरह की शाम, १६. सूरज का प्रतिबिम्ब, १७. घर की बाढ़, १८. प्रेम के लिए अर्पित, १९. परीक्षा की भेंट।

सबके दिल में है जगह तेरी, जो तू राज़ी हुआ
मुझपे गोया इक ज़माना मेहरबां हो जायगा
गर निगाहे-गर्म[1] फ़रमाती रही—तालीमे-ज़ब्त[2]
शोला ख़स[3] में जैसे, ख़ूं रग में निहां हो जायगा
बाग़ में मुझको न ले जा, वरना मेरे हाल पर
हर गुले तर एक चश्मे-ख़ूं-फ़िशां[4] हो जायगा
वाए गर मेरा तिरा इंसाफ़ महशर[5] में न हो
अब तलक तो यह तवक़्क़ो[6] है कि वां हो जायगा
फ़ायदा क्या? सोच, आख़िर तू भी दाना है 'असद'
दोस्ती नादां[7] की है, जी का ज़ियां[8] हो जायगा

* * * * *

दर्द मिन्नत-कशे[9] दवा न हुआ
मैं न अच्छा हुआ, बुरा न हुआ
जमा करते हो क्यों रक़ीबों को?
इक तमाशा हुआ गिला न हुआ
हम कहां क़िस्मत आज़माने जायं?
तू ही जब ख़ंजर-आज़मा[10] न हुआ
कितने शीरीं हैं तेरे लब! कि रक़ीब
गालियां खाके बे-मज़ा[11] न हुआ
है ख़बर गर्म उनके आने की
आज ही घर में बोरिया न हुआ

---

१. स्निग्ध दृष्टि, २. संयम की सीख, ३. घास, ४. सुर्ख आँख, रक्त रंजित, ५. क़यामत; प्रलय, ६. आशा, ७. अनजान, ८. नुक़सान, ९. आभारी, १०. खंजर चलाना, ११. निरानन्द, खिन्न।

क्या वो नमरूद[1] की खुदाई थी ?
बन्दगी[2] में मिरा भला न हुआ
जान दी, दी हुई उसी की थी
हक़ तो यह है कि हक़ अदा न हुआ
ज़ख़्म गर दब गया, लहू न थमा
काम गर रुक गया रवा न हुआ
रहज़नी[3] है, कि दिल-सितानी[4] है ?
ले के दिल दिलसितां[5] रवा[6] न हुआ
कुछ तो पढ़िये कि लोग कहते हैं
"आज 'ग़ालिब' ग़ज़ल-सरा[7] न हुआ"

✤ ✤ ✤ ✤ ✤

गिला है शौक़ को दिल में भी तंगीए-जा[8] का
गुहर[9] में मह्व[10] हुआ इज़्तेराब[11] दरिया का
यह जानता हूं, कि तू और पासुख़े-मक्तूब[12]
मगर, सितमज़दा हूं, ज़ौक़े-ख़ामा-फ़र्सा[13] का
हिनाए-पाए-ख़िज़ां[14] है बहार अगर है यही
दवाम[15] कुलफ़ते-ख़ातिर[16] है ऐश दुनिया का
ग़मे-फ़िराक़ में तकलीफ़े सैरे गुल मत दो
मुझे दिमाग़ नहीं ख़न्दाहाए-बेजा[17] का

---

१. एक ज़ालिम बादशाह का नाम, २. पूजा-आराधना, ३. डाकाज़नी, ४. दिल चुराना, ५. प्रेमिका, ६. राजी, ७. ग़ज़ल सुनाने वाला, ८. स्थानाभाव, ९. मोती १०. निहित, ११. विकलता, १२. पत्रोत्तर, १३. लिखने वाला; क़लम, १४. ख़िज़ाँ के पाँव की मेंहदी, १५. नित्यता, १६. कष्ट का कारण, १७. अनुचित मुस्कान।

हनूज़[1] महरमिए-हुस्न[2] को तरसता हूं
करे है हर बुनेमू[3] काम चश्मे-बीना[4] का
दिल उसको पहले ही, नाज़ोअदा से दे बैठे
हमें दिमाग़ कहां हुस्न के तक़ाज़ा का
न कह कि गिरिया[5] बमिक़दारे-हसरते-दिल[6] है
मिरी निगाह में है जम्अोख़र्च दरिया का
फ़लक को देखके करता हूं उसको याद 'असद'
जफ़ा में उसकी है अन्दाज़ कारफ़रमा का

✤ ✤ ✤ ✤ ✤

क़तरए-मै[7], बस कि हैरत से नफ़स-परवर[8] हुआ
ख़त्ते-जामे-मै[9] सरासर रिश्तए-गौहार[10] हुआ
एतबारे-इश्क़ की ख़ाना ख़राबी देखना
ग़ैर ने की आह, लेकिन वो ख़फ़ा मुझ पर हुआ

✤ ✤ ✤ ✤ ✤

जब, ब-तक़रीबे-सफ़र[11] यार ने महमिल[12] बांधा
तपिशे-शौक़[13] ने हर ज़र्रे पे इक दिल बांधा
अहले-बीनश[14] ने ब-हैरत-कदए-शोख़िए-नाज़[15]
जौहरे-आईना[16] को तूतिए-बिस्मिल[17] बांधा

---

१. अभी, २. सौंदर्य की जानकारी, ३. रोम-राम. ४. देखने वाली आँख, ५. रुदन, ६. दिल के हसरत के अनुपात से, ७. शराब की बूंद, ८. साँस बढ़ाने वाला, ९. शराबी के प्याले की रेखा, १०. मोती का सूत्र, ११. यात्रा के लिए, १२. ऊँट का झुकजाना, पर्दा, १३. उन्माद की जलन, १४. दृष्टि वाले, १५. नखरे की चंचलता को प्रतिबिम्बित करने वाला, १६. आईने का पानी, १७. घायल पक्षी।

यासो - उम्मीद[1] ने, यक अरबुदा[2] मैदां मांगा
इज्ज़ो - हिम्मत[3] ने तिलिस्मे - दिले - साइल[4] बांधा
न बंधे तश्नगिए - ज़ौक़[5] के मज़मूं 'ग़ालिब'
गरचे दिल खोल के दरिया को भी साहिल बांधा

❋ ❋ ❋ ❋ ❋

मैं और बज़्मे - मैं[6] से यों तिश्ना - काम[7] आऊं !
गर मैंने की थी तौबा, साक़ी को क्या हुआ था
है एक तीर जिसमें दोनों छिदे पड़े हैं
वो दिन गये, कि अपना दिल से जिगर जुदा था
दरमान्दगी[8] में 'ग़ालिब' कुछ बन पड़े तो जानूं
जब रिश्ता बेगिरह था नाखुन गिरह-कुशा[9] था

❋ ❋ ❋ ❋ ❋

घर हमारा जो न रोते भी तो वीरां[10] होता
बहर[11], गर बहर न होता, तो बयाबां होता
तंगिए - दिल का गिला क्या, यह वो काफ़िर दिल है
कि अगर तंग न होता तो परीशां होता
बाद यक उम्रे - वरा[12], बार तो देता बारे
काश, रिज़्वां[13] ही दरे - यार का दरबां होता

---

१. निराशा और आशा, २. लड़ाई, ३. साहस और विनम्रता, ४. भिखारी के दिल का जादू, ५. उन्माद की प्यास, ६. शराबी की महफिल, ७. प्यासा, ८. थकन, ९. गाँठ खोलने वाला, १०. बरबाद, ११. समुद्र, १२. पवित्र आयु, १३. खुदा ।

* * * * * *

न था कुछ तो ख़ुदा था, कुछ न होता तो ख़ुदा होता
डुबोया मुझको होने ने, न होता मैं तो क्या होता ?
हुआ जब ग़म से यूं बेहिस,[१] तो ग़म क्या सर के कटने का !
न होता गर जुदा तन से, तो ज़ानू[२] पर धरा होता
हुई मुद्दत कि 'ग़ालिब' मर गया पर याद आता है
वो हर इक बात पर कहना, कि यों होता तो क्या होता ?

* * * * * *

यक ज़र्रए ज़मीं नहीं बेकार बाग़ का
यां जादा[३] भी फ़तीला[४] है लाले[५] के दाग़ का
बे-मै किसे है ताक़ते-आशोबे-आगही[६]
खींचा है इज्ज़े-हौसला[७] ने ख़त, अयाग़[८] का
बुलबुल के कारोबार पे हैं ख़न्दाहाए-गुल[९]
कहते हैं जिसको इश्क़ ख़लल है दिमाग़ का
ताज़ा नहीं है नशए-फ़िक्रे-सुख़न[१०] मुझे
तिरियाकिए-क़दीम[११] हूं दूदे-चिराग़[१२] का
सौ बार बन्दे-इश्क़[१३] से आज़ाद हम हुए
पर क्या करें, कि दिल ही उदू[१४] है फ़राग़[१५] का
बेख़ूने-दिल है चश्म में मौजे-निगह[१६] गुबार[१७]
यह मैकदा ख़राब है मै के सुराग़ का

---

१. शिथिल, २. जांघ, ३. मार्ग, ४. बत्ती, ५. एक प्रकार का फूल, ६. विपदा को जानने का सामर्थ्य, ७. साहस की विनम्रता, ८. प्याला, ९. फूल का विद्रूप, १०. काव्य-रचना का नशा, ११. पुराना काजल, १२. चिराग का धुआँ. १३. इश्क़ के बंधन, १४. दुश्मन, १५. अवकाश, विश्राम, १६. निगाह का तार, १७. निद्री।

बाग़े - शगुफ़्ता[1] तेरा बिसाते - निशाते - दिल[2]
अब्रे - बहार[3] खुमकदा[4] किसके दिमाग़ का

* * * * *

वो मिरी - चींने - जबीं[5] से ग़मे - पिन्हां[6] समझा
राज़े - मक्तूब[7] व बेरब्तिए - उनवां[8] समझा
यक अलिफ़ बेश[9] नहीं सैक़ले - आईना[10] हनूज़
चाक करता हूं मैं, जबसे कि गरेबां समझा
शरहे - अशबाबे - गिरफ़्तारिए - ख़ातिर[11] मत पूछ
इस क़दर तंग हुआ दिल, कि मैं ज़िन्दां समझा
बद - गुमानी[12] ने न चाहा उसे सरगर्मे - ख़राम[13]
रुख़ पे हर क़तरए - अर्क़[14] दीदए - हैरां[15] समझा
इज्ज़ से अपने यह जाना कि वह बदख़ू[16] होगा
नब्ज़े - ख़स[17] से तपिशे - शोलए - सोज़ां[18] समझा
सफ़रे - इश्क़[19] में की ज़ोफ़[20] ने राहत - तलबी[21]
हर क़दम साये को मैं अपने शबिस्तां[22] समझा
था गुरेज़ां[23] मज़्ए - यार[24] से दिल तादमे - मर्ग[25]
दफ़्ए - पैकाने - कज़ा,[26] इस क़दर आसां समझा

---

१. खिला हुआ बाग, २. दिल की खुशी की बिसात, ३. बरसात का बादल, ४. मधुशाला; ५. माथे की शिकन, ६. भीतरी ग़म, ७. पत्र का रहस्य, ८. शीर्षक की असंगति, ९. अधिक. १०. आईने की कलई, ११. गिरफ्तार होने के कारणों की व्याख्या, १२. सन्देह, १३. गतिमान, १४. पसीने की बूँद, १५. विस्मित नेत्र, १६. अशिष्ट, १७. फूस की नाड़ी, १८. प्रज्ज्वलित आग की आँच, १९. प्रेम-यात्रा, २०. दुर्बलता, २१. विश्राम की इच्छा, २२. शयनगृह, २३. कतराता, २४. प्रेमी की पलक, २५, मरने तक, २६. मृत्यु के तीर से बचाव।

दिल दिया जान के क्यों उसको वफ़ादार 'असद'
ग़लती की कि जो काफ़िर को मुसलमां समझा



फिर मुझे दीदए - तर[1] याद आया
दिल जिगर तशनए[2] फ़रियाद आया
दम लिया था न क़यामत ने हनूज़
फिर तिरा वक़्ते - सफ़र याद आया
सादगी - हाए - तमन्ना यानी
फिर वो नैरंगे - नज़र[3] याद आया
उज़्रे - वामान्दगी[4] ऐ हसरते - दिल
नाला करता था जिगर याद आया
ज़िन्दगी यों भी गुज़र ही जाती
क्यों तिरा राह गुज़र याद आया
क्या ही रिज़्वां[5] से लड़ाई होगी
घर तिरा ख़ुल्द[6] में गर याद आया
आह वो जुरअते - फ़रियाद कहां
दिल से तंग आके जिगर याद आया
फिर तिरे कूचे को जाता है ख़याल
दिले - गुम - गश्ता[7] मगर याद आया
कोई वीरानी सी वीरानी है!
दश्त[8] को देखके घर याद आया

---

१. भीगी हुई आँख, २. प्यासा ३. दृष्टि का सौंदर्य, ४. थकन का बहाना, ५. स्वर्ग के बाग का माली; खुदा, ६. स्वर्ग, ७. खोया हुआ दिल, ८. जंगल।

मैंने मजनूं पे लड़कपन में 'असद'
संग[1] उठाया था कि सर याद आया



हुई ताख़ीर,[2] तो कुछ बाइसे ताख़ीर भी था
आप आते थे, मगर कोई अनांगीर[3] भी था
तुमसे बेजा है मुझे अपनी तबाही का गिला
इसमें कुछ शायबए - ख़ूबिए - तक़दीर[4] भी था
तू मुझे भूल गया हो तो पता बतला दूँ
कभी फ़ितराक[5] में तेरे कोई नख़चीर[6] भी था
क़ैद में थी तिरे वहशी को वही जुल्फ़ की याद
हां कुछ इक रंजे गरांबारिए - ज़ंजीर[7] भी था
बिजली इक कौन्द गई आंखों के आगे तो क्या
बात करते कि मैं जब तशनए - तक़रीर[8] भी था
यूसुफ़ उसको कहूं, और कुछ न कहे ख़ैर हुई
गर बिगड़ बैठे तो मैं लायक़े - ताज़ीर[9] भी था
देखकर ग़ैर को हो क्यों न कलेजा ठण्डा
नाला करता था वले, तालिबे - तासीर[10] भी था
पेशे में ऐब नहीं रखिये न फ़रहाद को नाम
हम ही आशुफ़्ता - सरों[11] में वो जवां मीर भी था
हम थे मरने को खड़े, पास न आया न सही
आख़िर उस शोख़ के तरकश में कोई तीर भी था

---

१. पत्थर २. देर. ३. रोकने वाला, ४. सौभाग्य का अंश, ५. शिकारी का थैला, ६. शिकार, ७. बेड़ी का बोझ, ८. भाषण सुनने के लिए उत्सुक, ९. दण्ड का भागी, १०. असर चाहने वाला, ११. सौदाई ।

पकड़े जाते हैं फ़रिश्तों के लिखे पर नाहक़
आदमी कोई हमारा दमे तहरीर भी था
रेख़्ती के तुम्हीं उस्ताद नहीं हो 'ग़ालिब'
कहते हैं अगले ज़माने में कोई 'मीर' भी था

✤ ✤ ✤ ✤ ✤

लबे - ख़ुश्क, दर - तश्नगी मुर्दगां[1] का
ज़ियारत - कदा[2] हूं दिल - आज़ुर्दगां[3] का
हमा[4] ना - उमीदी[5] हमा - बदगुमानी[6]
मैं दिल हूं फ़रेबे - वफ़ा - ख़ुर्दगां[7] का

✤ ✤ ✤ ✤ ✤

तू दोस्त किसी का भी सितमगर न हुआ था
औरों पे है वो ज़ुल्म कि मुझ पर न हुआ था
छोड़ा महे - नख़शब[8] की तरह दस्ते - क़ज़ा[9] ने
ख़ुर्शीद[10] हनूज़ उसके बराबर न हुआ था
तौफ़ीक़[11] बअन्दाज़ए - हिम्मत[12] है अज़ल[13] से
आंखों में है वो क़तरा कि गौहर न हुआ था
जब तक कि न देखा था क़दे - यार का आलम
मैं मोतक़िदे[14] फ़ितनए - महशर[15] न हुआ था

---

१. मुर्दा, २. दर्शन-स्थान, ३. परेशान, पीड़ित, ४. पूर्ण, ५. निराशा. ९. मृत्यु ६. पूर्ण आशंका, ७. प्रेम का फरेब खाये हुए, ८. कृत्रिम चन्द्रमा का हाथ, १०. सूरज, ११. सामर्थ्य. १२. साहस के अनुरूप, १३. सृष्टि का आरम्भ, १४. मानने वाला, १५. कयामत का फितना,

मैं सादादिल, आजुर्दगिए-यार[1] से खुश हूं
यानी सबक़े-शौक़[2] मुकर्रर न हुआ था
दरियाए-मआसी[3] तुनुक-आबी[4] से हुआ खुश्क
मेरा सरे-दामन[5] भी अभी तर न हुआ था
जारी थी 'असद' दाग़े जिगर से मिरे तहसील[6]
आतिशकदा, जागीरे-समन्दर न हुआ था

✤ ✤ ✤ ✤ ✤

शब कि वो मजलिस-फ़िरोज़े-ख़लवते-नामूस[7] था
रिश्तए-हर शम्अ,[8] ख़ारे-कस्वते-फ़ानूस[9] था
मशहदे-आशिक़[10] से कोसों तक जो उगती है हिना
किस क़दर यारब! हलाके हसरते-पाबूस[11] था
हासिले उल्फ़त न देखा जुज़[12] शिकस्ते-आरज़ू[13]
दिल बदिल पैवस्ता[14] गोया यक लबे-अफ़सोस था
क्या कहूं बीमारिए ग़म की फ़राग़त[15] का बयां!
जो कि खाया ख़ूनेदिल बेमिन्नते-केमूस[16] था

✤ ✤ ✤ ✤ ✤

आईना देख अपना सा मुंह लेके रह गए
साहब को दिल न देने पे कितना ग़ुरूर था

---

१. यार की नाराजी, २. उन्माद का पाठ, ३. पाप की नदी, ४. पानी की कमी, ५. दामन का सिरा, ६. प्राप्ति, ७. एकान्त-सभा की प्रतिष्ठा बढ़ाने वाला, ८. हर एक शमआ का धागा, ९. फानूस के लिबास का काँटा, १०. प्रेमी के शहीद होने का स्थान, ११. पाँव चूमने की हसरत, १२. अति-रिक्त, १३. अभिलाषा की पराजय, १४. चुभा हुआ, १५. विश्राम, आराम, १६. सहज पचने वाला।

क़ासिद को अपने हाथ से गर्दन न मारिए
उसकी ख़ता नहीं है यह मेरा क़ुसूर था

अर्ज़े - नियाज़े - इश्क़[1] के क़ाबिल नहीं रहा
जिस दिल पे नाज़ था मुझे वो दिल नहीं रहा

जाता हूं दाग़े हसरते हस्ती लिये हुए
हूं शम्ए - कुश्ता[2] दरखुरे - महफ़िल[3] नहीं रहा

मरने की ऐ दिल और ही तदबीर कर कि मैं
शायाने - दस्तो - बाज़ुए - क़ातिल[4] नहीं रहा

बरूए - शश - जहत[5] दरे - आईना[6] बाज़[7] है
यां इम्तियाज़े - नाक़िसो - कामिल[8] नहीं रहा

वां कर दिये हैं शौक़ ने, बन्दे - नक़ाबे - हुस्न
ग़ैर - अज़ - निगाह[10] अब कोई हाइल[11] नहीं रहा

गो मैं रहा रहीने - सितम - हाए - रोज़गार[12]
लेकिन तेरे ख़याल से ग़ाफ़िल[13] नहीं रहा

दिल से हवाए - किश्ते - वफ़ा[14] मिट गई, कि वां
हासिल, सिवाए - हसरते - हासिल[15] नहीं रहा

बेदादे - इश्क़[16] से नहीं डरता मगर 'असद'
जिस दिल पे नाज़ था मुझे, वो दिल नहीं रहा

---

१. प्रेम-याचना, २. बुझा हुआ चिराग़, ३. महफ़िल के योग्य, ४. हत्यारे द्वारा मरने लायक, ५. छः दिशाएँ, ६. आईने का दरवाज़ा, ७. खुला, ८. सदोष और निर्दोष का अन्तर, ९. खोल, १०. निगाह के अतिरिक्त, ११. बाधक; रुकावट, १२. जीविका की चिन्ता से पीड़ित, ३१. उदासीन, १४. वफ़ा की आशा, १५. प्राप्ति की इच्छा के अतिरिक्त, १६. प्रेम की निष्ठुरता।

✤ ✤ ✤ ✤ ✤

रश्क कहता है कि उसका ग़ैर से इख़लास,[1] हैफ़ ![2]
अक़्ल कहती है कि वो बेमेहर[3] किसका आश्ना ?[4]
ज़र्रा ज़र्रा सागरे - मैख़ानए - नैरंग[5] है
गर्दिशे मजनूं, बचश्मकहाए - लैला[6] आश्ना
शौक़ है सामां - तराज़े - नाज़िशे - अरबाबे - इज्ज़[7]
ज़र्रा सहरा - दस्तगाहो[8] क़तरा - दरिया - आश्ना[9]
मैं और इक आफ़त का टुकड़ा वह दिले वहशी, कि है
आफ़ियत[10] का दुश्मन और आवारगी का आश्ना
शिकवा - संजे - रश्के - हम - दीगर[11] न रहना चाहिये
मेरा ज़ानू[12] मूनिस[13] और आईना तेरा आश्ना
रब्ते - यक शीराज़ए - वहशत[14] हैं अज्ज़ाये - बहार[15]
सब्ज़ा बेगाना, सबा आवारा, गुल ना - आश्ना
कोहकन नक़्क़ाशे - यक तिमसाले[16] - शीरीं था, 'असद'
संग से सर मारकर होवे न पैदा आश्ना

✤ ✤ ✤ ✤ ✤

ज़िक्र उस परीवश[17] का और फिर बयां अपना
बन गया रक़ीब आख़िर, था जो राज़दां[18] अपना

---

१. मुहब्बत, २. खेद, ३. निष्ठुर, ४. परिचित, ५. दुनिया की मधुशाला का प्याला, ६. लैला की शत्रुता, ७. विनम्र लोगों के गर्व की सामग्री जुटाने वाला, ८. रेगिस्तान तक पहुँचने वाला, ९. बूँद नदी से परिचित, १०. कुशलता, ११. एक दूसरे की ईर्ष्या की शिकायत करने वाले, १२. जाँघ, १३. हमदर्द, १४. उन्माद के संग्रह का सूत्र, १५. वसंत के तत्त्व, १६, चित्र, १७. परी जैसे चेहरे वाला, १८. भेदी; मित्र।

मै वो क्यों वहुत पीते वज़्मे - ग़ैर[1] में, यारव
आज ही हुआ मंज़ूर, उनको इम्तेहां अपना

मंज़र[2] इक़ वुलन्दी पर, और हम वना सकते
अर्श[3] से उधर होता, काश कि मकां अपना

दे वो जिस क़दर ज़िल्लत हम हंसी में टालेंगे
वारे आश्ना निकला, उनका पास्बां[4] अपना

दर्दे दिल लिखूं कव तक, जाऊं उनको दिखलादूं
उंगलियां फ़िगार[5] अपनी, ख़ामा[6] ख़ूंचकां[7] अपना

घिसते घिसते मिट जाता आपने अवस[8] वदला
नंगे - सिजदा[9] से मेरे, संगे - आस्तां[10] अपना

ता करे न ग़म्माज़ी,[11] कर लिया है दुश्मन को
दोस्त की शिकायत में हमने हमज़ुवां अपना

हम कहां के दाना थे, किस हुनर में यक्ता[12] थे
वे सवव हुआ 'ग़ालिव', दुश्मन आस्मां अपना

* * * * *

सुरमए - मुफ़्ते - नज़र[13] हूं, मेरी क़ीमत यह है
कि रहे चश्मे - ख़रीदार[14] पे अहसां मेरा

रुख़सते - नाला[15] मुझे दे, कि मवादा[16] ज़ालिम
तेरे चेहरे से हो ज़ाहिर, ग़मे - पिन्हां[17] मेरा

---

१. ग़ैर की महफिल, २. दृश्य, ३. आकाश, ४. चौकीदार, ५. ज़ख्मी, ६. क़लम, ७. खून में लथपथ, ८. व्यर्थ, ९. भेद जानने वाले की लज्जा, १०. दलहीज का पत्थर, ११. चुगली, १२. अद्वितीय, १३. निगाह के लिए मुफ्त, १४. ख़रीददार की आंख, १५. रोने की फुर्सत १६. ऐसा न हो, १७. छिपा हुआ दुख।

* * * * *

ग़ाफ़िल,[1] व वहमे - नाज़[2] ख़ुद - आरा है वरना यां
बे - शानए - सबा[3] नहीं तुर्रा गयाह[4] का

बज़्मे - क़दह[5] से ऐशे - तमन्ना[6] न रख, कि रंग
सैदे - ज़दाम - जस्ता[7] है, इस दामगाह[8] का

रहमत[9] अगर कुबूल करे, क्या बईद[10] है
शर्मिन्दगी से उज्र न करना गुनाह का

मक़तल[11] को किस निशात[12] से जाता हूं मैं, कि है
पुर - गुल[13] ख़याले - ज़ख़्म[14] से, दामन निगाह का

जां दर[15] हवाए - यक - निगहे - गर्म[16] है, 'असद'
परवाना है वकील, तेरे दाद - ख़्वाह[17] का

* * * * *

जौर[18] से बाज़ आये पर, बाज़ आयें क्या
कहते हैं, हम तुझको मुंह दिखलायें क्या

रात दिन, गर्दिश में हैं सात आस्मां
हो रहेगा कुछ न कुछ, घबरायें क्या

लाग[19] हो तो उसको हम समझें लगाव
जब न हो कुछ भी, तो धोका खायें क्या

हो लिये क्यों नामाबर[20] के साथ साथ
यारब ! अपने ख़त को हम पहुंचायें क्या

---

१. बेख़बर, २. अदा के वहम में, ३. हवा की कंघी के बग़ैर, ४. घास, ५. प्याला, ६. रोप की चाह ७. जाल से छूटा हुआ शिकार, ८. जाल लगाने का स्थान, ९. ख़ुदा, १०. दूर, ११. क़त्ल का स्थान, १२. ख़ुशी, १३. फूलों से भरा, १४. घाव का ध्यान, १५. इच्छुक, १६. स्निग्ध दृष्टि की एक हवा, १७. फ़रियाद करने वाला, १८. ज़ुल्म, १९. आसक्ति, २०. सन्देशवाहक।

मौजे-ख़ूं[१], सर से गुज़र ही क्यों न जाय
आस्ताने-यार[२] से उठ जायें क्या
उम्र भर देखा किये मरने की राह
मर गये, पर देखिए दिखलायें क्या
पूछते हैं वह, कि 'ग़ालिब' कौन है
कोई बतलाओ कि हम बतलायें क्या

* * * * *

लताफ़त[३] बे-कसाफ़त[४] जल्वा पैदा कर नहीं सकती
चमन ज़ंगार[५] है आईनए-बादे-बहारी[६] का
हरीफ़े-जोशिशे-दरिया[७] नहीं, ख़ुद्दारिए-साहिल[८]
जहां साक़ी हो तू, बातिल[९] है दावा होशियारी का

* * * * *

इशरते-क़तरा[१०] है, दरिया में फ़ना[११] हो जाना
दर्द का हद से गुज़रना है दवा हो जाना
तुझसे, क़िस्मत में मेरी, सूरते-क़ुफ़्ले-अबजद[१२]
था लिखा, बात के बनते ही जुदा हो जाना
दिल हुआ कशमकशे-चारए-ज़हमत[१३] में तमाम
मिट गया घिसने में इस उक़्दा[१४] का वा हो जाना[१५]

---

१. ख़ून की तरंग, २. यार की चौखट, ३. सूक्ष्मता, ४. स्थूलता, ५. जंग, ६. वसंत-वायु का आईना, ७. नदी का जोश, ८. तट का आत्माभिमान, ९. झूठ, व्यर्थ, १०. बूँद का आनन्द, ११. विलय, १२. अबजद ताले के सदृश, १३. विपद के उपचार की चेष्टा, १४. पहेली, १५. खुलना।

अब जफ़ा से भी हैं महरूम[1] हम, अल्लाह अल्लाह !
इस क़दर दुश्मने - अरबाबे - वफ़ा[2] हो जाना
ज़ोफ़[3] से गिरियां[4] मुबद्दल[5] बदमे - सर्द[6] हुआ
बावर[7] आया हमें पानी का हवा हो जाना
दिल से मिटना तेरी अंगुश्ते - हिनाई[8] का खयाल
हो गया, गोश्त से नाखुन का जुदा हो जाना
है मुझे, अब्रे - बहारी[9] का बरस कर खुलना
रोते रोते ग़मे - फ़ुर्क़त में, फ़ना हो जाना
गर नहीं नकहतें - गुल[10] को तेरे कूचे की हविस
क्यों है, गर्दे - रहे - जौलाने - सबा[11] हो जाना
ताकि, तुझ पर खुले ऐजाज़े - हवाए - सैक़ल[12]
देख बरसात में सब्ज़ आईने का हो जाना
बख़्शे है जल्वए - गुल[13] ज़ौक़े - तमाशा, 'ग़ालिब'
चश्म को चाहिये हर रंग में वा हो जाना

✣ ✣ ✣ ✣ ✣

अफ़सोस कि दन्दां का किया रिज़्क़[14] फ़लक[15] ने
जिन लोगों की थी दरखुरे - अक़्दे - गुहर[16] अंगुश्त
काफ़ी है निशानी तेरे छल्ले का न देना
ख़ाली मुझे दिखलाके बवक़्ते सफ़र अंगुश्त

---

१. वंचित, २, चाहने वालों का शत्रु, ३. निर्बलता, ४. रुदन, ५. परिणत, ६. ठंडी सांस, ७. विश्वास, ८. मेंहदी वाली अंगुली, ९. बरसात का बादल, १०. पुण्य-सौरभ, ११. चमन की वायु के मार्ग की धूल, १२. कलई की वायु का रहस्य, १३. फूलों का दृश्य, १४. खुराक, १५. आकाश, १६. मोती पहनने योग्य।

लिखता हूं 'असद' सोज़िशे-दिल[1] से सुख़नेगर्म[2]
ता रख न सके कोई मिरे हर्फ़ पे अंगुश्त

⁂ ⁂ ⁂ ⁂ ⁂

मुन्द गईं, खोलते ही खोलते आंखें 'ग़ालिब'
यार लाये मेरी बालीं[3] पे उसे, पर, किस वक़्त !

⁂ ⁂ ⁂ ⁂ ⁂

आमदे-ख़त[4] से हुआ है सर्द जो बाज़ारे दोस्त
दूदे-शम्ए-कुश्ता[5] था, शायद ख़ते-रुख़सारे-दोस्त[6]
ऐ दिले-ना-आक़बत-अन्देश[7] ज़ब्ते-शौक़[8] कर
कौन ला सकता है ताबे-जल्वए-दीदारे-दोस्त[9]
ख़ाना[10] वीरां-साज़िए-हैरत[11] तमाशा कीजिये
सूरते-नक़्शे-क़दम[12] हूं रुफ़्तए[13]-रफ़्तारे-दोस्त
इश्क़ में बेदादे-रश्के-ग़ैर[14] ने मारा मुझे
कुश्तए-दुश्मन[15] हूं आख़िर, गरचे था बीमारे-दोस्त
चश्मे-मा-रौशन[16] कि उस बेदर्द का दिल शाद[17] है
दीदए-पुरख़ूं हमारा, साग़रे-सरशारे-दोस्त[18]
ग़ैर, यों करता है मेरी पुरसिश[19] उसके हिज्र[20] में
बेतकल्लुफ़ दोस्त हो जैसे कोई ग़मख़्वारे-दोस्त

१. दिल की जलन, २. जलते हुए शेर, ३. सिरहाने, ४. ख़त का आना, ५. शमअ के धुएँ का मारा हुआ, ६. मित्र के चेहरे के बाल, ७. नासमझ दिल, ८. शौक को संयत कर, ९. प्रेमी के देखने की सामर्थ्य, १०. घर, ११. बरबादी से उत्पन्न आश्चर्य, १२. पद-चिह्न के सदृश, १३. दोस्त की मंथर गति पर मोहित, १४. प्रतिद्वन्द्वी की ईर्ष्या का दुख, १५. दुश्मन का मारा हुआ, १६. हम प्रसन्न हैं, १७. ख़ुश, १८. यार के लिए भरा हुआ प्याला, १९. पूछ, २०. वियोग।

ताकि मैं जानूं, कि है इसकी रसाई[1] वां तलक
मुझको देता है, पयामे - वादए - दीदारे - दोस्त[2]
जबकि मैं करता हूँ अपना शिकवए - ज़ोफ़े - दिमाग़[3]
सर करे है वो हदीसे - जुल्फ़े - अम्बर - बारे -दोस्त[4]
चुपके चुपके मुझको रोते देख पाता है अगर
हंस के करता है बयाने - शोख़िए - गुफ़्तारे - दोस्त
मेहरबानीहाए दुश्मन की शिकायत कीजिये
या बयां कीजे, सिपासे - लज़्ज़ते - आज़ारे - दोस्त[5]
यह ग़ज़ल अपनी मुझे जी से पसन्द आती है आप
है रदीफ़े शेर में 'ग़ालिब', ज़बस तकरारे - दोस्त[6]

* * * * *

गुलशन में बन्दोबस्त[7] बरंगे - दिगर[8], है आज
कुमरी का तौक़ हलक़ए बेरूने - दर[9] है आज
आता है एक पारए - दिल[10] हर फ़ुगां[11] के साथ
तारे - नफ़स,[12] कमन्दे - शिकारे - असर,[13] है आज
ऐ आफ़ियत[14] किनारा कर, ऐ इन्तज़ाम चल
सैलाबे - गिरिया[15] दर - पए[16] दीवारो - दर, है आज

---

१. पहुँच, २. मित्र के दर्शन के वचन का संदेश, ३. मानसिक निर्बलता की शिकायत, ४. मित्र की सुगन्धि बिखेरने वाली जुल्फ़ की बात, ५. मित्र द्वारा मिलने वाले कष्ट के आनन्द की प्रशंसा, ६. मित्र शब्द का दोहराना, ७. व्यवस्था, ८. नए ढंग से, ९. दरवाज़े से बाहर, १०. दिल का टुकड़ा, ११. आह, १२. साँस का सूत्र, १३. प्रभाव के शिकार का फंदा, १४. कुशलता, १५. रुदन की बाढ़, १६. निकट।

* * * * *

लो हम मरीज़े-इश्क़ के तीमारदार हैं
अच्छा अगर न हो तो, मसीहा का क्या इलाज?

* * * * *

हुस्न ग़म्ज़े[1] की कशाकश[2] से छुटा, मेरे बाद
बारे, आराम से हैं अहले-जफ़ा,[3] मेरे बाद
मंसबे-शेफ़्तगी[4] के कोई क़ाबिल न रहा
हुई माज़ूलिए-अन्दाज़ो-अदा,[5] मेरे बाद
शम्अ बुझती है तो उसमें से धुआं उठता है
शोलए-इश्क़ सियह-पोश[6] हुआ, मेरे बाद
ख़ूं है दिल ख़ाक में, अहवाले-बुतां[7] पर यानी
इनके नाख़ून हुए मोहताजे-हिना[8] मेरे बाद
दरख़ुरे-अर्ज़[9] नहीं, जौहरे-बेदाद[10] को, जा
निगहे-नाज़[11] है सुरमे से ख़फ़ा मेरे बाद
है जुनूं, अहले-जुनूं[12] के लिये आग़ोशे[13]-विदा
चाक होता है गरेबां से जुदा, मेरे बाद
कौन होता है हरीफ़े-मए-मर्दे-अफ़गने-इश्क़[14]
है मुकर्रर[15] लबे-साक़ी पे सला,[16] मेरे बाद

---

१. नाज़ और अदा, २. प्रयास, ३. मेहनत करने वाले, ४. आशक़ी का दर्जा, ५. नाज़-नख़रे जाते रहे, ६. काले वस्त्र पहने हुए, ७. रूप वालों का वृत्तान्त, ८. मेहंदी लगानी पड़ती है (क्योंकि ख़ून नहीं मिलता), ९. प्रार्थना के योग्य, १०. निष्ठुर तत्व, ११. सुन्दर आँख, १२. उन्मत्त व्यक्ति, १३. गोद, १४. मनुष्यघातक प्रेम की शराब पीने का साहस कौन करता है, १५. दुबारा, १६. आवाज़।

ग़म से मरता हूं, कि इतना नहीं दुनिया में कोई
कि करे ताज़ियते[1] - मेहरो - वफ़ा, मेरे बाद
आये है बेकसिए - इश्क़[2] पे रोना 'ग़ालिब'
किसके घर जायगा सैलाबे - बला,[3] मेरे बाद

❊ ❊ ❊ ❊

बला से हैं, जो ये पेशे - नज़र[4] दरोदीवार
निगाहे शौक़ को हैं, बालो - पर[5] दरोदीवार
वफ़ूरे - अश्क[6] ने काशाने[7] का किया यह रंग
कि हो गये मेरो दीवारोदर, दरोदीवार
नहीं है साया कि सुनकर नवेद - मक़दमे - यार[8]
गये हैं चन्द क़दम पेश्तर, दरोदीवार
हुई है किस क़दर अरज़ानिए - मए - जल्वा[9]
कि मस्त है तेरे कूचे में हर दरो दीवार
जो है तुझे सरे - सौदाए - इन्तेज़ार,[10] तो आ
कि हैं दुकाने - मताए - नज़र[11] दरो दीवार
हुजूमे - गिरिया का सामान कब किया मैंने ?
कि गिर पड़े न मेरे पांव पर दरो दीवार
वह आ रहा मिरे हमसाए में, तो साये से
हुए फ़िदा दरोदीवार पर, दरोदीवार
नज़र में खटके है, बिन तेरे घर की आबादी
हमेशा रोते हैं हम, देखकर दरोदीवार

१. शोक प्रकट करना, २. प्रेम की विवशता, ३. विपत्ति की बाढ़, ४. दृष्टि के सामने, ५. बाल और पंख, ६. आंसुओं की अधिकता, ७. घर, ८. मित्र के आने का समाचार, ९. दर्शन रूपी शराब की अधिकता, १०. प्रतीक्षा के उन्माद का सामर्थ्य, ११. दृष्टिरूपी धन की दुकान।

न पूछ बेख़ुदि-ए-ऐशे-मक़दमे-सैलाब[1]
कि नाचते हैं पड़े, सरबसर[2] दरोदीवार
न कह किसी से, कि 'ग़ालिब' नहीं ज़माने में
हरीफ़े-राज़े-मुहब्बत, मगर दरोदीवार

❊ ❊ ❊ ❊

घर जब बना लिया तेरे दर पर, कहे बग़ैर
जानेगा अब भी तू न मेरा घर, कहे बग़ैर
कहते हैं, जब रही न मुझे ताक़ते-सुख़न[3]
जानूं किसी के दिल की मैं क्योंकर कहे बग़ैर
काम उससे आ पड़ा है, कि जिसका जहान में
लेवे न कोई नाम "सितमगर" कहे बग़ैर
जी में-ही कुछ नहीं है हमारे, वगरना हम
सर जाये या रहे, न रहें पर कहे बग़ैर
छोड़ूंगा मैं न उस बुते-काफ़िर का पूजना
छोड़े न ख़ल्क़[4] गो मुझे काफ़िर कहे बग़ैर
मक़सद है नाज़ो ग़म्ज़ा, वले गुफ़्तगू में, काम
चलता नहीं है, दश्ना-ओ-ख़ंजर[5] कहे बग़ैर
हरचन्द, हो मुशाहिदए-हक़[6] की गुफ़्तगू
बनती नहीं है, बादा-ओ-साग़र[7] कहे बग़ैर
बहरा हूं मैं, तो चाहिये दूना हो इल्तेफ़ात[8]
सुनता नहीं हूं बात, मुकर्रर[9] कहे बग़ैर

---

१. बाढ़ के स्वागत के आनन्द की मस्ती, २. सर्वथा, ३. बोलने की शक्ति, ४. दुनिया, ५. चाकू और खंजर ६. भगवत-दर्शन, ७. सुराही और प्याला, ८. कृपा, ९. दोबारा।

'ग़ालिब' न कर हुज़ूर में तू बार बार अर्ज़
ज़ाहिर है तेरा हाल सब उन पर, कहे बग़ैर

✢ ✢ ✢ ✢ ✢

क्यों जल गया न ताबे - रुख़े - यार[1] देखकर
जलता हूं, अपनी ताक़ते - दीदार देखकर
आतिश - परस्त कहते हैं अहले - जहां[2] मुझे
सरगर्मे - नालाहाए - शरर - बार[1] देखकर
क्या आबरूए - इश्क़, जहां आम हो जफ़ा
रुकता हूं तुमको बे - सबब - आज़ार देखकर
आता है मेरे क़त्ल को पुरजोशे रश्क से
मरता हूं उसके हाथ में तलवार देखकर
साबित हुआ है, गर्दने - मीना[3] पे ख़ूने - ख़ल्क़[4]
लरज़े है मोजे मै तेरी रफ़्तार देख कर
वा - हसरता,[5] कि यार ने खींचा सितम से हाथ
हमको हरीसे - लज़्ज़ते - आज़ार[6] देख कर
बिक जाते हैं हम आप, मताए - सुख़न[7] के साथ
लेकिन अयारे - तबए - ख़रीदार[8] देखकर
ज़ुन्नार[9] बांध, सुबहे - सद्दाना[10] तोड़ डाल
रहरौ[11] चले है राह को, हमवार देखकर
इन आबलों से पांव के, घबरा गया था मैं
जी ख़ुश हुआ है राह को पुरख़ार[12] देखकर

---

१. मित्र के चेहरे की चमक, २, दुनिया वाले, ३. सुराही की गर्दन, ४. दुनिया की हत्या, ५. हाय हसरत, ६. कष्ट के स्वाद का लोभी, ७. अच्छी बात, ८. चालाक ख़रीदार की तबीयत, ९. जनेऊ, १०. सौ मनकों वाली माला, ११. राही, १२. कांटों से भरी।

क्या बदगुमां है मुझसे, कि आईने में मेरे
तूती का अक्स[1] समझे है, ज़िगार देखकर
गिरती थी हम पे वर्क़े-तजल्ली,[2] न तूर[3] पर
देते हैं बादा,[4] जर्फ़े-क़दह-ख्वार[5] देख कर
सर फोड़ना वो, 'ग़ालिबे' शोरीदा-हाल[6] का
याद आ गया मुझे, तेरी दीवार देखकर

* * * * *

लरज़ता है मेरा दिल, ज़हमते मेहरे-दरख़्शां[7] पर
मैं हूं वो क़तरए-शबनम, कि हो ख़ारे-बयावां[8] पर
फ़ना तालीमे-दर्से-बेख़ुदी हूं उस ज़माने से
कि मजनूं लाम अलिफ़ लिखता था दीवारे-दबिस्तां[9] पर
फ़राग़त किस क़दर रहती मुझे, तशवीशे-मरहम[10] से
बहम[11] गर सुलह करते पाराहाए-दिल[12] नमकदां पर
मुझे अब देखकर अब्रे-शफ़क़-आलूदा,[13] याद आया
कि फ़ुर्क़त में तेरी, आतिश[14] बरसती थी गुलिस्तां पर
बजुज़-परवाज़े[15] शौक़े नाज़, क्या बाक़ी रहा होगा
क़यामत इक हवाए-तुन्द[16] है ख़ाके शहीदां पर
न लड़ नासेह से, 'ग़ालिब' क्या हुआ, गर उसने शिद्दत की
हमारा भी तो आख़िर, ज़ोर चलता है गरेबां पर

---

१. प्रतिबिम्ब, २. कौंधती हुई बजली, ३. पहाड़ विशेष जिस पर खुदा ने मूसा को दर्शन दिये, ४. शराब ५. पीने वाले का सामर्थ्य, ६. परीशान हाल, ७. चमकता हुआ सूरज, ८. जंगल का कांटा, ९. मदरसा, १०. मरहम की चिन्ता, ११. परस्पर, १२. दिल के टुकड़े, १३. लालिमा-रंजित बादल, १४. आग, १५. उड़ान के अतिरिक्त, १६. तीव्र वायु,

* * * * *

है बस कि, हर इक उनके इशारे में निशां और
करते हैं मुहब्बत, तो गुज़रता है गुमां और

यारब, वो न समझे हैं न समझेंगे मेरी बात
दे और दिल उनको जो न दे मुझको ज़बां और

अबरू[1] से है क्या, उस निगहे-नाज़[2] को, पैवन्द
है तीर मुक़र्रर, मगर उसकी है कमां और

तुम शहर में हो, तो हमें क्या ग़म, जब उठेंगे
ले आयेंगे बाज़ार से, जाकर दिलो-जां और

हर चन्द सुबुक-दस्त[3] हुए, बुत शिकनी में
हम हैं, तो अभी राह में है संगे-गिरां[4] और

है ख़ूने जिगर जोश में, दिल खोल के रोता
होते जो कई दीद ए-ख़ूंनाबा-फ़िशां[5] और

मरता हूं इस आवाज़ पे, हर चन्द सर उड़ जाय
जल्लाद को, लेकिन, वो कहे जाएं कि "हां और"

लोगों को है ख़ुर्शीदे-जहां-ताब[6] का धोका
हर रोज़ दिखाता हूं मैं इक दाग़े-निहां[7] और

लेता, न अगर दिल तुम्हें देता, कोई दम चैन
करता, जो न मरता कोई दिन, आहो फ़ुग़ां और

पाते नहीं जब राह, तो चढ़ जाते हैं नाले
रुकती है मेरी तब्अ,[8] तो होती है रवां और

---

१. भवें, २. प्रेमी की निगाह, ३. चतुर, ४. भारी पत्थर, ५. खून टपकाने वाली आंख, ६. दुनिया में चमकने वाला सूरज, ७. छिपा हुआ दाग़, ८. तबीयत।

हैं और भी दुनियां में सुख़नवर बहुत अच्छे
कहते हैं, कि 'ग़ालिब' का है अन्दाज़े-बयां और

* * * * *

लाज़िम था कि देखो मेरा रस्ता कोई दिन और
तन्हा गये क्यों ? अब रहो तन्हा कोई दिन और
मिट जाएगा सर, गर तेरा पत्थर न घिसेगा
हूं दर पे तेरे नासिया-फ़र्सा[1] कोई दिन और
आये हो कल और आज ही कहते हो कि जाऊं
माना, कि हमेशा नहीं अच्छा, कोई दिन और
जाते हुए कहते हो, क़यामत को मिलेंगे
क्या ख़ूब ! क़यामत का है गोया कोई दिन और
हां ऐ फ़लके-पीर, जवां था अभी 'आरिफ़'
क्या तेरा बिगड़ता, जो न मरता कोई दिन और
तुम माहे-शबे-चार-दहुम[2] थे, मेरे घर के
फिर क्यों न रहा घर का वो नक़्शा कोई दिन और
तुम कौन से ऐसे थे खरे, दादो सितद[3] के
करता मलेकुल-मौत,[4] तक़ाज़ा कोई दिन और
मुझसे तुम्हें नफ़रत सही, नय्यर से लड़ाई
बच्चों का भी देखा न तमाशा कोई दिन और
गुज़री न बहरहाल यह मुद्दत ख़ुशो-नाख़ुश
करना था, जवां-मर्ग गुज़ारा कोई दिन और

---

१. माथा घिसना, २. चौदहवीं की रात का चांद, ३. लेन-देन, ४. यमराज।

नादां हो, जो कहते हो, कि क्यों जीते हो 'ग़ालिब'
क़िस्मत में है, मरने की तमन्ना कोई दिन और

* * * * *

क्योंकर रखूं उस बुत से जान अज़ीज़
क्या नहीं है मुझे ईमान अज़ीज़
दिल से निकला, पै न निकला दिल से
है तेरे तीर का पैकान[1] अज़ीज़
ताब लाए ही बनेगी, 'ग़ालिब'
वाक़या सख़्त है और जान अज़ीज़

* * * * *

न गुले - नग़मा हूं, न पर्दए - साज़
मैं हूं अपनी शिकस्त की आवाज़
तू, और आराइशे - ख़मे - काकुल[2]
मैं, और अन्देशा - हाए - दूरो - दराज़[3]
लाफ़े - तमकीं[4] फ़रेबे - सादा - दिली[5]
हम हैं, और राज़हाए सीना गुदाज़
हूं गिरफ़्तारे उल्फ़ते - सैयाद[6]
वरना बाक़ी है ताक़ते परवाज़
वो भी दिन हो, कि उस सितमगर से
नाज़ खेंचूं बजाय हसरते - नाज़

---

१. तीर, २. जुल्फ़, ३. दूर और निकट की चिंता, ४. अहंकार की बातें, ५. सरलता का धोखा, ६. शिकारी से प्रेम।

नहीं दिल में मेरे, वो क़तरए - खूं[1]
जिससे मिज़गां[1] हुई न हो गुलबाज़[2]
मुझको पूछा तो कुछ ग़ज़ब न हुआ
मैं ग़रीब और तू ग़रीब नवाज़
'असदुल्लाह ख़ां' तमाम हुआ
ऐ दरेग़ा,[3] वो रिन्दे - शाहिद - बाज़[4]

✣ ✣ ✣ ✣ ✣

मुशदा[5] ऐ ज़ौक़े - असीरी,[6] कि नज़र आता है
दाम ख़ाली, क़फ़से - मुर्ग़े - गिरफ़्तार[7] के पास
जिगरे - तश्नए - आज़ार[8] तसल्ली न हुआ
जूए खूं हमने बहाई बुने - हर ख़ार[9] के पास
मुन्द गईं खोलते ही खोलते आंखें हय, हय
ख़ूब वक़्त आये तुम इस आशिक़े-बीमार के पास
मैं भी रुक रुक के न मरता, जो ज़बां के बदले
दश्ना[10] इक तेज़ सा होता, मेरे ग़मख़्वार के पास
दहने - शेर[11] में जा बैठिए लेकिन ऐ दिल
न खड़े हूजिये ख़ूबाने - दिल - आज़ार[12] के पास
देखकर तुझको, चमन बसकि नमू[13] करता है
ख़ुद बख़ुद पहुंचे है गुल गोशए दस्तार[14] के पास

---

१. पलकें, २. फूल बरसाना, ३. हाय, ४. सौंदर्य-प्रेमी शराबी, ५. शुभ समाचार, ६. क़ैदी बनने का शौक़, ७. पकड़े हुए पक्षी का पिंजरा, ८. कष्ट का प्यासा जिगर, ९. हर एक कांटे की नोक, १०. चाक़ू, खंजर, ११. शेर का मुंह, १२. दिल को पीड़ित करने वाली सुन्दरी प्रेमिकाएँ, १३. खिलता, १४. पगड़ी का कोना।

मर गया फोड़ के सर, 'ग़ालिबे' वहशी, हय, हय
बैठना उसका वो आकर तेरी दीवार के पास

* * * * *

न लेवे गर, ख़से-जौहर[1] तरावत[2] सब्ज़ए-ख़त से
लगा दे ख़ानए-आईना[3] में रूए-निगार[4] आतिश
फ़रोग़े-हुस्न[5] से होती है हल्ले-मुश्किले-आशिक़
न निकले शमअ के पा से, निकाले गर न ख़ार[6] आतिश

* * * * *

रुख़े-निगार[7] से, है सोज़े-जाविदानिए-शम्अ[8]
हुई है आतिशे-गुल,[9] आबे-ज़िन्दगानिए-शम्अ[10]
ज़ुबाने-अहले-ज़ुबां[11] में है, मर्गे-ख़ामोशी[12]
यह बात बज़्म में, रौशन हुई ज़ुबानिए-शम्अ
करे है सर्फ़[13] ब ईमाए-शोला[14] क़िस्सा तमाम[15]
बतर्ज़े-अहले-फ़ना,[16] है फ़साना-ख़्वानिए-शम्अ[17]
ग़म उसको हसरते परवाने का है, ऐ शोला
तेरे लरज़ने से ज़ाहिर है नातवानिए-शम्अ[18]

---

१. घास की जड़, २. तरी, ३. वह कमरा जिसमें बहुत से आइने लगे हों और एक का प्रतिबिम्ब दूसरे में पड़ता ४. सुंदर प्रेमिका का चेहरा, ५. रूप की चमक, ६. काँटा, ७. प्रेमी का चेहरा, ८. शमआ की स्थिर जलन, ९. फूल की आग, १०. शमआ के लिए अमृत, ११. भाषा विशेषज्ञों की भाषा, १२. मूक मृत्यु, १३. खर्च, १४. आग के संकेत से, १५. खत्म, १६. मिटने वालों की शैली, १७. शमआ का कहानी कहना, १८. शमअ की दुर्बलता,

निशाते - दाग़े - ग़म - इश्क़[1] की बहार, न पूछ
शिगुफ़्तगी[2] है शहीदे - गुले - ख़िज़ानिए - शम्अ
जले है देख के बालीने - यार[3] पर मुझको
न क्यों हो दिल पे मेरे दाग़े - बदगुमानिए शम्अ

* * * * *

बीमे - रक़ीब[4] से नहीं करते विदाए - होश
मजबूर यां तलक हुए, ऐ इख़्तियार हैफ़!
जलता है दिल, कि क्यों न हम इक बार जल गए
ऐ नातमामिए - नफ़से - शोला - बार,[5] हैफ़!

* * * * *

ज़ख़्म पर छिड़कें कहां, तिफ़लाने[6] - बेपरवा, नमक
क्या मज़ा होता, अगर पत्थर में भी होता, नमक
गर्दे - राहे - यार[7] है सामाने - नाज़े[8] - ज़ख़्मे दिल
वरना होता है जहां में किस क़दर पैदा, नमक
मुझको अरज़ानी[9] रहे, तुझको मुबारिक हो जियो
नालए - बुलबुल का दर्द, और ख़न्दए-गुल[10] का नमक
शोरे-जोलां[11] था किनारे-बहर[12] पर किसका, कि आज
गर्दे - साहिल[13] है, बज़ख़्मे - मौजए - दरिया[14], नमक

---

१. इश्क़ के ग़म के दाग़ का उल्लास, २. खिलना, ३. यार के सिरहाने, ४. रक़ीब का भय, ५. आग बरसा रही सांस ६. बच्चे, ७. प्रेमी की राह की धूल ८. हाव-भाव के उपकरण, ९. बहुलता, १०. फूल की मुस्कान, ११. अधिक शोर, १२. समुद्र तट, १३. किनारे की धूल, १४. नदी की लहर के घाव से,

दाद देता है मेरे ज़ख़्मे-जिगर की वाह, वाह
याद करता है मुझे, देखे है वो जिस जा, नमक

छोड़कर, जाना तने-मजरूहे-आशिक़[1] हैफ़ है
दिल तलब करता है ज़ख़्म, और मांगे हैं आज़ा[2], नमक

ग़ैर की मिन्नत न खींचूंगा, पए-तौक़ीरे-दर्द[3]
ज़ख़्म मिस्ले-ख़न्दए-क़ातिल[4] है, सर ता पा नमक

याद हैं वो दिन तुझे 'ग़ालिब', कि वज्दे-ज़ौक़[5] में
ज़ख़्म से गिरता, तो मैं पलकों से चुनता था नमक

* * * * *

आह को चाहिए इक उम्र, असर होने तक
कौन जीता है तेरी ज़ुल्फ़ के सर होने तक

दामे-हर-मौज[6] में है, हल्क़ए-सदकामे-निहंग[7]
देखें क्या गुज़रे है क़तरे पे गुहर होने तक

आशिक़ी सब्र-तलब और तमन्ना बेताब
दिल का क्या रंग करूं, ख़ूने-जिगर होने तक

हमने माना, कि तग़ाफ़ुल[8] न करोगे लेकिन
ख़ाक हो जायेंगे हम, तुमको ख़बर होने तक

परतवे-ख़ुर[9] से है शबनम को, फ़ना की तालीम
मैं भी हूं, एक इनायत की नज़र होने तक

---

१. घायल प्रेमी का शरीर, २. अंग, ३. पीड़ा की प्रतिष्ठा के लिए, ४. हत्यारे की मुस्कान के सदृश, ५. उन्माद से झूमते हुए, ६. प्रत्येक तरंग का जाल, ७. सौ जबाड़ों वाले मगरमच्छ का घेरा, ८. उपेक्षा, ९. सूरज का प्रतिबिम्ब ।

यक नज़र बेश[1] नहीं, फ़ुर्सते-हस्ती[2] ग़ाफ़िल
गर्मिए-बज़्म है, इक रक़्से-शरर[3] होने तक
ग़मे हस्ती का, 'असद' किससे हो जुज़[4] मर्ग[5] इलाज
शम्अ हर रंग में जलती है सहर[6] होने तक

✣ ✣ ✣ ✣ ✣

गर तुझको है यक़ीने-इजाबत[7] दुआ न मांग
यानी बग़ैरे-यक-दिले-बे-मुद्दआ[8] न मांग
आता है दाग़े-हसरते-दिल[9] का शुमार याद
मुझसे मेरे गुनह का हिसाब ऐ ख़ुदा न मांग

✣ ✣ ✣ ✣ ✣

है किस क़दर हलाके-फ़रेबे-वफ़ाए-गुल[10]
बुलबुल के कारोबार पे हैं ख़न्दाहाए-गुल[11]
आज़ादिए-नसीम[12] मुबारक, कि हर तरफ़
टूटे पड़े हैं हल्क़ए-दामे-हवाए-गुल[13]
जो था, सो मौजे रंग के धोके में मर गया
ऐ वाए नालए-लबे-ख़ूनीं[14] नवाए-गुल[15]
ख़ुशहाल उस हरीफ़े-सियह-मस्त[16] का, कि जो
रखता हो मिस्ले-सायए-गुल,[17] सर बपाए-गुल[18]

---

१. ज़्यादा, २. जीने की मोहलत, ३. चिंगारी का नृत्य, ४. सिवा, ५. मौत, ६. सुबह, ७. क़यामत के दिन क्षमा किये जाने का विश्वास, ८. उद्देश्य से खाली दिल, ९. दिल की हसरतों के दाग़, १०. फूलों के प्रेम के छल का मारा हुआ ११. फूलों का हंसना १२. हवा, १३. फूलों की हवा के जाल का घेरा, १४. ख़ूनी होंठ की आह, १५. फूलों की आवाज़, १६. उन्मत्त प्रेमी, १७. फूल की परछाईं के सदृश, १८. फूल के पाँव पर।

ईजाद[1] करती है उसे तेरे लिये, वहार
मेरा रक़ीव है; नफ़से - इत्र - साए - गुल
शर्मिन्दा रखते हैं मुझे वादे - वहार[2] से
मीनाए - वेशराबो[3] - दिले - वेहवाए - गुल[4]
सतवत[5] से तेरे जल्वए - हुस्ने - ग़यूर[6] की
ख़ूं है मेरी निगाह में रंगे - अदाए - गुल
तेरे ही जल्वे का है यह धोका, कि आज तक
वेइख़्तियार दौड़े है गुल दर - कफ़ाए - गुल
'ग़ालिव' मुझे है उससे हम - आग़ोशी आरज़ू[7]
जिसका खयाल है गुले - जेवे - क़वाए - गुल
ग़म नहीं होता है आज़ादों को, वेश अज़ यक नफ़स
वर्क़[8] से करते हैं रौशन, शमए - मातम - ख़ाना[9] हम
महफ़िलें वरहम[10] करे है, गंजफ़ा - वाज़े - ख़याल[11]
हैं वरक़ - गरदानिए - नैरंगे - यक - बुतख़ाना[12] हम
वावजूदे यक जहां, हंगामा पैदाई[13] नहीं
हैं चिराग़ाने - शविस्ताने - दिले - परवाना[14] हम
ज़ोफ़[15] से है, ने क़नाअत[16] से, ये तर्के - जुस्तजू[17]
हैं ववाले - तकिया - गाहे - हिम्मते - मर्दाना[18] हम
दायमुल हब्स इसमें हैं लाखों तमन्नाएं, 'असद'
जानते हैं सीनए - पुर - ख़ूं[19] को ज़िन्दांख़ाना[20] हम

१. आविष्कार, २. वसंत की हवा, ३. शराब से खाली सुराही, ३. फूल की हवा से रिक्त दिल, ४. शान; रोब, ५. गौरव युक्त सौन्दर्य का दर्शन, ६. फूल के पहनावे की जेव का फूल, ७. बिजली, ८. शोक-गृह की शमआ, ९. अस्तव्यस्त, १०. ताश खेलने का खयाल, ११. उत्पत्ति, १२. परवाने के हृदय-प्रदेश का प्रकाश १३. कमजोरी, १४. संतोष, १५. खोज का त्याग, १६. मर्दों का हौसला, १७. आजीवन वन्दी. १८. खून से भरा सीना, १९. कैदख़ाना, २०. परदेस।

✤ ✤ ✤ ✤ ✤

मुझको दयारे-ग़ैर[1] में मारा, वतन से दूर
रख ली मेरे ख़ुदा ने, मेरी बेकसी की शर्म
वो हल्क़ा-हाए-ज़ुल्फ़[2] कमीं[3] में हैं ऐ ख़ुदा
रख लीजो मेरे दावए-वारस्तगी[4] की शर्म

✤ ✤ ✤ ✤ ✤

लूं वाम[5] बख़्ते-ख़ुफ़्ता[6] से, यक ख़्वाबे-ख़ुश,[7] वले
'ग़ालिब' यह ख़ौफ़ है, कि कहां से अदा करूं

✤ ✤ ✤ ✤ ✤

वो फ़िराक़[8] और वो विसाल,[9] कहां
वो शबो[10] रोज़ो, माहो साल कहां
फ़ुर्सते-कारोबारे-शौक़ किसे
ज़ौक़े-नज़्ज़ारए-जमाल[11] कहां
दिल तो दिल वो दिमाग़ भी न रहा
शोरे-सौदाए-ख़त्तो-ख़ाल कहां
थी वो इक शख़्स के तसव्वुर[12] से
अब वो रानाइए-ख़याल[13] कहां
ऐसा आसां नहीं लहू रोना
दिल में ताक़त जिगर में हाल[14] कहां
हमसे छूटा क़ुमार-ख़ानए-इश्क़
वां जो जावें, गिरह में माल कहां

१. पराया घर, २. ज़ुल्फ़ के घेरे, ३. घात, ४. किसी पर मोहित होना, ५. उधार, ६. सुप्त भाग्य, ७. मधुर स्वप्न, ८. वियोग, ९. मिलन, १०. रात, ११. सौन्दर्य, १२. कल्पना, १३. विचार-सौन्दर्य, १४. मस्ती।

फ़िक्रे - दुनिया में सर खपाता हूं
मैं कहां और ये वबाल कहां
मुज़महिल[1] हो गये क़ुवा,[2] 'ग़ालिब'
वो अनासिर[3] में एतदाल कहां

✣ ✣ ✣ ✣ ✣

की वफ़ा हमसे तो ग़ैर उसको ज़फ़ा कहते हैं
होती आई है, कि अच्छों को बुरा कहते हैं
आज हम अपनी परीशानिए - ख़ातिर[4] उनसे
कहने जाते तो हैं, पर देखिए क्या कहते हैं
अगले वक़्तों के हैं ये लोग इन्हें कुछ न कहो
जो मै-ओ - नग़मा[5] को अन्दोह - रुबा[6] कहते हैं
दिल में आ जाये है, होती है जो फ़ुर्सत ग़श से
और फिर कौनसे नाले को रसा[7] कहते हैं
है परे सरहदे-इदराक[8] से, अपना मस्जूद[9]
क़िबले[10] को अहले-नज़र क़िबला-नुमा कहते हैं
पाए-अफ़गार[11] पे, जब से तुझे रहम आया है
ख़ारे - रह[12] को तेरे हम, मेहर[13] गया कहते हैं
इक शरर दिल में है, उससे कोई घबरायेगा क्या
आग मतलूब है हमको, जो हवा कहते हैं
देखिए लाती है उस शोख़ की नख़वत,[14] क्या रंग
उसकी हर बात पे हम नामे - ख़ुदा, कहते हैं

---

१. शिथिल, २. अंग, ३. तत्त्व, ४. परीशान हालत, ५. शराब और संगीत, ६. दुखदर्द हरने वाला, ७. प्रभावित करने वाला, ८. समझ की सीमा, ९. सजदे का स्थान, १०. असल, ११. पाँव का ज़ख्म, १२. मार्ग का काँटा, १३. सूरज. १४. घमण्ड ।

वहशत - ओ - शेफ़्ता अब मरसिया कहवें शायद
"मर गया ग़ालिबे आशुफ़्ता - नवा,"[1] कहते हैं

✣ ✣ ✣ ✣ ✣

आबरू क्या ख़ाक उस गुल की, कि गुलशन में नहीं
है गरेबां नंगे - पैराहन[2] जो दामन में नहीं
ज़ोफ़ से, ऐ गिरिया, कुछ बाक़ी मिरे तन में नहीं
रंग होकर उड़ गया, जो ख़ूं कि दामन में नहीं
हो गये हैं जम्अ अज्ज़ाए - निगाहे - आफ़ताब[3]
ज़र्रे, उसके घर की दीवारों के रौज़न[4] में नहीं
क्या कहूं तारीकिए - ज़िन्दाने - ग़म,[5] अन्धेर है
पम्बा[6] नूरे - सुबह से कम, जिसके रौज़न में नहीं
रौनक़े - हस्ती[7] है, इश्क़े - ख़ाना - वीरां साज़ से
अंजुमन बे शम्अ है, गर बर्क़ ख़िरमन[43] में नहीं
ज़ख़्म सिलवाने से मुझ पर चारा - जोई[9] का है तान[10]
ग़ैर समझा है कि लज़्ज़त ज़ख़्मे - सोज़न[11] में नहीं
बस कि हैं हम इक बहारे नाज़ के मारे हुए
जल्वए - गुल के सिवा, गर्द अपने मदफ़न[12] में नहीं
क़तरा क़तरा इक हयूला[13] है, नये नासूर का
ख़ूं भी ज़ौक़े - दर्द से फ़ारिग़[14] मिरे तन में नहीं

---

१. परीशान आवाज़ २. पहनावे के लिए लज्जास्पद, ३. सूरज की दृष्टि का तत्त्व, ४. सुराख, ५. विपद् के बन्दीगृह का अन्धकार, ६. रुई का फाहा, ७. सुबह का प्रकाश, ८. जीवन की शोभा, ४३. खलिहान, ९. उपचार, १०. ताना; उलाहना, ११. सुई का घाव, १२. दफ़न करने का स्थान, १३. भौतिक तत्त्व, १४. मुक्त।

ले गई हाकी की नखवत,[1] कल्जुम - आशामी[2] मेरी
मौजे - मै की आज रग मीना की गर्दन में नहीं
हो फ़िशारे - ज़ोफ़[3] में क्या नातवानी[4] की नमूद[5]?
क़द के झुकने की भी गुंजाइश मेरे तन में नहीं
थी वतन में शान क्या 'ग़ालिब,' कि हो गुर्वत[6] में क़द्र
वेतकल्लुफ़ हूं वो मुश्ते - ख़स,[7] कि गुलख़न[8] में नहीं

* * * * *

ओहदे से मदहे[9] - नाज़ के, बाहर न आ सका
गर इक अदा हो, तो उसे अपनी क़ज़ा[10] कहूं
हल्क़े हैं चश्म - हाए - कुशादा[11] बसूए - दिल[12]
हर तारे - जल्फ़ को निगाहे - सुरमा सा कहूं
मैं और सद हज़ार नवाए - जिगर ख़राश[13]
तू, और एक वो न शुनीदन,[14] कि क्या कहूं
ज़ालिम मेरे गुमां से मुझे मुनफ़इल[15] न चाह
हय, हय, खुदा न करदः, तुझे वेवफ़ा कह

* * * * *

मेहरबां हो के बुलालो मुझे, चाहो जिस वक़्त
मैं गया वक़्त नहीं हूं कि फिर आ भी न सकं

---

१. घमण्ड, २. नदी पी जाना, ४३. दुर्बलता की विकलता; कमजोरी, ५. विकास, ६. परदेस, ७. मुट्ठी भर घास, ८. घास उगने का स्थान, ९. प्रशंसा, १०. मृत्यु, ११. विस्फारित आँखें, १२. दिल की ओर, १३. जिगर चीरने वाली आवाज़, १४. सुनना, १५. पश्चात्ताप करने वाला।

ज़ोफ़[1] में तानए - अग़यार[2] का शिकवा क्या है
वात कुछ सर तो नहीं है, कि उठा भी न सकूं
ज़हर मिलता ही नहीं मुझको, सितमगर वरना
क्या क़सम है तेरे मिलने की, कि खा भी न सकूं

* * * * *

हम से खुल जाओ ववक़्ते - मै - परस्ती,[3] एक दिन
वरना हम छेड़ेंगे, रखकर उज्रे - मस्ती एक दिन
ग़र्रए - ओजे - विनाए - आलमे इम्कां[4] न हो
इस वुलन्दी के नसीवों में है पस्ती एक दिन
क़र्ज़ की पीते थे मै, लेकिन समझते थे कि हां
रंग लायेगी हमारी फ़ाक़ा - मस्ती, एक दिन
नग़्माहाए ग़म को भी ऐ दिल ग़नीमत जानिए
वेसदा[5] हो जायगा, यह साज़े - हस्ती[6] एक दिन
धौल धप्पा उस सरापा - नाज़ का शेवा नहीं
हम ही कर वैठे थे, 'ग़ालिव' पेश - दस्ती[7] एक दिन

* * * * *

हम पर जफ़ा से, तर्के - वफ़ा का गुमां नहीं
इक छेड़ है, वगरना मुराद इम्तिहां नहीं
किस मुंह से शुक्र कीजिये, इस लुत्फ़े ख़ास का
पुरसिश[8] है और पाए - सुख़न[9] दरमियां नहीं

---

१. दुर्वलता, २. दूसरों का व्यंग्य-वाण ३. शराव पीते समय, ४. दुनिया को अपने आधार के शिखर का गर्व, ५. मौन, ६. शरीर, ७. पहल, छेड़-खानी, ८. पूछना, ९. वात का माध्यम।

हमको सितम अज़ीज़, सितमगर को हम अज़ीज़
ना मेहरबां नहीं है, अगर मेहरबां नहीं
बोसा नहीं, न दीजिये, दुश्नाम[1] ही सही
आख़िर ज़ुबां तो रखते हो तुम, गर दहां[2] नहीं
हर चन्द जां - गुदाज़िए - क़हरो - इताब[3] है
हर चन्द पुश्त गर्मिए - ताबो - तवां नहीं
जां मुतरिबे - तरानाए - हल मिन - मज़ीद[4] है
लब परदा - संजे - ज़मज़माए - अल - अमां[5] नहीं
ख़ंजर से चीर सीना अगर दिल न हो दुनीम[6]
दिल में छुरी चुभो, मिशा[7] गर ख़ूंचकां[8] नहीं
है नंगे - सीना, दिल अगर आतिश - कदा न हो
है आरे - दिल,[9] नफ़स अगर आज़र - फ़िशां[10] नहीं
नुक़सां नहीं जुनूं में, बला से हो घर ख़राब
सौ गज़ ज़मी के बदले, बयाबां गरां[11] नहीं
कहते हो "क्या लिखा है तेरी सरनविश्त[12] में"
गोया जबीं[13] पे सजदए - बुत[14] का निशां नहीं
पाता हूं उससे दाद कुछ अपने कलाम की
रूहुल - कुदुस[15] अगरचे मेरा हम ज़ुबां नहीं
जां है बहाए - बोसा,[16] वले क्यों कहे, अभी
'ग़ालिब' को जानता है, कि वे नीमजां नहीं

---

१. गाली, २. मुँह, ३. क्रोध और रोष का कष्ट, ४. और लाओ का गीत गाने वाला रागी, ५. शरण माँगना, ६. दो टुकड़े, ७. पलक, ८. रक्तरंजित, ९, दिल के लिए लज्जा, १०. आग उगलने वाला, ११. महंगा, १२. जन्मपत्री, १३. माथा, १४. प्रेमी को सजदा करना, १५. एक फरिश्ता, १६. चुम्बन के लिए।

   

मानए - दश्त - नवर्दी[1] कोई तदबीर नहीं
एक चक्कर है, मेरे पांव में ज़ंजीर नहीं
शौक़ उस दश्त में दौड़ाए है मुझको कि जहां
जादा[2] ग़ैर - अज़[3] निगहे - दीदए - तस्वीर[4] नहीं
हसरते - लज़्ज़ते - आज़ार[5] रही जाती है
जादए - राहे - वफ़ा,[6] जुज़ दमे - शमशीर[7] नहीं
रंजे - नौमीदिए - जावेद गवारा रहियो
खुश हूं गर नाला - ज़ुबूनी कशे - तासीर नहीं
सर खुजाता है जहां ज़ख़्मे सर अच्छा हो जाय
लज़्ज़ते - संग[8] बअन्दाज़ाए - तक़रीर नहीं
जब करम[9] रुख़सते - बेबाकी - ओ - गुस्ताख़ी दे
कोई तक़सीर[10] बजुज़ ख़िजलते - तकसीर[11] नहीं
'ग़ालिब' अपना यह अक़ीदा[12] है बक़ौले - 'नासिख़'
"आप बे बहरा है जो मोतक़िदे[13] 'मीर' नहीं"

    

मत मर्दुमके - दीदा[14] में समझो ये निगाहें
हैं जम्अ सवेदाये - दिले - चश्म[15] में आहें

---

१. जंगल में घूमने में बाधा, २. मार्ग, ३. सिवा, ४. तस्वीर की आँख की दृष्टि, ५. दुख के स्वाद की आकांक्षा, ६. प्रेम-मार्ग की मंज़िल, ७. तलवार की धार, ८. पत्थर खाने का मजा. ९. उदारता, १०. अपराध, ११. अपराध की लज्जा, १२. विश्वास, १३. श्रद्धालु, १४. आँख की पुतली, १५. दिल के दाग़ की आँख।

✤ ✤ ✤ ✤ ✤

चरशिकाले - गिरियाए - आशिक़[1] है, देखा चाहिये
खुल गई मानिन्दे - गुल,[2] सौ जा[3] से दीवारे चमन
उल्फ़ते - गुल से ग़लत है दावाए - वारस्तगी[4]
सर्व है बावस्फ़े - आज़ादी[5] गिरफ्तारे - चमन

✤ ✤ ✤ ✤ ✤

इश्क़ तासीर[6] से नौमीद[7] नहीं
जां सुपारी[8] शजरे - बेद[9] नहीं
सलतनत दस्त बदस्त आई है
जामे - मै ख़ातिमे - जमशेद[10] नहीं
है तजल्ली[11] तेरी सामाने - वजूद
ज़र्रा बे - परतवे - ख़ुर्शीद[12] नहीं
राज़े - माशूक़ न रुस्वा[13] हो जाय
वरना मर जाने में कुछ भेद नहीं
गर्दिशे रंगे - तरब[14] से डर है
ग़मे - महरूमिए - जावेद[15] नहीं
कहते हैं, जीते हैं उम्मीद पे लोग
हम को जीने की भी उम्मीद नहीं

---

१. प्रेमी की आँखों की बरसात, २. फूल के सदृश, ३. जगह, ४. रिहाई का दावा, ५. आजादी के बावजूद, ६. प्रभाव, ७. निराश, ८. जान निछावर करना. ९. बेद का पेड़, १०. जमशेद बादशाह की अंगूठी, ११. प्रकाश, १२. सूरज के प्रतिबिम्ब के बिना, १३. बदनाम, १४. प्रसन्नता के परिवर्तनशील रंग, १५. सदा वंचित रहने का दुख।

* * * * *

जहां तेरा नक़्शे - क़दम[1] देखते हैं
ख़ियाबां ख़ियाबां[2] इरम[3] देखते हैं
दिल - आशुफ़्तगां[4] ख़ाले - कुंजे - दहन[5] के
सवेदा[6] में सैरे अदम[7] देखते हैं
तेरे सर्वे - क़ामत[8], से, इक क़द्दे - आदम[9]
क़यामत के फ़ितने को, कम देखते हैं
तमाशा कर ऐ, महवे - आईना दारी[10]
तुझे किस तमन्ना से हम देखते हैं
सुराग़े - तुफ़े - नाला[11] ले दाग़े - दिल से
कि शब रौ[12] का नक़्शे - क़दम देखते हैं
बनाकर फ़क़ीरों का हम भेस, 'ग़ालिब'
तमाशाए अहले - करम[13] देखते हैं

* * * * *

मिलती है ख़ूए - यार[14] से नार,[15] इल्तहाब[16] में
काफ़िर हूं गर न मिलती हो राहत अज़ाब[17] में
कब से हूं, क्या बताऊं जहाने ख़राब में
शबहाए - हिज्र[18] को भी रखूं गर हिसाब में
ता फिर न इन्तज़ार में नीन्द आये उम्र भर
आने का अहद[19] कर गये, आये जो ख़्वाब में

---

१. पद-चिह्न, २. क्यारी, ३. स्वर्ग, ४. परीशानहाल, ५. अधर के कोने का तिल, ६. दिल का दाग. ७. परलोक की सैर, ८. सरू के पेड़ जैसा लम्बा कद, ९. मनुष्य का क़द, १०. आईना देखने में मस्त, ११. आह की गर्मी का पता, १२. रात का राही, १३. दानशील, १४. प्रेमी का स्वभाव, १५. आग, १६. नरक, १७. दुख, १८. वियोग की रातें, १९. वादा।

क़ासिद[1] के आते आते ख़त इक और लिख रखूं
मैं जानता हूं, जो वो लिखेंगे जवाब में

मुझ तक कब, उनकी बज़्म में आता था दौरे - जाम
साक़ी ने कुछ मिला न दिया हो शराब में

जो मुंकिरे - वफ़ा[2] हो, फ़रेब उस पे क्या चले
क्यों बदगुमां हूं दोस्त से, दुश्मन के बाब[3] में

मैं मुज़तरिब[4] हूं वस्ल में, ख़ौफ़े - रक़ीब[5] से
डाला है तुमको वहम ने, किस पेचो - ताब में

मैं और हज़्ज़े - वस्ल,[6] ख़ुदा - साज़[7] बात है
जां नज़्र देनी भूल गया, इज़्तिराब[8] में

है तेवरी चढ़ी हुई, अन्दर नक़ाब के
है इक शिकन पड़ी हुई, तर्फ़े - नक़ाब में

लाखों लगाव, एक चुराना निगाह का
लाखों बनाव, एक बिगड़ना अताब[9] में

वो नाला दिल में ख़स के बराबर जगह न पाये
जिस नाले से शिगाफ़ पड़े आफ़ताब[10] में

वो सेहर,[11] मुद्दआ - तलबी[12] में न काम आये
जिस सेहर से सफ़ीना[13] रवां[14] हो सराब[15] में

'ग़ालिब' छुटी शराब; पर अब भी कभी कभी
पीता हूं रोज़े - अब्रो[16] शबे - माहताब[17] में

---

१. संदेशवाहक. २. वफा से इनकार करने वाला, ३. बारे में, ४. बेचैन, ५. प्रतिद्वन्द्वी का भय, ६. मिलने का आनन्द, ७. खुदा की ओर से, ८. विकलता, ९. क्रोध, १०. सूरज, ११. जादू ; मंत्र, १२. इच्छा-पूर्ति, १३. नाव, १४. चलना, १५. मरीचिका, १६. जिस दिन बादल छाया हो, १७. चाँदनी रात।

✤ ✤ ✤ ✤ ✤

कल के लिये कर आज न ख़िस्सत[1] शराब में
यह सूए-ज़न[2] है, साक़िए-कौसर[3] के बाब में
हैं आज क्यों ज़लील, कि कल तक न थी पसन्द
गुस्ताख़िए-फ़रिश्ता हमारी जनाब में[4]
जां क्यों निकलने लगती है तन से, दमे-समा[5]
गर वो सदा समाई है चंगो-रबाब में
रौ[6] में है रख़्शे-उम्र,[7] कहां, देखिये, थमे
ने हाथ बाग पर है, न पा है रकाब में
उतना ही मुझको अपनी हक़ीक़त से बोद[8] है
जितना कि वहमे-ग़ैर से हूं पेचो-ताब में
अस्ले-शहूदो-शाहिदो-मशहूद[9] एक है
हैरां हूं फिर मुशाहिदा[10] है किस हिसाब में
है मुश्तमिल[11] नमूदे-सुवर[12] पर वजूदे-बहर[13]
यां क्या धरा है क़तरओ-मौजो-हबाब[14] में
शर्म इक अदाए-नाज़ है, अपने ही से सही
हैं कितने बेहिजाब कि हैं, यों हिजाब[15] में

---

१. कंजूसी, २. अविश्वास, ३. कौसर स्रोत का साक़ी; खुदा, ४. खुदा ने मनुष्य को बनाकर सब फ़रिश्तों से कहा कि तुम इसे सजदा अर्थात् प्रणाम करो। एक फ़रिश्ते ने यह आदेश मानने से इन्कार किया तो खुदा ने उसे स्वर्ग से निकाल दिया और वह शैतान बना। इसी ओर संकेत करते हुए कहा है कि कभी हमारे अर्थात् मनुष्य के हुज़ूर में फ़रिश्ता की उद्दण्डता भी गवारा नहीं थी, पर आज वही मनुष्य इतना अपमानित क्यों हो रहा है? ५. सुनते समय, ६. गति, ७. आयु का घोड़ा, ८. दूरी, ९. दृश्य, द्रष्टा और दिखाने वाले की वास्तविकता, १०. देखना, ११. निर्भर, १२. आवाज़ पैदा होना. १३. समुद्र का अस्तित्व, १४. तरंग के बुलबुले की बूंद, १५. पर्दा।

आराइशे - जमाल[1] से फ़ारिग़ नहीं हनोज़
पेशे - नज़र है आइना दाइम नक़ाब में
है ग़ैबे - ग़ैब,[2] जिसको समझते हैं हम शहूद[3]
हैं ख़्वाब में हनोज़, जो जागे हैं ख़्वाब में
'ग़ालिब' नदीमे - दोस्त[4] से, आती है बूए - दोस्त
मशग़ूले - हक़ हूं, बन्दगीए - बू तुराब[5] में

* * * * *

हैरां हूं, दिल को रोऊं, कि पीटूं जिगर को मैं
मक़दूर[6] हो, तो साथ रखूं नौहागर[7] को मैं
छोड़ा न रश्क[8] ने, कि तेरे घर का नाम लूं
हर इक से पूछता हूं, कि जाऊं किधर को मैं
जाना पड़ा रक़ीब के दर पर, हज़ार बार
ऐ काश, जानता न तेरी रहगुज़र को मैं
है क्या, जो कसके बांधिए, मेरी बला डरे
क्या जानता नहीं हूं, तुम्हारी कमर को मैं
लो, वह भी कहते हैं कि यह बेनंगो - नाम है
यह जानता अगर, तो लुटाता न घर को मैं
चलता हूं थोड़ी दूर, हर इक तेज़ रौ[9] के साथ
पहचानता नहीं हूं अभी, राहबर[10] को मैं
ख़्वाहिश को, अहमक़ों ने, परस्तिश[11] दिया क़रार
क्या पूजता हूं उस बुते - बेदादगर[12] को मैं

१. सौंदर्य का शृंगार, २. छिपा हुआ, ३. प्रकट, ४. प्रेमी का दोस्त, ५. हज़रत अली, ६. सामर्थ्य, ७. रोने वाला; मर्सिया कहने वाला, ८. ईर्ष्या, ९. द्रुतगामी, १०. पथ-प्रदर्शक, ११. पूजा, १२. निष्ठुर प्रेमी।

फिर बेख़ुदी में भूल गया, राहे कूए यार
जाता वगरना एक दिन अपनी ख़बर को मैं
अपने पे कर रहा हूं क़यास, अहले-दहर[1] का
समझा हूं दिल-पिज़ीर,[2] मताए-हुनर[3] को मैं
'ग़ालिब' ख़ुदा करे कि सवारे-समन्दे-नाज़[4]
देखूं अली बहादुरे आली गुहर को मैं

✣ ✣ ✣ ✣ ✣

ज़िक्र मेरा, बबदी भी, उसे मंज़ूर नहीं
ग़ैर की बात बिगड़ जाये, तो कुछ दूर नहीं
वादए-संरे-गुलिस्तां है, ख़ुशा[5] ताले-ए-शौक़[6]
मुज़दए-क़त्ल[7] मुक़द्दर[8] है, जो मज़कूर[9] नहीं
शाहिदे-हस्तिए-मुत्लक़[10] की कमर है आलम
लोग कहते हैं कि है, पर हमें मंज़ूर नहीं
क़तरा अपना भी हक़ीक़त में है दरिया, लेकिन
हमको तक़लीदे[11]-तुनुक-ज़र्फ़िए[12]-मंसूर नहीं
हसरत! ऐ ज़ौक़े-ख़राबी, कि वो ताक़त न रही
इश्क़े-पुर-अरबदा[13] की गों[14] तने रंजूर[15] नहीं
ज़ुल्म कर, ज़ुल्म, अगर लुत्फ़ दरेग़ आता हो
तू तग़ाफ़ुल[16] में किसी रंग से माज़ूर[17] नहीं

---

१. दुनिया वाले, २. दिल को लुभाने वाला, ३. हुनर की दौलत, ४, गर्व के घोड़े पर सवार, ५. प्रसन्न होने की बात, ६. शौक़ का भाग्य, ७. क़त्ल की ख़ुश-ख़बरी ८. क़िस्मत में लिखी हुई, ९. ज़िक्र, १०. स्वच्छन्द अस्तित्व वाला भगवान्, ११. अनुसरण, १२. मंसूर का ओछापन, १३. लड़ाई, १४. स्थान, १५. बीमार शरीर, १६. उपेक्षा, १७. विवश।

में जो कहता हूं कि हम लेंगे क़यामत में तुम्हें
किस रऊनत[1] से वो कहते हैं, कि हम हूर नहीं
साफ़ दुर्दी कशे - पैमानए - जम[2] हैं, हम लोग
वाए, वो वादा कि अफ़शुर्दए - अंगूर[3] नहीं
हूं ज़हूरी के मुक़ाबिल में ख़िफ़ाई 'ग़ालिब'
मेरे दावे पे यह हुज्जत है, कि मशहूर नहीं

* * * * *

नाला गुज़ हुस्ने - तलब,[4] ऐ सितम इजाद, नहीं
है तक़ाज़ाए - जफ़ा, शिकवए - बेदाद[5] नहीं
इश्क़ो मज़दूरिए - इशरत - गहे - ख़ुसरु[6] क्या ख़ूब!
हमको तस्लीम निकुनामिए[7] - फ़रहाद नहीं
कम नहीं वो भी ख़राबी में, पे वुसअत[8] मालूम
दश्त[9] में, है मुझे वो ऐश कि घर याद नहीं
अहले -वीनिश[10] को है तूफ़ाने - हवादिस,[11] मकतब
लतमए - मौज,[12] कम अज़ सेलिए - उस्ताद[13] नहीं
वाए महरूमिए - तस्लीमो - वदा[14] हाले - वफ़ा
जानता है, कि हमें ताक़ते - फ़रियाद नहीं
रंगे - तमकीने[15] - गुलो - लाला परीशां क्यों है?
गर चराग़ाने - सरे - रह गुज़रे - वाद[16] नहीं

---

१. घमंड, २. जमशेद के प्याले की तलछट पीने वाले, ३. अंगूर की निचोड़ी हुई, ४. सविनय, ५. निष्ठुरता की शिकायत, ६. खुसरो वादशाह के महल की मजदूरी (जो फ़रहाद ने की थी), ७. नेकनामी, ८. विस्तार, ९. जंगल, १०. समझदार, ११. विपत्तियों का तूफ़ान, १२. तमाचा, १३. उस्ताद की चपत, १४. वहुत बुरा, १५. शोभा, १६. हवा।

सबदे - गुल[1] के तले बन्द करे है गुलचीं
मुश्दा, ऐ मुर्ग़, कि गुलज़ार में सय्याद नहीं
नफ़ि से करती है इस्बात[2] तराविश[3] गोया
दी ही जाए - दहन[4] उसको दमे - ईजाद, नहीं
कम नहीं, जल्वागरी में तेरे कूचे से बहिश्त
यही नक़्शा है, वले इस क़दर आबाद नहीं
करते किस मुंह से हो, गुर्बत की शिकायत 'ग़ालिब'
तुम को बे - मेहरिए - याराने - वतन[5] याद नहीं

* * * * *

दोनों जहान दे के, वो समझे, यह ख़ुश रहा
यां आपड़ी यह शर्म, कि तकरार क्या करें
थक थक के, हर मुक़ाम पे दो चार रह गये
तेरा पता न पायें, तो नाचार क्या करें ?
क्या शम्अ के नहीं है हवाख़्वाह[6] अहले - बज़्म[7]
हो ग़म ही जां गुदाज़[8] तो ग़मख़्वार क्या करें

* * * * *

हो गई है ग़ैर की शीरीं - बयानी,[9] कारगर[10]
इश्क़ का उसको गुमां हम बेज़ुबानों पर नहीं

---

१. फूलों की टोकरी, २. साकार, ३. तराशना, ४. मुंह, ५. देशवासियों की निष्ठुरता, ६. शुभचिंतक, ७. महफ़िल वाले, ८. जान घुलाने वाला, ९. मधुर वाणी, १०. सफल।

✤ ✤ ✤ ✤ ✤

क़यामत है, कि सुन लैला का दश्ते-क़ैस[1] में आना
ताज्जुब से वो बोला, यों भी होता है ज़माने में
दिले-नाज़ुक पे उसके रहम आता है, मुझे, 'ग़ालिब'
न कर सरगर्म उस काफ़िर को उल्फ़त आज़माने में

✤ ✤ ✤ ✤ ✤

दिल लगाकर लग गया उनको भी तन्हा बैठना
बारे, अपनी बेकसी की हमने पाई दाद, यां
हैं ज़वाल-आमादा[2] अज्ज़ा[3] आफ़रीनिश[4] के तमाम
मेहरे-गरदूं[5] है चिराग़े-रह-गुज़ारे-बाद यां

✤ ✤ ✤ ✤ ✤

यह हम जो हिज्र[6] में, दीवारो-दर को देखते हैं
कभी सबा को, कभी नामावर[7] को देखते हैं
वो आयें घर में हमारे, ख़ुदा की क़ुदरत है
कभी हम उनको, कभी अपने घर को देखते हैं
नज़र लगे न कहीं, उसके दस्तो-बाज़ू[8] को
ये लोग क्यों मेरे ज़ख़्मे-जिगर को देखते हैं
तेरे जवाहिरे-तरफ़े-कुलह[9] को क्या देखें
हम औजे-तालए-लालो-गुहर[10] को देखते हैं

---

१. मजनूं के प्रवास का जंगल, २. पतनोन्मुख, ३. पंचभूत, ४. सृष्टि, ५. आसमान का सूरज, ६. वियोग, ७. संदेशवाहक, ८. हाथ और बाहें, ९. टोपी में टंके मोती, १०. हीरे-जवाहर के भाग्य की पराकाष्ठा।

नहीं, कि मुझको क़यामत का एतिक़ाद[1] नहीं
शबे-फ़िराक़[2] से रोज़े-जज़ा[3] ज़ियाद[4] नहीं

* * * * *

कोई कहे, कि शबे-मै में[5] क्या बुराई है
बला से, आज अगर दिन को अब्रो-बाद[6] नहीं
जो आऊं सामने उनके, तो मरहबा[7] न कहें
जो जाऊं वां से कहीं को, तो ख़ैरबाद नहीं
कभी जो याद भी आता हूं मैं, तो कहते हैं
कि, आज बज़्म में कुछ फ़ितनओ-फ़साद नहीं
अलावा ईद के मिलती है, और दिन भी, शराब
गदाए-कूचए-मैख़ाना[8] नामुराद नहीं
जहां में हो ग़मो-शादी बहम, हमें क्या काम
दिया है हमको ख़ुदा ने वो दिल, कि शाद नहीं
तुम उनके वादे का ज़िक्र उनसे क्यों करो, 'ग़ालिब'
यह क्या, कि तुम कहो, और वो कहें, कि याद नहीं

* * * * *

तेरे तौसन[9] को सबा[10] बांधते हैं
हम भी मज़मूं की हवा बांधते हैं
आह का किसने असर देखा है
हम भी इक अपनी हवा बांधते हैं

---

१. विश्वास, २. वियोग की रात, ३. क़यामत का दिन, जब फ़ैसले होंगे, ४. अधिक, ५. रात को शराब पीना, ६. घटा, ७. शाबाश, ८. मधुशाला के कूचे का भिखारी, ९. घोड़ा, १०. हवा ।

तेरी फ़ुर्सत के मुक़ाबिल, ऐ उम्र !
बर्क़ को पा ब हिना[1] बांधते हैं
क़ैदे - हस्ती[2] से रिहाई, मालूम
अश्क[3] को बे सरो - पा बांधते हैं
नशए - रंग से, है वाशुदे - गुल[4]
मस्त कब बन्दे - क़िबा[5] बांधते हैं
ग़लतीहाए - मज़ामीं मत पूछ
लोग नाले को रसा बांधते हैं
अहले - तदबीर की वामान्दगियां[6]
आबलों पर भी हिना बांधते हैं
सादा पुरकार[7] हैं ख़ूबाँ, 'ग़ालिब'
हमसे पैमाने - वफ़ा बांधते हैं

✣ ✣ ✣ ✣ ✣

ज़माना सख़्त कम - आज़ार[8] है बजाने - 'असद'
वगरना हम तो तवक़्क़ो ज़ियादा रखते हैं

✣ ✣ ✣ ✣ ✣

दाइम[9] पड़ा हुआ तेरे दर पर नहीं हूं मैं
ख़ाक ऐसी ज़िन्दगी पे, कि पत्थर नहीं हूं मैं
क्यों गर्दिशे - मुदाम[10] से घबरा न जाए दिल ?
इंसान हूं, प्यालओ - साग़र नहीं हूं मैं

---

१. मेंहदी, २. जीने की क़ैद, ३. आँसू, ४. फूल का खुलना, ५. कुर्ते के बन्द, ६. थकान, ७. चालाक, ८. कम दुःख देने वाला, ९. हमेशा, १०. सदा का चक्कर ।

यारब ! ज़माना मुझको मिटाता है किसलिये !
लौहे[1] जहां पे हर्फ़े - मुकर्रर[2] नहीं हूं मैं

हद चाहिये सज़ा में उक़ूबत[3] के वास्ते
आख़िर गुनाहगार हूं क़ाफ़िर नहीं हूं मैं

किस वास्ते अज़ीज़ नहीं जानते मुझे ?
लालो - ज़मुर्रदो ज़रो - गौहर नहीं हूं मैं

रखते हो तुम क़दम मिरी आंखों से क्यों दरेग़
रुतबे में मेहरो - माह[4] से कमतर नहीं हूं मैं

करते हो मुझको मन्‌ए क़दम - बोस[5] किस लिये ?
क्या आसमान के भी बराबर नहीं हूं मैं ?

'ग़ालिब' वज़ीफ़ा ख़्वार हो, दो शाह को दुआ
वो दिन गये कि कहते थे "नौकर नहीं हूं मैं"

* * * * *

सब कहां ! कुछ लाला औ गुल में नुमायां[6] हो गईं
ख़ाक में क्या सूरतें होंगी कि पिन्हां[7] हो गईं

याद थीं हमको भी रंगारंग बज़्म आराइयां[8]
लेकिन अब नक़्शो - निगारे - ताक़े - निसियां[9] हो गईं

थीं बिनातुन्नाशे - गर्दूं[10] दिन को पर्दे में निहां[11]
शब को उनके जी में क्या आई कि उरियां[12] हो गईं

क़ैद में याक़ूब ने ली, गो न यूसुफ़ की ख़बर
लेकिन आंखें रौज़ने - दीवारे - ज़िन्दां[13] हो गईं

१. तख़्ती, २. दोबारा लिखा गया अक्षर; फ़ालतू, ३. सज़ा देने वाला ख़ुदा, ४. सूरज और चांद, ५. क़दम चूमने से मना, ६. प्रकट, ७. छिप, ८. मजलिस सजाना, ९. विस्मृति के ताक़ का रेखाचित्र, १०. आसमान के नक्षत्र आदि, ११. छिप जाते, १२. प्रकट, १३. क़ैदख़ाने की दीवार के सुराख़।

सब रक़ीबों से हूं नाख़ुश पर ज़नाने-मिस्र[1] से
है ज़ुलेख़ा ख़ुश कि महवे-माहे-कनआं[2] हो गईं

जूए-ख़ूं[3] आंखों से बहने दो कि है शामे-फ़िराक़
मैं यह समझूंगा कि शमएँ दो फ़ुरोज़ां[4] हो गईं

इन परीज़ादों से लेंगे ख़ुल्द[5] में हम इन्तेक़ाम
क़ुदरते-हक़ से यही हूरें अगर वां हो गईं

नीन्द उसकी है दिमाग़ उसका है रातें उसकी हैं
तेरी ज़ुल्फ़ें जिसके बाज़ू पर परीशां हो गईं

मैं चमन में क्या गया, गोया दबिस्तां[6] खुल गया
बुलबुलें सुनकर मिरे नाले ग़ज़लख़्वां हो गईं

वो निगाहें क्यों हुई जाती हैं यारब दिल के पार
जो मिरी कोताहिए-क़िस्मत[7] से मिज़गां हो गईं

बस कि रोका मैंने और सीने में उभरीं पै ब पै
मेरी आहें बख़ियए चाके गरीबां हो गईं

वां गया भी मैं, तो उनकी गालियों का क्या जवाब?
याद थीं जितनी दुआएं सर्फ़ दरबां हो गईं

जां-फ़िज़ा[8] है बादा[9] जिसके हाथ में जाम आ गया
सब लकीरें हाथ की गोया रगे-जां हो गईं

हम मुवहिद[10] हैं हमारा केश[11] है तर्के-रुसूम[12]
मिल्लतें[13] जब मिट गईं अज्ज़ाए-ईमां[14] हो गईं

रंज से ख़ूगर हुआ इंसां तो मिट जाता है रंज
मुश्किलें मुझपर पड़ीं इतनी कि आसां हो गईं

---

१. मिसर की स्त्रियों, २. यूसुफ को देखने में खो गईं, ३. खून की नदी, ४. प्रकाशित, ५. स्वर्ग, ६. पाठशाला, ७. अभागापन, ८. प्राणदायक, ९. शराब, १०. एकेश्वरवादी १२. धर्म, १२. प्रथा-त्याग, १३. कौमें, १४. आदी।

यों ही गर रोता रहा 'ग़ालिब' तो ऐ अहले जहां !
देखना इन बस्तियों को तुम, कि वीरां हो गईं

* * * * *

दीवानगी से दोश[1] पे ज़ुन्नार[2] भी नहीं
यानी हमारी जेब में इक तार भी नहीं
दिल को नियाज़े[3]-हसरते दीदार कर चुके
देखा तो हममें ताक़ते दीदार भी नहीं
मिलना तिरा अगर नहीं आसां तो सहल है
दुश्वार तो यही है, कि दुश्वार भी नहीं
बे-इश्क़ उम्र कट नहीं सकती है और यां
ताक़त बक़दरे-लज़्ज़ते-आज़ार भी नहीं
शोरीदगी[4] के हाथ से सर है वबाले-दोश[5]
सहरा में ऐ ख़ुदा कोई दीवार भी नहीं
गुंजाइशे अदावते-अग़यार[6] इक तरफ़
यां दिल में ज़ोफ़ से हविसे यार भी नहीं
डर नाला हाए ज़ार से मेरे, ख़ुदा को मान
आख़िर नवाए-मुर्ग़े-गिरफ़्तार[7] भी नहीं
दिल में है यार की सफ़े-मिज़गां[8] से रूकशी[9]
हालांकि ताक़ते ख़लिशे-ख़ार[10] भी नहीं
इस सादगी पे कौन न मर जाय ऐ ख़ुदा !
लड़ते हैं और हाथ में तलवार भी नहीं

---

१. कंधा, २. जनेऊ, ३. भेंट, ४. उन्माद, ५. कंधे
६. गैरों की दुश्मनी, ७. पिंजड़े में बन्द पक्षी की आवाज़
१०. कांटे की चुभन।

देखा 'असद' को खलवतो - जल्वत[1] में बारहा
दीवाना गर नहीं है तो हुशियार भी नहीं

* * * * *

नहीं है ज़ख़्म कोई बख़िया के दरखुर[2] मिरे तन में
हुआ है तारे - अश्के - यास[3] रिश्ता[4] चश्मे - सोज़न[5] में
हुई है मानए - ज़ौक़े - तमाशा ख़ाना - वीरानी[6]
कफ़े - सैलाब[7] बाक़ी है बरंगे - पम्बा[8] रौज़न में
वदीअत[9] ख़ानए - बेदादे - काविश - हाए - मिज़गां हूं
नगीने-नामे[10] शाहिद[11] है मिरा हर क़तरा ख़ूं तन में
बयां किससे हो ज़ुल्मत - गुस्तरी[12] मेरे शबिस्तां[13] की
शबे - मै हो जो रखदें पम्बा दीवारों के रौज़न में
निकोहिश[14] मानए - बेरब्तीए - शोरे - जुनूं[15] आई
हुआ है ख़न्दए - अहबाब[16] बख़िया जेबो दामन में
हुए उस मेहर - वश[17] के जल्वए - तिमसाल[18] के आगे
पर - अफ़शां[19] जौहर आईने में मिस्ले - ज़र्रा[20] रौज़न में
न जानूं नेक हूं या बद हूं पर सोहबत मुख़ालिफ़ है
जो गुल हूं तो हूं ख़सख़न[21] में, जो ख़स हूं तो हूं गुलशन में
हज़ारों दिल दिये जोशे - जुनूने - इश्क़ ने मुझको
सियह होकर सवेदा[22] हो गया हर क़तरा ख़ूं तन में

---

१. एकान्त और महफिल, २. योग्य, ३. निराशा के आंसुओं का तार, ४. धागा, ५. सूई की आँख, ६. घर की बरबादी, ७. बाढ़ का झाग, ८. रूई के फाहे की तरह, ९. धरोहर, १०. नाम खुदा नगीना, ११. देखने वाला, १२. अंधकार फैलाना, १३. शयनगृह, १४. उलाहना, १५. उन्मादी को असंबद्ध शोर की मनाही, १६. मित्रों का मुस्कराना, १७. सूर्यमुखी, १८. प्रतिबिंबित दृश्य, १९. फड़फड़ाता, २०. अणु के सदृश, २१. घास का खेत, २२. दिल का दाग।

'असद' ज़िन्दानिए - तासीरे - उल्फ़त - हाए - ख़ूबां[1] हूं
ख़मे - दस्ते - नवाज़िश[2] हो गया है तौक़ गर्दन में

✣ ✣ ✣ ✣ ✣

मज़े जहान के अपनी नज़र में ख़ाक नहीं
सिवाए ख़ूने जिगर, सो जिगर में ख़ाक नहीं
मगर गुबार[3] हुए पर हवा उड़ा ले जाए
वगरना ताबो - तवां[4] बालो - पर[5] में ख़ाक नहीं
यह किस बहिश्त - शमाइल[6] की आमद आमद है ?
कि ग़ैरे[7] जल्वए गुल रहगुज़र में ख़ाक नहीं
भला उसे न सही, कुछ मुझी को रहम आता
असर मिरे नफ़से - बे - असर में ख़ाक नहीं
ख़याले - जल्वए - गुल से ख़राब हैं मैकश[8]
शराब ख़ाने के दीवारो-दर में ख़ाक नहीं
हुआ हूं इश्क़ की ग़ारत - गरी[9] से शर्मिन्दा
सिवाए हसरते - तामीर[10] घर में ख़ाक नहीं
हमारे शेर हैं अब सिर्फ़ दिल्लगी के, 'असद'
खुला कि फ़ायदा अर्ज़े - हुनर में ख़ाक नहीं

✣ ✣ ✣ ✣ ✣

दिल ही तो है न संगो-ख़िश्त[11] दर्द से भर न आये क्यों
रोयेंगे हम हज़ार बार कोई हमें सताये क्यों

---

१. प्रेमिकाओं की प्रीति के प्रभाव का बन्दी, २. प्यार से गले में पड़ी बांह, ३. मिट्टी: धूल, ४. शक्ति, ५. पंख, ६. स्वर्ग-सदृश, ७. अतिरिक्त, ८. शराबी, ९. बरबादी, १०. निर्माण की हसरत, ११. पत्थर और ढेला।

दैर[1] नहीं, हरम[2] नहीं, दर नहीं, आस्तां[3] नहीं
बैठे हैं रहगुज़र पे हम, ग़ैर हमें उठाये क्यों

जब वो जमाले-दिलफ़रोज़,[4] सूरते-मेहरे-नीम-रोज़[5]
आप ही हो नज़ारा-सोज़, पर्दे में मुंह छिपाये क्यों

दश्नए-ग़मज़ा[6] जांसितां,[7] नावके-नाज़[8] बे-पनाह
तेरा ही अक्से-रुख़[9] सही, सामने तेरे आये क्यों

क़ैदे-हयातो[10] बन्दे-ग़म[11] अस्ल में दोनों एक हैं
मौत से पहले आदमी, ग़म से निजात पाये क्यों

हुस्न और उसपे हुस्ने-ज़न,[12] रह गई बुलहवस[13] की शर्म
अपने पे एतमाद है ग़ैर को आज़माये क्यों

वां वो ग़ुरूरे इज़्ज़ो-नाज़[14] यां यह हिजाबे-पासे-वज़्अ[15]
राह में हम मिलें कहां, बज़्म में वो बुलाये क्यों

हां वो नहीं ख़ुदा परस्त जाओ वो बेवफ़ा सही
जिसको हो दीनो दिल अज़ीज़ उसकी गली में जाये क्यों

'ग़ालिबे' ख़स्ता[16] के बग़ैर कौन से काम बन्द हैं
रोइए ज़ार ज़ार क्या कीजिये हाय हाय क्यों

* * * * *

गुन्चए नाशगुफ़्ता[17] को दूर से मत दिखा कि यों
बोसे को पूछता हूं मैं मुंह से मुझे बता कि यों

---

१. मंदिर, २. काबा, ३. चौखट, ४. मनोहर सौंदर्य, ५. दोपहर के सूरज के सदृश, ६. अदा का नश्तर, ७. जान लेने वाला, ८. नखरे का तीर, ९. चेहरे का प्रतिबिंब, १०, जीवन का बंधन, ११. दुःख का बंधन, १२. अच्छी भावनाएं, १३. लाभ रखने वाला, १४. सम्मान और रूप का अहंकार, १५, स्वाभिमान के स्वभाव की लज्जा, १६. दुर्बल, १७. अविकसित।

पुरसिशे - तर्ज़े - दिलबरी[1] कीजिये क्या कि बिन कहे
उसके हरएक इशारे से निकले है यह अदा कि यों

रात के वक़्त मै पिये साथ रक़ीब को लिये
आये वो यां ख़ुदा करे, पर न करे ख़ुदा कि यों

"ग़ैर से रात क्या बनी" यह जो कहा तो देखिए
सामने आन बैठना, और यह देखना कि यों

बज़्म में उसके रूबरू क्यों न ख़मोश बैठिए
उसकी तो ख़ामुशी में भी है यही मुद्दआ कि यों

मैंने कहा कि बज़्मे - नाज़[2] चाहिये ग़ैर से तही[3]
सुनके सितम - ज़रीफ़ ने मुझको उठा दिया कि यों

मुझसे कहा जो यार ने "जाते हैं होश किस तरह"
देख के मेरी बेख़ुदी चलने लगी हवा कि यों

कब मुझे कूए - यार[4] में रहने की वज़्अ[5] याद थी
आइनादार बन गई हैरते - नक़्शे - पा[6] कि यों

गर तिरे दिल में हो ख़याल, वस्ल[7] में शौक़ का ज़वाल[8]
मौज मुहीते - आब[9] में मारे है दस्तो[10] - पा कि यों

जो ये कहे कि रेख़्ता[11] क्योंकि हो रश्के फ़ारसी[12]
गुफ़्तए 'ग़ालिब'[13] एक बार पढ़के उसे सुना कि यं

* * * * *

हसद[14] से दिल अगर अफ़सुर्दा है गर्मे - तमाशा हो
कि चश्मे - तंग[15] शायद कसरते - नज़ारा[16] से वा हो

---

१. दिल छीनने का ढंग क्या पूछिए, २. तुम्हारी महफिल, ३. खाली, ४. प्रेमी का कूचा, ५. ढंग, ६. पदचिह्न का आश्चर्य, ७. मिलन, ८. पतन, ९. भंवर, १०. हाथ-पांव, ११. उर्दू, १२. फारसी के बराबर, १३. गालिब का कलाम, १४. द्वेष, १५. दृष्टि की संकीर्णता, १६. दृश्य की बहुलता।

वक़दरे हसरते दिल चाहिये ज़ौक़े - मआसी[1] भी
भरूं यक गोशए - दामन, गर आवे - हफ़्त-दरिया[2] हो
अगर वो सर्वक़द गर्मे - ख़िरामे - नाज़[3] आ जावे
कफ़े हर ख़ाके - गुलशन शक्ले - कुमरी[4] नाला - फ़रसा[5] हो

✣ ✣ ✣ ✣ ✣

कावे में जा रहा तो न दो ताना क्या कहें
भूला हूं हक़्क़े सोहवते अहले - कुनिश्त[6] को
ताअत[7] में ता रहे न मओ - अंगवीं[8] की लाग
दोज़ख़ में डाल दो कोई लेकर वहिश्त को
हूं मुनहरिफ़[9] न क्यों रहों - रस्मे - सवाव[10] से
टेढ़ा लगा है क़त क़लमे - सर - नविश्त को
आई अगर वला तो जिगर से टली नहीं
एराही[11] देके हमने वचाया है किश्त को
'ग़ालिव' कुछ अपनी सई से लहना[12] नहीं मुझे
ख़िरमन[13] जले अगर न मलख़[14] खाये किश्त[15] को

✣ ✣ ✣ ✣ ✣

वारुस्ता[16] उससे हैं कि मुहव्वत ही क्यों न हो
कीजे हमारे साथ, अदावत ही क्यों न हो

---

१. गुनाहों का शौक़, २. सात नदियों का पानी, ३. नाज़ दिखलाता हुआ, ४. क़ुमरी पक्षी के समान, ५. रूदन करने लगे, ६. गिरजा वाले; ईसाई, पूजा, ८. शराव और शहद, ९. न मानने वाला, १०. धार्मिक रीति-रिवाज, वीच में मोहरा डालकर, १२. लाभ, १३. खलिहान, १४. टिड्डी, खेती, १६. आज़ाद।

छोड़ा न मुझमें ज़ोफ़ ने रंग इख़्तलात[1] का
है दिल पे बार[2] नक़्शे - मुहब्बत ही क्यों न हो
है मुझको तुझसे तज़्करए - ग़ैर[3] का गिला
हर चन्द बर - सबीले - शिकायत[4] ही क्यों न हो
पैदा हुई है कहते हैं "हर दर्द की दवा"
यों हो तो चारए - ग़मे - उल्फ़त ही क्यों न हो
डाला न बेकसी ने किसी से मुआमला[5]
अपने से खींचता हूं ख़िजालत[6] ही क्यों न हो
है आदमी बजाए ख़ुद इक महशरे - ख़याल[7]
हम अंजुमन समझते हैं ख़लवत[8] ही क्यों न हो
हंगामए ज़बूनिए[9] हिम्मत है इंफ़आल[10]
हासिल न कीजे दहर[11] से इबरत ही क्यों न हो
वारुस्तगी बहानए - बेगानगी नहीं
अपने से कर न ग़ैर से वहशत ही क्यों नहीं
मिटता है फ़ौते - फ़ुर्सते - हस्ती[12] का ग़म कहीं
उम्रे - अज़ीज़ - सर्फ़े इबादत ही क्यों न हो
उस फ़ितना - ख़ू[13] के दर से अब उठते नहीं 'असद'
इसमें हमारे सर पे क़यामत ही क्यों न हो

* * * * *

क़फ़स[14] में हूं गर अच्छा भी न जानें मेरे शेवन को[15]
मिरा होना बुरा क्या है नवा - संजाने - गुलशन[16] को

१. आवेशपूर्ण मिलन, २. बोझ, ३. ग़ैर का जिक्र, ४. शिकायत के तौर पर, ५. सरोकार, ६. शर्मिन्दगी, ७. विचारों का प्रलय, ८. एकान्त, ९. साहस का ह्रास, १०. पश्चात्ताप, ११. दुनिया, १२. मृत्यु, १३. ख़राब आदत वाला; लड़का, १४. पिंजड़ा, १५. रुदन, १६. चमन में चहचहाने वाला।

नहीं गर हमदमी[1] आसां न हो, यह रश्क क्या कम है ?
न दी होती खुदाया आरज़ूए-दोस्त[2] दुश्मन को
न निकला आंख से तेरी इक आंसू उस जराहत पर
किया सीने में जिसने खूंचकां[3] मिज़गाने-सोज़न[4] को
खुदा शर्माए हाथों को कि रखते हैं कशाकश[5] में
कभी मेरे गरीबां को कभी जानां के दामन को
अभी हम क़त्लगाह का देखना आसां समझते हैं
नहीं देखा शनावर[6] जूए-खूं[7] में तेरे तौसन[8] को
हुआ चर्चा जो मेरे पांव की ज़ंजीर बनने का
किया बेताब कां[9] में जुम्बिशे-जौहर[10] ने आहन[11] को
खुशी क्या खेत पर मेरे अगर सौ बार अब आवे
समझता हूं कि ढूण्डे है अभी से वर्क़-खिरमन को
वफ़ादारी बशर्ते-उस्तवारी[12] अस्ल ईमां है
मरे बुतख़ाने में तो काबे में गाड़ो ब्रहमन को
शहादत थी मेरी क़िस्मत में जो दी थी यह खू मुझको
जहां तलवार को देखा झुका देता था गर्दन को
न लुटता दिन को तो कब रात को यों बेखबर सोता
रहा खटका न चोरी का दुआ देता हूं रहज़न[13] को
सुख़न क्या कह नहीं सकते कि जोया[14] हों जवाहर के
जिगर क्या हम नहीं रखते कि खोदें जाके मादन[15] को

---

१. साथ, २. प्रेमी की अभिलाषा, ३. रक्त-रंजित, ४. सूई जैसी पलकें, ५. खींचातानी, ६. होशियार, ७. खून की नदी, ८. घोड़ा, ९. खान, १०. हीरे की करवट, ११. लोहा, १२. दृढ़ता की शर्त के साथ, १३. लुटेरा, १४. ढूंढने वाले, १५. खान ।

मेरे शाहे-सुलेमां जाह से निस्बत नहीं 'ग़ालिब'
फ़रीदूनो-जमो-कैखसरवो-दाराबो-बहमन को

✤ ✤ ✤ ✤ ✤

धोता हूं जब मैं पीने को उस सीमतन[1] के पांव
रखता है ज़िद से खींच के बाहर लगन[2] के पांव
दी सादगी से जान पड़ूं कोहकन के पांव
हैहात! क्यों न टूट गये पीरज़न[3] के पांव
भागे थे हम बहुत सो उसी की सज़ा है ये
होकर असीर[4] दाबते हैं राहज़न के पांव
मरहम की जुस्तुजू में फिरा हूं जो दूर-दूर
तन से सिवा फ़िगार[5] हैं उस ख़स्ता-तन के पांव
अल्लाह रे ज़ौक़े-दश्त-नवर्दी[6] कि बादे-मर्ग[7]
हिलते हैं ख़ुद-बख़ुद मेरे अन्दर कफ़न के पांव
है जोशे-गुल बहार में यां तक कि हर तरफ़
उड़ते हुए उलझते हैं, मुर्ग़े-चमन[8] के पांव
शब[9] को किसी के ख़्वाब में आया नहीं कहीं
दुखते हैं आज उस बुते-नाज़ुक बदन के पांव
'ग़ालिब' मेरे कलाम में क्योंकर मज़ा न हो
पीता हूं धो के ख़ुसरवे-शीरीं-सुख़न[10] के पांव

✤ ✤ ✤ ✤ ✤

---

१. चांदी जैसे शरीर वाला, २. बर्तन, ३. बूढ़ी औरत, ४. कैदी, ५. ज़ख्मी, ६. जंगल में घूमने का शौक़, ७. मृत्यु के बाद, ८. उद्यान का पक्षी, ९. रात, १०. मधुर स्वर वाले खुसरवे (बादशाह 'ज़फ़र' की तरफ़ इशारा है)।

वां उसको हौले - दिल है तो यां मैं हूं शर्मसार
यानी ये मेरी आह की तासीर[1] से न हो
अपने को देखता नहीं ज़ौक़े - सितम तो देख
आईना ताकि दीदए - नख़चीर[2] से न हो

✤ ✤ ✤ ✤ ✤

वां पहुंचकर जो ग़श आता पै - हम[3] है हमको
सद[4] रह आहंग[5] - ज़मीं बोसे - क़दम है हमको
दिल को मैं और मुझे दिल महवे - वफ़ा रखता है
किस क़दर ज़ौक़े - गिरफ़्तारिए - दम[6] है हमको
ज़ोफ़[7] से नक़्शे - पए - मोर है तौक़े गर्दन
तेरे कूचे से कहां ताक़ते - रम[8] है हमको
जान कर कीजे तग़ाफ़ुल[9] कि कुछ उम्मीद भी हो
ये निगाहे - ग़लत - अन्दाज़[10] तो सम[11] है हमको
रश्के - हम - तरहीओ[12] दर्दे - असरे - बांगे - हज़ीं[13]
नालाए - मुर्ग़े - सहर[14] तेग़े - दुदम[15] है हमको
सर उड़ाने के जो वादे को मुकर्रर[16] चाहा
हंस के बोले कि "तेरे सर की क़सम है हमको"

---

१. प्रभाव, २. शिकार की आंख, ३. बार-बार, ४. सौ, ५. आवाज़ का मार्ग, ६. जाल में फंसने की चाह, ७. दुर्बलता, ८. जाने की शक्ति, ९. उपेक्षा, १०. सरसरी नज़र, ११. विष, १२. एक भाषा-भाषी होने की ईर्ष्या, १३. व्यथित स्वर के प्रभाव का दर्द, १४. तरंग रूपी पक्षी का रुदन, १५. दोधारी तलवार, १६. दोबारा।

दिल को ख़ूं करने की क्या वजह ? व लेकिन नाचार
पासे - बे - रौनक़ीए - दीदा[1] अहम[2] है हमको

तुम वो नाज़ुक कि ख़मोशी को फ़ुग़ां[3] कहते हो
हम वो आजिज़[4] कि तग़ाफ़ुल भी है सितम हमको

क़तआ

लखनऊ आने का बाइस नहीं खुलता यानी
हविसे - सैरो - तमाशा सो वो कम है हमको

मक़तए - सिलसिलए - शौक़ नहीं है यह शहर
अज़्मे - सैरे - नजफ़ो[5] तौफ़े - हरम[6] है हमको

लिये जाती है कहीं एक तवक़्क़ो[7] 'ग़ालिब'
जादए - रह[8] कशिशे - काफ़े - करम[9] है हमको

✤ ✤ ✤ ✤ ✤

तुम जानो तुमको ग़ैर से जो रस्मो - राह हो
मुझको भी पूछते रहो तो क्या गुनाह हो

बचते नहीं मावाज़ए - रोज़े - हश्र[10] से
क़ातिल अगर रक़ीब है तो तुम गवाह हो

क्या वो भी बेगुनह - कुशो[11] हक़ - नाशनास[12] हैं
माना कि तुम बशर नहीं ख़ुर्शीदो - माह[13] हो

---

१. आंख की बेरौनकी का लिहाज, २. महत्त्वपूर्ण, ३. आह, ४. लाचार, ५. नजफ़ (तीर्थ) की सैर का निश्चय, ६. काबा की परिक्रमा, ७. आशा, ८. मार्ग का निशान, ९. उदारता का आकर्षण, १०. क़यामत के दिन की जवाब-तलबी, ११. निर्दोष घातक, १२. सत्य को न समझने वाले, १३. सूरज चांद ।

उभरा हुआ नक़ाब में है उनके एक तार
मरता हूं मैं कि ये न किसी की निगाह हो
जब मैंकदा[1] छुटा, तो फिर अब क्या जगह की क़ैद
मस्जिद हो, मदरसा हो, कोई ख़ानक़ाह हो
सुनते हैं जो बहिश्त की तारीफ़, सब दुरुस्त
लेकिन खुदा करे वो तेरी जल्वागाह[2] हो
'ग़ालिब' भी गर न हो तो कुछ ऐसा ज़रर[3] नहीं
दुनिया हो यारब! और मेरा बादशाह हो

❊ ❊ ❊ ❊ ❊

गई वो बात कि हो गुफ़्तगू तो क्योंकर हो
कहे से कुछ न हुआ फिर कहो, तो क्यों कर हो
हमारे ज़हन में इस फ़िक्र का है नाम विसाल[4]
कि गर न हो तो कहां जायं, हो तो क्यों कर हो
अदब है और यही कशमकश[5] तो क्या कीजे
हया[6] है और यही गोमगो[7] तो क्योंकर हो
तुम्हीं कहो कि गुज़ारा सनम - परस्तों[8] का
बुतों की हो अगर ऐसी ही ख़ू तो क्योंकर हो
उलझते हो तुम अगर देखते हो आईना
जो तुम से शहर में हों एक दो, तो क्योंकर हो
जिसे नसीब हो रोज़े - सियाह[9] मेरा सा
वो शख़्स दिन न कहे रात को तो क्योंकर हो

---

१. मधुशाला, २. दर्शन-स्थान, ३. नुक़सान, ४. मिलन, ५. खींचातानी, ६. लज्जा, ७. असमंजस, ८. आशिक़ों, ६. बुरा दिन।

हमें फिर उनसे उमीद और उ[illegible] [illegible] आईना
हमारी बात ही पूछें न वो [illegible] आईना
ग़लत न था हमें ख़त पर गु[illegible]
न माने दीदए-दीदार-जू[1] तो [illegible]
बनाओं इस मिज़्गां[2] को देखकर [illegible]
ये नेश[4] हो रगेजां[5] में फ़रो[6] तो क्या[illegible]
मुझे जुनूं नहीं 'ग़ालिब' वले बक़ौले-हुज़ूर[7]
फ़िराक़े-यार में तस्कीन हो तो क्योंकर हो

* * * * *

किसी को देके दिल कोई नवा-संज-फ़ुग़ां[8] क्यों हो
न हो जब दिल ही सीने में तो फिर मुंह में ज़ुबां क्यों हो
वो अपनी ख़ू[9] न छोड़ेंगे, हम अपनी वज़्अ[10] क्यों बदलें
सुबुक-सर[11] बन के क्या पूछें कि हमसे सरगरां[12] क्यों हो
किया ग़मख़्वार ने रुस्वा, लगे आग इस मुहब्बत को
न लावे ताब जो ग़म की वो मेरा राज़दां[13] क्यों हो
वफ़ा कैसी ? कहां का इश्क़ ? जब सर फोड़ना ठहरा
तो फिर ऐ संग-दिल तेरा ही संगे-आस्तां[14] क्यों हो
क़फ़स में मुझसे रूदादे-चमन[15] कहते न डर हमदम
गिरी है जिसपे कल बिजली वो मेरा आशियां क्यों हो

---

१. दर्शनाभिलाषी आंख, २. पलक, ३. चैन, ४. डंक, ५. नाड़ी, ६. दूर, ७. हुजूर के कथनानुसार, ८. प्रार्थना करने वाला, ९. आदत, १०. मर्यादा, ११. हीन, १२. नाराज़, १३. भेद जानने वाला; मित्र, १४. चौखट का पत्थर, १५. चमन की बात।

उभरा   हकते हो "हम दिल में नहीं हैं" पर यह वतलाओ
मरता , दिल में तुम्हीं तुम हो तो आंखों से निहां[1] क्यों हो
जव.त है जज़्बे - दिल का शिकवा देखो जुर्म किसका है
न खींचो गर तुम अपने को कशाकश दरमियां क्यों हो
यह फ़ितना आदमी की ख़ाना-वीरानी[2] को क्या कम है
हुए तुम दोस्त जिसके दुश्मन उसका आस्मां क्यों हो
यही है आज़माना तो सताना किसको कहते हैं
अदू[3] के हो लिये जब तुम तो मेरा इम्तेहां क्यों हो
कहा तुमने कि "क्यों हो ग़ैर के मिलने में रुस्वाई"[4]
वजा कहते हो, सच कहते हो, फिर कहियो कि 'हां क्यों हो ?'
निकाला चाहता है काम क्या तानों से तू 'ग़ालिब'
तेरे बे - मेहर[5] कहने से वो तुझ पर मेहरवां क्यों हो

✤ ✤ ✤ ✤ ✤

रहिये अब ऐसी जगह चलकर जहां कोई न हो
हम - सुख़न[6] कोई न हो और हम - ज़ुवां[7] कोई न हो
बे दरो - दीवार - सा इक घर वनाया चाहिये
कोई हमसाया न हो और पासबां कोई न हो
पड़िये गर बीमार तो कोई न हो तीमारदार
और अगर मर जाइये तो नौहा - ख़्वां[8] कोई न हो

✤ ✤ ✤ ✤ ✤

---

१. छिपे हुए, २. घर की वरवादी, ३. दुश्मन, ४. वदनामी, ५. निष्ठुर, ६. साथ वोलने वाला, ७. वही भाषा वोलने वाला, ८. रोने वाला ।

अज़ - मेहर - ताबां[1] - ज़र्रा दिलो - दिल है आईना
तूती को शश - जहत[2] से मुक़ाबिल है आईना

⁂ ⁂ ⁂ ⁂ ⁂

है सब्ज़ा ज़ार हर दरो - दीवारे - ग़म - कदा[3]
जिसकी बहार ये हो फिर उसकी खिज़ां न पूछ
नाचार बेकसी की भी हसरत उठाइये
दुश्वारिये - रहो[4] सितमे - हमरहां[5] न पूछ

⁂ ⁂ ⁂ ⁂ ⁂

शबे - वसाल[6] में मूनस[7] गया है बन तकिया
हुआ है मूजन्ते - आरामे - जानोतन[8] तकिया
ख़िराज बादशहे - चीं से क्यों न माँगू आज
कि बन गया है खमे - ज़ाद[9], पुरशिकन[10] तकिया
बना है तख़्तरा - गुलहाय - यास्मीं[11] बिस्तर
हुआ है दस्तरा - नसरीनो - नस्तरन[12] तकिया
फरोग़े - हुस्न से रौशन है ख़्वाबगाह तमाम
जो रख़्ते ख्वाब है परवीं, तो परन तकिया
मज़ा मिले कहो क्या खाक साथ सोने का
रखे जो बीच में वह शोख़े सीमतन तकिया

---

१. चमकता हुआ सूरज, २. छः दिशाएं, ३. विवाद-गृह, ४. मार्ग की कठिनाई, ५. हमराही, ६. मिलन-रात्रि, ७. साथी, ८. जान और तन के लिए आराम का साधन, ९. माथे की त्योरी, १०. सलवटों वाला, ११. यास्मीं के फूलों का तख़्ता, १२. नसरीन और नस्तरन नाम के फूलों का गुलदस्ता।

अगरचे था यह इरादा मगर खुदा का शुक्र
उठा सका न नज़ाकत से गुलवदन तकिया
हुआ है काट के चादर को नागहाँ[१] ग़ायव
अगरचे ज़ानूरा नल[२] पर रखे दमन तकिया
व ज़र्बे-तेशा[३] वह इस वास्ते हलाक हुआ
किज़र्बे-तेश पे रखता था कोहकन तकिया[४]
यह रात भर का है हंगामा सुवह होने तक
रखो न शम्अ पर ऐ अहले-अंजमन तकिया
अगरचे फेंक दिया तुमने दूर से लेकिन
उठाये क्योंकि यह रंजूरे-खस्ता तने[५] तकिया
ग़श आगया जो पस-अज़-क़त्ल[६] मेरे क़ातिल को
हुई फिर उसको मेरी नाशे-वे-कफ़न तकिया
शवे-फ़िराक़[७] में यह हाल है आज़ीयत[८] का
कि साँप फ़र्श है और साँप का है मन तकिया
ख़ा[९] रखो न रखो, था जो लफ़्ज़ तकिया-कलाम
अव उसको कहते हैं अहले-सुख़न सुख़न-तकिया
हम और तुम फ़लके-पीर[१०] जिसको कहते हैं
फ़क़ीर 'ग़ालिव' मस्कीं का है कुहन[११] तकिया

* * * * *

सद-जल्वा[१२] रूवरू है जो मिज़गां उठाइये
ताक़त कहां कि दीद[१३] का एहसां उठाइये

---

१. सहसा, २. नल की जाँच, ३. तेशे की चोट से, ४. भरोसा, ५. दुर्बल शरीर; रोगी, ६. क़त्ल के बाद, ७. वियोग-रात्रि, ८. पीड़ा, ९. उचित, १०. वड़ा आस्मान, ११. पुराना, १२. सौ आकर्षणों के साथ, १३. देखना।

है संग पर बराते - मआशे - जुनूने - इश्क़[1]
यानी हनूज़ मिन्नते - तिफ़लां[2] उठाइये
दीवार, बारे - मिन्नते - मज़दूर[3] से है ख़म
ऐ ख़ानुमां - ख़राब[4] न एहसां उठाइये
या मेरे ज़ख़्मे - रश्क को रुस्वा[5] न कीजिये
या परदए - तबस्सुमे - पिन्हां[6] उठाइये

* * * * *

मैं हूं मुश्ताक़े - जफ़ा[7] मुझ पं जफ़ा और सही
तुम हो बे बेदाद[8] से ख़ुश इससे सवा और सही
ग़ैर की मर्ग[9] का ग़म किसलिए ऐ ग़ैरते - माह[10]
हैं हविस - पेशा[11] बहुत वो न हुआ और सही
तुम हो बुत[12] फिर तुम्हें पिंदारे - ख़ुदाई[13] क्यों है
तुम ख़ुदावन्द कहलाओ सदा और सही
हुस्न में हूर से बढ़कर नहीं होने के कभी
आपका शेवए - आंदाज़ो - अदा और सही
तेरे कूचे का है मायल[14] दिले - मुज़्तर[15] मेरा
काबा इक और सही, क़िबला - नुमा और सही
कोई दुनिया में मगर बाग़ नहीं है वाअज़[16]
ख़ुल्द[17] भी बाग़ है ख़ैर आबो - हवा और सही

---

१. प्रेम के उन्माद का गुबारा, २. बच्चों का एहसान, ३. मजदूर के एहसान का बोझ, ४. जिसका घर बरबाद हो चुका हो, ५. बदनाम, ६. छिपी मुस्कराहटों का पर्दा ७. निष्ठुरता का इच्छुक, ८. अत्याचार, ९. मृत्यु, १०. जिसके सौंदर्य से चांद भी शर्माये, ११. वासना के दास, १२. माशूक़; सुन्दर व्यक्ति, १३. खुदाई का घमण्ड, १४. प्रवृत्त, १५. विकल मन, १६. उपदेशक, १७. स्वर्ग ।

क्यों न फ़िरदौस[1] में दोज़ख़[2] को मिलालें, यारब
सैर के वास्ते थोड़ी - सी फ़िज़ा और सही
मुझको वो दो कि जिसे खा के न पानी मांगं
ज़हर कुछ और सही, आबे - बक़ा[3] और सही
मुझ से 'ग़ालिब' यह अल्लाई ने ग़ज़ल लिखवाई,
एक बेदाद - गरे - रंज - फ़ज़ा[4] और सही

* * * * *

मस्जिद के ज़ेरे - साया ख़राबात चाहिये
भौं पास आंख क़िबलए - हाजात[5] चाहिये
आशिक़ हुए हैं आप भी इक और शख़्स पर
आख़िर सितम की कुछ तो मकाफ़ात[6] चाहिये
दे दाद ऐ फ़लक ! दिले - हसरत - परस्त की
हां कुछ न कुछ तलाफ़िए - माफ़ात[7] चाहिये
सीखे हैं मैरुख़ों[8] के लिये हम मुसव्विरी[9]
तक़रीब[10] कुछ तो बहरे - मुलाक़ात चाहिये
मै से ग़रज़ निशात है किस रूसियाह[11] को
इक - गूना[12] बेख़दी मुझे दिन रात चाहिये
है रंगे - लालओ - गुलो - नसरीं जुदा - जुदा
हर रंग में बहार का अस्बात[13] चाहिये
सर पाए - ख़ुम[14] पे चाहिये हंगामे-बेख़दी[15]
रू[16] सूए - क़िब्ला वक़्ते - मुनाजात[17] चाहिये

१. स्वर्ग, २. नरक, ३. अमृत, ४. दुख बढ़ाने वाला, ५. दूसरों की आवश्यकताएं पूरी करने वाला, ६. बदला, ७. गुजरी हुई बात की पूर्ति, ८. चांद सी सूरत वाले, ९. चित्रकारी, १०. बहाना, ११. कलमुंहा, १२. एक प्रकार की, १३. प्रमाण, १४. शराब के मटके के पांव, १५. नशे के समय, १६. मुंह, १७. प्रार्थना।

नश्वो - नुमा है अस्ल से 'ग़ालिब' फ़रोश्र[1] को
ख़ामोशी ही से निकले है जो बात चाहिये

✣ ✣ ✣ ✣ ✣

बिसाते - इज्ज़ में था एक दिल यक क़तरा - ख़ूं वो भी
सो रहता है बअन्दाज़े चकीदन[2] सरनिगूं वो भी
रहे उस शोख़ से आज़ुर्दा[3] हम चन्दे - तकल्लुफ़ से
तकल्लुफ़ बरतरफ़ था एक अदान्ज़े - जुनूं वो भी
ख़याले - मर्ग कब तस्की दिले - आज़ुर्दा को बख़्शे
मेरे दामे - तमन्ना में है इक सैदे - ज़ुबू[4] वो भी
न करता काश नाला, मुझको क्या मालूम था हमदम
कि होगा बाइसे - अफ़ज़ाइशे दर्दे - दरूं[5] वो भी
न इतना बुर्रिशे - तेग़े - जफ़ा[6] पर नाज़ फ़रमाओ
मेरे दरियाए - बेताबी में है इक मौजे - ख़ूं वो भी
मए इशरत की ख़्वाहिश साक़िए - गर्दूं[7] से क्या कीजे
लिये बैठा है इक दो चार जामे - बाज़गूं[8] वो भी
मेरे दिल में है 'ग़ालिब' शौक़े - वस्लो - शिकवए - हिजरां
ख़ुदा वो दिन करे जो उससे मैं यह भी कहूं वो भी

✣ ✣ ✣ ✣ ✣

है बज़्मे - बुतां में सुख़न आज़ुर्दा[9] - लबों से
तंग आये हैं हम ऐसे ख़ुशामद तलबों से

---

१. टहनियों और पत्तों का विकास जड़ के कारण होता है, २. टपकना, ३. नाराज़, ४. कमज़ोर शिकार, ५. भीतरी दर्द, ६. अत्याचार रूपी तलवार की धार, ७. आसमान का साकी, ख़ुदा; ८. औंधे प्याले, (आकाश को औंधा प्याला कहते हैं और इस्लाम के अनुसार आकाश सात हैं।) ९. क्रुद्ध।

है दौरे - क़दह[1] वज्हे परीशानिए - सहबा[2]
यक बार लगादो ख़ुमे - मै मेरे लबों से
रिन्दाने - दरे - मैकदा, गुस्ताख़ हैं ज़ाहिद
ज़िन्हार न होना तरफ़ इन बेअदबों से
बेदादे - वफ़ा देखा कि जाती रही आख़िर
हर - चन्द मेरी जान को था रब्त[3] लबों से

✣ ✣ ✣ ✣ ✣

ता, हमको शिकायत की भी बाक़ी न रहे जा
सुन लेते हैं जो ज़िक्र हमारा नहीं करते
'ग़ालिब' तिरा अहवाल सुना देंगे हम उनको
वो सुन के बुलालें यह इज़ारा[4] नहीं करते

✣ ✣ ✣ ✣ ✣

ग़मे - दुनिया से गर पाई भी फ़ुर्सत सर उठाने की
फ़लक़ का देखना, तक़रीब तेरे याद आने की
खुलेगा किस तरह मज़मूं मेरे मकतूब[5] का यारब
क़सम खाई है उस काफ़िर ने काग़ज़ के जलाने की
लिपटना परनियां[6] में शोलए - आतिश का आसां है
वले मुश्किल है हिकमत, दिल में सोज़े - ग़म छिपाने की
उन्हें मंज़ूर अपने ज़ख़्मियों का देख आना था
उठे थे सैरे - गुल को, देखना शोख़ी बहाने की

---

१. प्याले के दौर, २. शराब, ३. लगाव, ४. ठेका, ५. पत्र, ६. मखमल।

हमारी सादगी थी इल्तफ़ाते - नाज़[1] पर मरना
तेरा आना न था ज़ालिम मगर तम्हीद[2] जाने की
लकदकोबे - हवादिस[3] का तहम्मुल[4] कर नहीं सकती
मेरी ताक़त कि ज़ामिन थी बुतों के नाज़ उठाने की
कहूं क्या खूबिए - औज़ाए - अबनाए - ज़मां[5] 'ग़ालिब'
बदी की उसने जिससे, की थी हमने बारहा नेकी

✣ ✣ ✣ ✣ ✣

हासिल से हाथ धो बैठ ऐ आरज़ू - ख़रामी
दिल जोशे गिरिया में है डूबी हुई असामी
उस शम्अ की तरह से जिसको कोई बुझादे
मैं भी जले हुवों में हूँ दाग़े - ना - तमामी

✣ ✣ ✣ ✣ ✣

क्या तंग हम सितमज़दगां का जहान है
जिसमें कि एक बैज़ए - मोर[6] आसमान है
है कायनात को हरकत तेरे ज़ौक़ से
परतौ[7] से आफ़ताब के ज़र्रे में जान है
हालांकि हैं यह सैलिए - ख़ारा[8] से लालारंग
ग़ाफ़िल को मेरे शीशे पे मै का गुमान है
की उसने गर्म सीनए - अहले - हविस में जां
आवे न क्यों पसन्द कि ठण्डा मकान है

---

१. प्रेमी की कृपा, २. प्रारंभ, ३. मुसीबतों की लात खाये हुए, ४. सहन, ५. दुनियावालों के स्वभाव की विशेषता, ६. चींटी का अंडा, ७. प्रतिबिंब, ८. पत्थर की चोट।

क्या ख़ूब तुमने ग़ैर को बोसा नहीं दिया
बस चुप रहो, हमारे भी मुंह में ज़ुबान है
बैठा है जो कि सायए - दीवारे - यार में
फ़रमां - रवाए - किशवरे - हिन्दोस्तान[1] है
हस्ती का एतबार भी ग़म ने मिटा दिया
किससे कहूं कि दाग़, जिगर का निशान है
है वारे - एतमादे - वफ़ादारी इस क़दर
'ग़ालिब' हम इसमें खुश हैं कि नामेहरबान है

* * * * *

दर्द से मेरे है तुझको बेक़रारी हाय हाय
क्या हुई ज़ालिम तेरी ग़फ़लत - शाअरी[2] हाय हाय
तेरे दिल में गर न था आशोबे - ग़म[3] का हौसला
तूने फिर क्यों की थी मेरी ग़मगुसारी हाय हाय
क्यों मेरी ग़मख़्वारगी का तुझको आया था ख़याल
दुश्मनी अपनी थी मेरी दोस्तदारी हाय हाय
उम्र भर का तूने पैमाने - वफ़ा बांधा तो क्या
उम्र को भी तो नहीं है पायेदारी[4] हाय हाय
ज़हर लगती है मुझे आबो - हवाए - ज़िन्दगी
यानी तुझसे थी उसे नासाज़गारी हाय हाय
गुलफ़िशानी - हाये नाज़े - जल्वा को क्या हो गया
ख़ाक पर होती है तेरी लालाकारी हाय हाय

---

१. हिन्दोस्तान की सल्तनत का शासक, २. उदासीनता, ३. ग़म सहना, ४. स्थिरता ।

शर्मे - रुस्वाई से, जा छुपना नक़ाबे - ख़ाक में
ख़त्म है उल्फ़त की तुझ पर परदादारी हाय हाय
ख़ाक में नामूसे - पैमाने - मुहब्बत[1] मिल गई
उठ गई दुनिया से राहो - रस्मे - यारी हाय हाय
हाथ ही तेग़ - आज़मा का काम से जाता रहा
दिल पे इक लगने न पाया ज़ख़्म - कारी[2] हाय हाय
किस तरह काटे कोई शब - हाये - तारे - बर्शकाल[3]
है नज़र ख़ू - करदए - अख़्तर शुमारी[4] हाय हाय
गोश[5] मेहजूरे - पयामो[6] चश्म मेहरूमे - जमाल
एक दिल, तिस पर ये नाउम्मीदवारी, हाय हाय
इश्क़ ने पकड़ा न था, 'ग़ालिब', अभी वहशत का रंग
रह गया, था दिल में जो कुछ ज़ौक़े - ख़्वारी हाय हाय

✣ ✣ ✣ ✣ ✣

सरगश्तगी[7] में, आलमे - हस्ती से यास है
तस्कीं को दे नवेद, कि मरने की आस है
लेता नहीं मेरे दिले - आवारा की ख़बर
अब तक वो जानता है, कि मेरे ही पास है
कीजे बयां सुरूरे - तबे - ग़म कहां तलक
हर मू[8] मेरे बदन पे ज़ुबाने - सिपास[9] है
है वो ग़ुरूरे - हुस्न से बेगानए - वफ़ा
हर चन्द उसके पास दिले - हक़ शनास है

---

१. प्रेम के वचन की प्रतिष्ठा, २. गहरा घाव, ३. बरसात की अंधेरी रात, ४. तारे गिनने की आदत, ५. कान, ६. संदेश सुनने से लाचार, ७. उन्माद ; सिर फिरना, ८. रुआं, ९. प्रशंसा करने वाला जिह्वा।

पी, जिस क़दर मिले, शबे - मेहताब - में शराब
इस बलग़मी मिज़ाज को गर्मी ही रास है
हर इक मकान को है मकीं से शरफ़, 'असद'
मजनूं जो मर गया है, तो जंगल उदास है

✤ ✤ ✤ ✤ ✤

गर ख़ामुशी से फ़ायदा, इख़फ़ाए - हाल[1] है
ख़ुश हूँ, कि मेरी बात समझनी मुहाल है
किसको सुनाऊं हसरते - इज़्हार का गिला
दिल फ़र्दे - जमो - ख़र्च ज़ुबां - हाए - लाल है
किस पर्दे में है आइना परदाज़, ऐ ख़ुदा
रहमत, कि उज़्रख़्वाह लबे - बेसवाल है
है है, ख़ुदा न ख़्वास्ता वो और दुश्मनी
ऐ शौक़, मुनफ़इल,[2] यह तुझे क्या ख़याल है
वहशत पे मेरी अर्सए - आफ़ाक़[3] तंग था
दरिया ज़मीन को अरक़े - इनफ़िआल[4] है
हस्ती के मत फ़रेब में आजाइयो 'असद'
आलम तमाम हल्क़ए - दामे - ख़याल[5] है

✤ ✤ ✤ ✤ ✤

एक जा हर्फ़े - वफ़ा लिक्खा था सो भी मिट गया
ज़ाहिरा काग़ज़ तेरे ख़त का ग़लत बरदार है

---

१. हाल का छिपना, २. लज्जित, ३. दुनिया का विस्तार, ४. पश्चात्ताप का पसीना, ५. ख़्याल का चक्कर ; माया ; छलना ।

जी जले ज़ौक़े-फ़ना की नातमामी पर न क्यों
हम नहीं जलते, नफ़स हर चन्द आतिशवार है
आग से, पानी में बुझते वक़्त, उठती है सदा
हर कोई दरमान्दगी[1] में नाले से नाचार है
है वही बदमस्तिए-हर ज़र्रे का खुद उज़रख़्वाह
जिसके जल्वे से ज़मीं ता आसमां सरशार है
मुझसे मत कह, "तू हमें कहता था अपनी ज़िन्दगी"
ज़िन्दगी से भी मेरा जी इन दिनों बेज़ार है
आंख की तस्वीर सरनामे[2] पे खेंची है, कि ता
तुझ पे खुल जावे, कि इसको हसरते-दीदार है

✣ ✣ ✣ ✣ ✣

पीनस में गुज़रते हैं जो कूचे से वो मेरे
कंधा भी कहारों को बदलने नहीं देते

✣ ✣ ✣ ✣ ✣

मेरी हस्ती फ़ज़ाए-हैरत आबादे-तमन्ना है
जिसे कहते हैं नाला वो इसी आलम का अन्क़ा है
ख़ज़ां क्या, फ़स्ले-गुल कहते हैं किसको, कोई मौसम हो
वही हम हैं, क़फ़स है, और मातम बालो-पर का है
वफ़ाए-दिलबरां है इत्तफ़ाक़ी, वरना ऐ हमदम
असर फ़रियादे-दिलहाए-हज़ीं[3] का, किसने देखा है

---

१. थकन, २. खत पर लिखा हुआ पता, ३. उदास; व्याकुल।

न लाई शोख़िए - अन्देशा तावे - रंजे - नौमीदी[1]
कफ़े - अफ़सोस मलना अहदे - तजदीदे - तमन्ना[2] है

✣ ✣ ✣ ✣ ✣

रहम कर ज़ालिम, कि क्या बूदे - चराग़े - कुश्ता[3] है
नब्ज़े - बीमारे - वफ़ा, दूदे - चराग़े - कुश्ता है
दिल लगी की आरज़ू, बेचैन रखती है हमें
वरना यां बेरौनक़ी, सूदे - चराग़े - कुश्ता है

✣ ✣ ✣ ✣ ✣

इश्क़ मुझको नहीं, वहशत ही सही
मेरी वहशत, तेरी शोहरत ही सही
क़त्अ कीजे न ताल्लुक़ हम से
कुछ नहीं है, तो अदावत ही सही
मेरे होने में है क्या रुसवाई ?
ऐ, वो मजलिस नहीं, ख़लवत ही सही
हम भी दुश्मन तो नहीं हैं अपने
ग़ैर को तुझसे मुहब्बत ही सही
अपनी हस्ती ही से हो, जो कुछ हो
आगही[4] गर नहीं ग़फ़लत ही सही
उम्र हर चन्द कि है बर्क़ - ख़राम[5]
दिल के ख़ूं करने की फ़ुर्सत ही सही
हम कोई तर्के - वफ़ा करते हैं ?
न सही इश्क़, मुसीबत ही सही

१. निराशा का रंज, २. फिर तमन्ना करने की प्रतिज्ञा, ३. बुझा हुआ चिराग़, ४. चेतना, ५. बिजली की तरह तेज़ चलने वाली।

कुछ तो दे, ऐ फ़लके - ना - इंसाफ़
आहो - फ़रियाद की रुख़सत ही सही
हम भी तस्लीम की ख़ू डालेंगे
बेनियाज़ी तेरी आदत ही सही
यार से छेड़ चली जाय, 'असद'
गर नहीं वस्ल, तो हसरत ही सही

* * * * *

है आरमीदगी[1] में निकोहिश[2] बजा मुझे
सुब्हे - वतन है ख़न्दए - दन्दां - नुमा मुझे
ढूंडे है उस मुग़न्निए - आतिश - नफ़स[3] को जी
जिसकी सदा हो जल्वए बर्क़े - फ़ना - मुझे
मस्ताना तै करूं हूं रहे - वादिए - ख़याल
ता बाज़गश्त[4] से न रहे मुद्दआ मुझे
करता है बस कि बाग़ में तू बेहिजाबियां
आने लगी है नकहते - गुल से हया मुझे
खुलता किसी पे क्यों मेरे दिल का मुआमला
शेरों के इन्तख़ाब ने रुस्वा किया मुझे

* * * * *

ज़िन्दगी अपनी जब इस शक्ल से गुज़री 'ग़ालिब'
हम भी क्या याद करेंगे, कि ख़ुदा रखते थे

---

१. आरामतलबी, २. कमज़ोरी; निंदा, ३. आग बरसाने वाला गायक, ४. पलट आना ; वापसी ।

1278



उस बज़्म में मुझे नहीं बनती हया किये
बैठा रहा अगरचे इशारे हुआ किये
दिल ही तो है सियासते - दरबां से डर गया
मैं, और जाऊं दर से तेरे, बिन सदा किये
रखता फिरूं हूं, ख़िरक़ओ - सज्जाद[1] रहने - मै
मुद्दत हुई है दावते - आबो - हवा किये
बेसर्फ़ा[2] ही गुज़रती है, हो गरचे उम्रे - ख़िज़्र
हज़रत भी कल कहेंगे, कि हम क्या किया किये
मक़दूर हो तो ख़ाक से पूछूं कि, ओ लईम[3]
तूने वो गंज - हाए - गिराँमाया[4] क्या किये
किस रोज़ तोहमतें न तराशा किये अदू
किस दिन हमारे सर पे न आरे चला किये
सोहबत में ग़ैर की, न पड़ी हो कहीं ये ख़ू
देने लगा है बोसे बग़ैर इल्तिजा किये
ज़िद की है और बात मगर ख़ू बुरी नहीं
भूले से उसने सैकड़ों वादे वफ़ा किये
'ग़ालिब', तुम्हीं कहो, कि मिलेगा जवाब क्या
माना कि तुम कहा किये और वो सुना किये



देखना क़िस्मत, कि आप अपने पे रश्क आजाये है
मैं उसे देखूं, भला कब मुझसे देखा जाये है

---

१. नमाज़ पढ़ने की चटाई और पहनावा, २. व्यर्थ, ३. कंजूस, ४. बड़े-बड़े खज़ाने अर्थात् महान् व्यक्तित्व।

हाथ धो[1] दिल से, यही गर्मी गर अन्देशे[2] में है
आबगीना,[3] तुन्दिए-सहबा[4] से पिघला जाये है

ग़ैर को, यारब! वो क्योंकर मन्ए-गुस्ताख़ी करे
गर हया भी उसको आती है, तो शर्मा जाये है

शौक़ को यह लत, कि हर दम नाला खींचे[5] जाइये
दिल की वो हालत, कि दम लेने से घबरा जाये है

दूर चश्मे-बद! तेरी बज़्मे-तरब[6] से, वाह, वाह
नग़मा हो जाता है, वां गर नाला मेरा जाये है

गरचे हैं तर्ज़े-तग़ाफ़ल, पर्दादारे-राज़े-इश्क़
पर हम ऐसे खोये जाते हैं, कि वो पा जाये

उसकी बज़्म आराइयां सुनकर, दिले-रंजूर, यां
मिस्ले-नक़्शे-मुद्दआए-ग़ैर[7] बैठा जाये है

होके आशिक़, वो परी रुख़, और नाज़ुक बन गया
रंग खुलता जाये है, जितना कि उड़ता जाये है

नक़्श को उसके, मुसव्विर[8] पर भी क्या क्या नाज़ है
खींचता है जिस क़दर, उतना ही खिंचता जाये है

साया मेरा, मुझसे मिस्ले-दूद[9] भागे है, 'असद'
पास मुझ आतिश-बजाँ[10] के, किससे ठहरा जाये है

✢ ✢ ✢ ✢ ✢

कसरत आराइए-वहदत है परस्तारिए-वहम
कर दिया काफ़िर, इन असनामे-ख़याली[11] ने मुझे

---

१. खो बैठना, २. चिन्तन, ३. शीशे का प्याला, ४. शराब की गर्मी, ५. रुदन करना, ६. ख़ुशी की महफ़िल, ७. दूसरे के प्रेम की छाप के समान, ८. चित्रकार, ९. धुएं के समान, १०. जिसके तन में आग भड़कती हो, ११. काल्पनिक प्रतिमा।

हविसे - गुल का तसव्वुर[1] में खटका न रहा
अजब आराम दिया, बेपरों - वाली[2] ने मुझे

* * * * *

उग रहा है दरो - दीवार से सब्ज़ा, 'ग़ालिब'
हम बयाबां में हैं और घर में बहार आई है

* * * * *

सादगी पर उसकी, मर जाने की हसरत, दिल में है
बस नहीं चलता, कि फिर ख़ंजर कफ़े - क़ातिल[3] में है
देखना तक़रीर की लज़्ज़त, कि जो उसने कहा
मैंने ये जाना, कि गोया ये भी मेरे दिल में है
गरचे है किस किस बुराई से, वले बा - ईं - हमा[4]
ज़िक्र मेरा, मुझसे बेहतर है, कि उस महफ़िल में है
बस, हुजूमे - नाउमीदी, ख़ाक में मिल जायगी
ये जो इक लज़्ज़त हमारी सइए - बे - हासिल[5] में है
रंजे - रह क्यों खींचिये ? वामान्दगी से इश्क़ है
उठ नहीं सकता, हमारा जो क़दम मंज़िल में है
जल्वा - राज़े - आतिशे - दोज़ख़,[6] हमारा दिल सही
फ़ितनाए - शोरे - क़यामत, किसके आबो - गिल[7] में है
है दिले - शोरीदए[8] 'ग़ालिब,' तिलिस्मे पेचो - ताब
रहम कर अपनी तमन्ना पर, कि किस मुश्किल में है

---

१. कल्पना, २. पंखों के न होने ने, ३. क़ातिल के हाथ, ४. इसके बावजूद, ५. व्यर्थ प्रयास, ६. नरक की आग से परिचित, ७. मिट्टी, ८. पागल दिल ।

* * * * *

दिल से तेरी निगाह जिगर तक उतर गई
दोनों को इक अदा में रज़ामन्द कर गई

शक़[1] हो गया है सीना, खुशा लज़्ज़ते-फ़िराक़[2]
तकलीफ़े पर्दादारिए ज़ख़्मे-जिगर गई

वो बादए-शबाना[3] की सर-मस्तियां कहां
उठिये बस अब, कि लज़्ज़ते-ख़्वाबे-सहर गई

उड़ती फिरे है खाक मेरी, कूए-यार में
बारे अब ऐ हवा, हविसे-बालो पर गई

देखो तो, दिल-फरेबिए अन्दाज़े-नक़्शे पा
मौजे-ख़िरामे-यार भी, क्या गुल कतर गई

हर बुलहविस[4] ने हुस्न-परस्ती-शिआर[5] की
अब आबरूए-शेवए-अहले-नज़र[6] गई

नज़्ज़ारे ने भी, काम किया वां नक़ाब का
मस्ती से हर निगाह तेरे रुख़ पर बिखर गई

फ़रदा-ओ-दी[7] का तफ़रक़ा[8] यक बार मिट गया
कल तुम गये, कि हम पे क़यामत गुज़र गई

मारा ज़माने ने, असदुल्ला खां, तुम्हें
वो वलवले कहां, वो जवानी किधर गई

* * * * *

तस्कीं को हम न रोयें, जो ज़ौक़े-नज़र मिले
हूराने-ख़ुल्द में तेरी सूरत मगर मिले

१. फट गया. २. वियोग का आनन्द, ३. बासी शराब, ४. व्यसनी, ५. सौन्दर्य-पूजा को आदत बना लिया, ६. हुस्न की परख करने वालों की इज्ज़त, ७. कल परसों, ८. अंतर।

अपनी गली में, मुझको न कर दफ़्न, बादे-क़त्ल
मेरे पते से ख़ल्क़ को क्यों तेरा घर मिले

साक़ीगरी की शर्म करो आज वरना हम
हर शब पिया ही करते हैं मै, जिस क़दर मिले

तुझसे तो कुछ कलाम नहीं, लेकिन ऐ नदीम
मेरा सलाम कहियो, अगर नामावर मिले

तुमको भी हम दिखायें, कि मजनूं ने क्या किया
फ़ुर्सत कशाकशे-ग़मे-पिन्हां[1] से गर मिले

लाज़िम नहीं, कि ख़िज़्र की हम पैरवी करें
माना कि इक बुज़ुर्ग हमें हम-सफ़र मिले

ऐ साकिनाने-कूचए-दिलदार देखना
तुमको कहीं जो ग़ालिबे-आशुफ़्ता सर मिले

✢ ✢ ✢ ✢ ✢

कोई दिन, गर ज़िन्दगानी और है
अपने जी में हमने ठानी और है

आतिशे-दोज़ख़[2] में, ये गर्मी, कहां
सोज़े-ग़म-हाए-निहानी[3] और है

बारहा देखी हैं उनकी रंजिशें
पर कुछ अब के सर-गरानी[4] और है

दे के ख़त, मुंह देखता है नामावर
कुछ तो पैग़ामे-ज़ुबानी और है

क़ातए-आमार[5] हैं अक्सर नुजूम[6]
वो बलाये-आसमानी और है

१. आंतरिक पीड़ा की व्याकुलता, २. नरक की आग, ३. आंतरिक संताप की जलन, ४. नाराज़ी, ५. जान लेने वाले, ६. सितारे।

हो चुकीं, 'ग़ालिब', बलायें सब तमाम
एक मर्गे - नागहानी और है

✤ ✤ ✤ ✤ ✤

कोई उम्मीद बर नहीं आती
कोई सूरत नज़र नहीं आती
मौत का एक दिन मुऐयन[1] है
नींद क्यों रात भर नहीं आती
आगे आती थी हाले - दिल पे हँसी
अब किसी बात पर नहीं आती
जानता हूं सवाबे - ताअतो - ज़ोहद[2]
पर तबीअत इधर नहीं आती
है कुछ ऐसी ही बात, जो चुप हूं
वरना क्या बात कर नहीं आती
क्यों न चीखूं, कि याद करते हैं
मेरी आवाज़ गर नहीं आती
दाग़े - दिल गर नज़र नहीं आता
बू भी ऐ चारागर नहीं आती
हम वहां हैं, जहां से हमको भी
कुछ हमारी ख़बर नहीं आती
मरते हैं आरज़ू में मरने की
मौत आती है, पर नहीं आती

---

१. निश्चित, २. ईश्वर-पूजा और धार्मिककर्म का पुण्य।

काबा किस मुंह से जाओगे 'ग़ालिब'
शर्म तुमको मगर नहीं आती

✣ ✣ ✣ ✣ ✣

दिले - नादां, तुझे हुआ क्या है
आख़िर इस दर्द की दवा क्या है
हम हैं मुश्ताक़ और वो बेज़ार
या इलाही, ये माजरा क्या है
मैं भी मुंह में जबान रखता हूं
काश, पूछो, कि "मुद्दआ क्या है?"
जबकि तुझ बिन नहीं कोई मौजूद
फिर ये हंगामा ऐ ख़ुदा क्या है
ये परीचेहरा लोग कैसे हैं
ग़मज़ओ - अश्वओ - अदा क्या है
शिकने - जल्फ़े - अम्बरीं[1] क्यों है
निगाहे - चश्मे - सुर्मा - सा क्या है
सब्ज़ओ गुल कहां से आये हैं
अब्र क्या चीज़ है, हवा क्या है
हमको उनसे, वफ़ा की है उम्मीद
जो नहीं जानते, वफ़ा क्या है
"हां भला कर तेरा भला होगा"
और दर्वेश की सदा क्या है
जान तुम पर निसार करता हूं
मैं नहीं जानता, दुआ क्या है

१. सुगन्ध बिखेरती हुई जुल्फ।

मैंने माना कि कुछ नहीं 'ग़ालिब'
मुफ़्त हाथ आये, तो बुरा क्या है

✣ ✣ ✣ ✣ ✣

फिर कुछ इक दिल को बेक़रारी है
सीना जोयाए - ज़ख़्मे - कारी[1] है
फिर जिगर खोदने लगा नाख़ुन
आमदे - फ़स्ले - लालाकारी है
क़िबलए - मक़सदे - निगाहे - नियाज़[2]
फिर वही परदए - अमारी है
चश्मे - दल्लाल जिंसे - रुस्वाई[3]
दिल ख़रीदारे - ज़ौक़े - ख़्वारी[4] है
वही सदरंग नाला - फ़रसाई[5]
वही सद - गूना[6] अश्कबारी[7] है
दिल हवाए - ख़रामे - नाज़ से फिर
महशरिस्ताने - बेक़रारी है
जल्वा फिर अर्ज़े - नाज़ करता है
रोज़े बाज़ारे जां - सिपारी[8] है
फिर उसी बेवफ़ा पे मरते हैं
फिर वही ज़िन्दगी हमारी है
फिर खुला है दरे - अदालते - नाज़
गर्म बाज़ारे - फ़ौजदारी है

---

१. गहरे घाव का इच्छुक, २. प्यार भरी आँख का अभिप्राय, ३. बदनामी की सामग्री, ४. बदनामी के उन्माद का ख़रीदार, ५. रुदन करना, ६. सौ तरह, ७. आँसू बहाना, ८. जान न्योछावर करना।

हो रहा है जहान में अंधेर
ज़ुल्फ़ की फिर सरिश्ता - दारी है
फिर दिया पारए - जिगर ने सवाल
एक फ़र्यादो - आहो - ज़ारी है
फिर हुये हैं गवाहे - इश्क़ तलब
अश्क - बारी का हुक्म जारी है
दिलो - मिज़गां का जो मुक़दमा था
आज फिर उसकी रूबकारी है
बे खुदी बे सबब नहीं, 'ग़ालिब'
कुछ तो है जिसकी पर्दादारी है

✣ ✣ ✣ ✣ ✣

जुनूं तोहमत - कशे - तस्कीं[1] न हो, गर शादमानी की
नमक - पाशे - ख़राशे - दिल[2] है, लज़्ज़त ज़िन्दगानी की
कशाकशहाए - हस्ती से करे क्या सईए-आज़ादी[3]
हुई ज़ंजीर, मौजे - आब को फ़ुर्सत रवानी की
पस-अज़-मुर्दन[4] भी, दीवाना ज़ियारत - गाहे - तिफ़लां है
शरारे - संग[5] ने तुरबत[6] पे मेरी गुलफ़िशानी की

✣ ✣ ✣ ✣ ✣

निकोहिश है सज़ा, फरियादिए - बेदादे - दिलबर[7] की
मबादा[8] ख़न्दए - दन्दां - नुमा[9] हो सुब्हो - महशर[10] की

१. सांत्वना का आरोप लगाना, २. दिल के घाव पर नमक छिड़कना, ३. स्वतंत्रता का प्रयास, ४. मरने के पश्चात, ५. पत्थर की आग, ६. क़ब्र, ७. प्रेमी की निष्ठुरता, ८. ऐसा न हो, ९. खिलखिलाकर हंसना, १०. क़यामत की सुबह ।

रगे - लैला को ख़ाके - दश्ते - मजनूं, रेशगी ब़ख़्शे
अगर वो दे बजाये दाना दहक़ां[1], नोक नश्तर की
परे - परवाना, शायद बादबाने - किश्तिए - मै था
हुई मजलिस की गर्मी से रवानी दौरे - साग़र की
करूं बेदादे - ज़ौक़े - पुरफ़िशानी अर्ज़, क्या क़ुदरत
कि ताक़त उड़ गई, उड़ने से पहले, मेरे शहपर[2] की
कहां तक रोऊं, उसके ख़ेमे के पीछे, क़यामत है
मेरी क़िस्मत में, यारब, क्या न थी दीवार पत्थर की

* * * * *

बे एतदालियों से, सुबुक[3] सब में हम हुए
जितने ज़ियादा हो गये, उतने ही कम हुए
पिन्हां था दामे - सख़्त, क़रीब आशियान के
उड़ने न पाये थे, कि गिरफ़्तार हम हुए
हस्ती हमारी, अपनी फ़ना पर दलील है
यां तक मिटे, कि आप हम अपनी क़सम हुए
सख़्ती - कशाने - इश्क़[4] की, पूछे है क्या ख़बर
वो लोग रफ़्ता रफ़्ता सरापा[5] अलम[6] हुए
तेरी वफ़ा से क्या हो तलाफ़ी, कि दहर में
तेरे सिवा भी, हम पे बहुत से सितम हुए
लिखते रहे, जुनूं की हिकायाते - ख़ूंचकां[7]
हर चन्द उसमें हाथ हमारे क़लम हुए

---

१. किसान, २. पंख, ३. लज्जित, ४. प्रेम का दुःख सहने वाले, ५. सिर से पांव तक, ६. दुःख, ७. रक्त-रंजित कहानी।

अल्ला - रे तेरी तुन्दिए - खू, जिसके बीम[1] से
अज्ज़ाए - नाला[2] दिल में मेरे रिज़्क़े - हम हुए
अहले - हवस की फ़तह है, तर्के - नबर्दे - इश्क़[3]
जो पांव उठ गये, वही उनके अलम हुए
नाले अदम में चन्द हमारे सुपुर्द थे
जो वां न खिंच सके, सो वो यां आके दम हुए
छोड़ी, 'असद' न हमने गदाई में दिल - लगी
साइल[4] हुए, तो आशिक़े - अहले - करम हुए

✤ ✤ ✤ ✤ ✤

जो न नक़्दे - दाग़े - दिल की करे शोला पास्बानी
तो फ़सुर्दगी निहां है, ब कमीने - बेज़ुबानी[5]
मुझे उससे क्या तवक़्क़ो बज़मानए - जवानी
कभी कोदकी[6] में जिसने, न सुनी मेरी कहानी
यों ही दुख किसी को देना नहीं ख़ूब वरना कहता
कि मेरे अदू को, यारब ! मिले मेरी ज़िन्दगानी

✤ ✤ ✤ ✤ ✤

ज़ुल्मत - कदे[7] में मेरे, शबे - ग़म का जोश है
इक शम्अ है दलीले - सहर, सो ख़मोश है
नै मुज़दए - विसाल[8] न नज़्ज़ाराए - जमाल
मुद्दत हुई, कि आश्तिए - चश्मो - गोश[9] है

---

१. भय, २. रुदन के तत्त्व, ३. प्रेमोन्माद को त्याग देना, ४. भिखारी, ५. मूकता की घात में, ६. बचपन, ७. अंधेरा घर, ८. मिलन की शुभ सूचना, ९. कान और आंख में मित्रता।

मैंने किया है हुस्ने-खुद आरा को, वेहिजाव
ऐ शौक़, यां इजाज़ते-तस्लीमे-होश है
गौहर को इक़्दे-गर्दने-खूबां[1] में देखना
क्या औज[2] पर सितारए गौहर फ़रोश है
दीदारे-बादा, हौसलाए-साक़ी, निगाहे-मस्त
बज़्मे-ख़याल मैकदाए-बे-ख़रोश[3] है

क़तआ

ऐ ताज़ा वारिदाने-बिसाते-हवाए-दिल
ज़िन्हार[4], अगर तुम्हें हविसे-नायओनोश[5] है
देखो मुझे, जो दीदए-इबरत-निगाह हो
मेरी सुनो जो गोशे-हक़ीक़त-नियोश[6] है
साक़ी, बजल्वा दुश्मने-ईमानो-आगही
मुतरिब[7], बनग़्मा, रहज़ने-तमक़ीनो-होश है
या शब को देखते थे कि हर गोशए-बिसात
दामाने-बाग़बानो-कफ़े-गुलफ़रोश है
लुत्फ़े-ख़िरामे साक़ीओ ज़ौक़े सदाए-चंग[8]
यह जन्नते-निगाह, वो फ़िरदौसे-गोश है
या सुब्ह-दम जो देखिये आकर, तो बज़्म में
ने वो सुरूरो-सोज़ न जोशो-ख़रोश है
दाग़े-फ़िराक़े-सोहबते-शब की जली हुई
इक शम्ब्र रह गई है, सो वो भी ख़मोश है

---

१. सुन्दरियों के गले का हार, २. बुलन्दी, ३. बिना शोर की मधुशाला, ४. कदाचित्, ५. खाना-पीना, ६. सच्ची बात सुनने वाला कान, ७. गायक, ८. बाजे की आवाज़।

आते हैं ग़ैब से, ये मज़ामीं ख़याल में
'ग़ालिब', सरीरे - ख़ामा[1] - नवाए - सरोश[2] है

✣ ✣ ✣ ✣ ✣

न हुई गर मेरे मरने से तसल्ली न सही
इम्तेहां और भी बाक़ी हो तो ये भी न सही
ख़ार ख़ारे - अलमे - हसरते - दीदार तो है
शौक़े - गुलचीने गुलिस्ताने तसल्ली न सही
मै - परस्तां ख़ुमे - मै मुंह से लगाये ही बने
एक दिन गर न हुआ बज़्म में साक़ी न सही
नफ़से - क़ैस कि है चश्मो - चिराग़े - सहरा
गर नहीं शम्अ - सियाख़ानए लैला, न सही
एक हंगामे पे मौक़ूफ़ है घर की रौनक़
नौहए - ग़म[3] ही सही नग़्मए - शादी[4] न सही
न सताइश[5] की तमन्ना न सिले की परवा
गर नहीं हैं मेरे अशआर में मानी न सही
इशरते - सोहबते - ख़ूबां[6] ही ग़नीमत समझो
न हुई, 'ग़ालिब', अगर उम्रे - तबीई[7] न सही

✣ ✣ ✣ ✣ ✣

अजब निशात से, जल्लाद के, चले हैं हम, आगे
कि अपने साये से सर, पांव से है दो क़दम आगे

---

१. क़लम की आवाज़, २. फ़रिश्तों की आवाज़, ३. ग़म का रुदन, ४. खुशी का संगीत, ५. तारीफ़, ६. सुन्दर प्रेमिकाओं की संगति का आनन्द, ७. नैसर्गिक आयु।

क़ज़ा ने था मुझे चाहा, ख़राबे - बादए - उल्फ़त
फ़क़त 'ख़राब' लिखा, बस न चल सका क़लम आगे
ग़मे ज़माना ने झाड़ी; निशाते - इश्क़[1] की मस्ती
वगरना हम भी उठाते थे लज़्ज़ते - अलम, आगे
ख़ुदा के वास्ते, दाद इस जुनूने - शौक़ की देना
कि उसके दर पे पहोंचते हैं नामावर से हम, आगे
ये उम्र भर जो परीशानियां उठाई हैं, हमने
तुम्हारे आइयो, ऐ तुर्राहाए - ख़मबख़म, आगे
दिलो - जिगर में पर - अफ़शां, जो एक मौज़ए - ख़ूं है
हम अपने ज़ोम[2] में समझे हुए थे उसको दम आगे
क़सम जनाज़े पे आने की मेरे खाते हैं, 'ग़ालिब'
हमेशा खाते थे, जो मेरी जान की क़सम आगे



शिकवे के नाम से, बेमेहर ख़फ़ा होता है
यह भी मत कह, कि जो कहिये, तो गिला होता है
पुर हूं मैं शिकवे से यों, राग से जैसे बाजा
इक ज़रा छेड़िये, फिर देखिए, क्या होता है
गो समझता नहीं, पर हुस्ने - तलाफ़ी[3] देखो
शिकवए - जौर[4] से, सरगर्मे - जफ़ा होता है
इश्क़ की राह में, है चर्ख़े - मकौकब[5] की वो चाल
सुस्त - रौ जैसे कोई आबला - पा होता है

१. प्रेम-उल्लास, २. घमंड, ३. क्षतिपूर्ति का ढंग, ४. जुल्म की शिकायत, ५. तारों भरा आसमान ।

क्यों न ठहरें हदफ़े - नावके - वेदाद[1], कि हम,
आप उठा लाते हैं गर तीर ख़ता होता है
ख़ूब था, पहले से होते जो हम अपने वदख़्वाह
कि भला चाहते हैं और बुरा होता है
नाला जाता था, परे अर्श से मेरा, और अब
लब तक आता है जो ऐसा ही रसा होता है

क़तआ

ख़ामा[2] मेरा, कि वो है वार - बुदे - वज़्मे - सुख़न[3]
शाह की मदह[4] में, यों नग़्मा - सरा होता है
ऐ शहनशाहे कवाकिब[5] सिपहो - मेहर अलम
तेरे इकराम[6] का हक़, किससे अदा होता है
सात अक़लीम[7] का हासिल जो फ़राहम कीजे
तो वो लश्कर का तेरे नाल - वहा[8] होता है
हर महीने में, जो ये वद्र[9] से होता है हिलाल[10]
आस्तां पर तेरे मै नासिया - सा[11] होता है
मैं जो गुस्ताख़ हूं आईने - ग़ज़ल ख़्वानी में
यह भी तेरा ही करम ज़ौक़ - फ़िज़ा होता है
रखियो, 'ग़ालिब', मुझे इस तल्ख़ - नवाई में मुआफ़
आज कुछ दर्द मेरे दिल में सवा होता है

---

१. ज़ुल्म के तीर का निशाना, २. क़लम, ३. मुशायरा, ४. तारीफ़, ५. सितारे, ६. सम्मान, ७. सात लोक, ८. घोड़ों के सुमों में लगने वाले नाल, ९. पूरा चाँद, १०. दूज का चाँद, ११. माथा घिसने वाला।

* * * * *

हर एक बात पे कहते हो तुम, कि तू क्या है
तुम्हीं कहो कि ये अन्दाज़े - गुफ़्तगू क्या है
न शोले में ये करिश्मा न बर्क़ में ये अदा
कोई बताओ, कि वो शोख़े - तुन्द - ख़ू क्या है
यह रश्क है, कि वो होता है हमसुख़न तुमसे
वगरना ख़ौफ़े - बद - आमोज़िए - उदू[1] क्या है
चिपक रहा है बदन पर, लहू से, पैराहन
हमारी जेब को अब हाजते - रफ़ू क्या है
जला है जिस्म जहां, दिल भी जल गया होगा
कुरेदते हो जो अब राख, जुस्तजू क्या है
रगों में दौड़ने फिरने के, हम नहीं क़ायल
जब आंख ही से न टपका, तो फिर लहू क्या है
वो चीज़, जिसके लिए हमको हो, बहिश्त अज़ीज़
सिवाये बादए - गुलफ़ामे - मुश्कबू[2] क्या है
पियूं शराब, अगर ख़ुम भी देखलूं दो चार
ये शीशओ - क़दहो - कूज़ा व सुबू[3] क्या है
रही न ताक़ते गुफ़्तार, और अगर हो भी
तो किस उम्मीद पर कहिए कि आरज़ू क्या है
हुआ है शह का मुसाहिब, फिरे है इतराता
वगरना शहर में 'ग़ालिब' की आबरू क्या है

---

१. दुश्मन के सिखाने-पढ़ाने का भय, २. फूलों के रंग की सुगन्धित शराब, ३. सुराही।

* * * * *

मैं उन्हें छेड़ूं, और कुछ न कहें
चल निकलते, जो मै पिए होते
क़हर हो, या बला हो, जो कुछ हो
काश के, तुम मेरे लिए होते
मेरी क़िस्मत में ग़म गर इतना था
दिल भी, यारब, कई दिये होते
आ ही जाता वो राह पर, 'ग़ालिब'
कोई दिन और भी जिये होते

* * * * *

आ, कि मेरी जान को क़रार नहीं है
ताक़ते बेदादे - इन्तेज़ार नहीं है
देते हैं जन्नत, हयाते - दहर के बदले
नश्शा बअन्दाज़ए - ख़ुमार नहीं है
गिरिया निकाले है तेरी बज़्म से, मुझको
हाय कि रोने पे इख़्तियार नहीं है
हमसे अबस है, गुमाने - रंजिशे - ख़ातिर
ख़ाक में उश्शाक़[1] की गुबार नहीं है
दिल से उठा लुत्फ़े - जल्वाहाए मआनी
ग़ैरे - गुल, आईनए - बहार नहीं है
क़त्ल का मेरे अहद तो किया है बारे
वाये! अगर अहद उस्तवार[2] नहीं है

---

१. आशिक़ का बहुवचन; प्रेमी, २. दृढ़ ।

तूने क़सम मैकशी की खाई है, 'ग़ालिब'
तेरी क़सम का कुछ एतबार नहीं है

✤ ✤ ✤ ✤ ✤

हुजूमे ग़म से, यां तक सर - निगूनी[1] मुझको हासिल है
कि तारे दामनो - तारे - नज़र में फ़र्क़ मुश्किल है
रफ़ूए - ज़ख़्म से मतलब है लज़्ज़त ज़ख़्मे - सोज़न की
समझियो मत, कि पासे - दर्द से, दीवाना ग़ाफ़िल है
वो गुल जिस गुलिस्तां में जल्वा फ़रमाई करे, 'ग़ालिब'
चटकना गुंचए दिल का, सदाए - ख़न्दए - दिल है

✤ ✤ ✤ ✤ ✤

पा ब दामन हो रहा हूं, बस कि मैं सहरा नवर्द
ख़ारे - पा[2] हैं; जौहरे - आइनए ज़ानू मुझे
देखना हालत मेरे दिल, की हम - आग़ोशी के बाद
है निगाहे आश्ना, तेरा सरे हर मू, मुझे
हूं सरापा नाज़ आहंगे - शिकायत, कुछ न पूछ
है यही बेहतर, कि लोगों में न छेड़े तू मुझे

✤ ✤ ✤ ✤ ✤

जिस बज़्म में, तू नाज़ से, गुफ़्तार में आवे
जां, कालबुदे[3] - सूरते - दीवार में आवे
साये की तरह साथ फिरें सर्वो - सनोबर
तू इस क़दे दिलकश से, जो गुलज़ार में आवे

---

१. सिर झुकना, २. पांव का कांटा, ३. शरीर।

तब नाज़े - गरां - मायगिए - अश्क[1] बजा है
जब लख़्ते - जिगर दीदए, ख़ूंबार में आवे

दे मुझको शिकायत की इजाज़त, कि सितमगर
कुछ तुझको मज़ा भी मेरे आज़ार में आवे

उस चश्मे - फ़ुसूंगर[2] का, अगर पाये इशारा
तूती की तरह आईना गुफ़्तार में आवे

कांटों की ज़ुवां सूख गई प्यास से, यारब
इक आवला - पावादिए - पुरख़ार में आवे

मर जाऊं न क्यों रश्क से, जब वो तने-नाज़ुक
आग़ोशे - ख़मे - हल्क़ए - ज़ुन्नार में आवे

ग़ारतगरे - नामूस[3] न हो, गर हविसे - ज़र[4]
क्यों शाहिदे - गुल[5], बाग़ से बाज़ार में आवे

तब चाके - गरेबां का मज़ा है, दिले - नादां
जब इक नफ़स उलझा हुआ, हर तार में आवे

आतिश - कदा है सीना मेरा, राज़े - निहां से
ऐ वाये, अगर मारिज़े - इज़्हार[6] में आवे

गंजीनए - मानी[7] का तिलिस्म उसको समझिये
जो लफ़्ज़ कि 'ग़ालिब', मेरे अशआर में आवे

✢ ✢ ✢ ✢ ✢

हुस्ने - मह[8], गरचे बहंगामे - कमाल[9], अच्छा है
उससे मेरा महे - ख़ुर्शीद - जमाल अच्छा है

---

१. आंसू की बहुमूल्यता, २. जादू करने वाली आंख, ३. इज़्ज़त को मिटाने वाली, ४. रुपये-पैसे का लालच, ५. सुन्दर फूल, ६. अभिव्यक्ति, ७. अर्थों का खज़ाना, ८. चांद का सौंदर्य, ९. चौदहवीं की रात को।

बोसा देते नहीं, और दिल पे है हर लहज़ा निगाह
जी में कहते हैं, कि मुफ़्त आये, तो माल अच्छा है
और बाज़ार से ले आये, अगर टूट गया
साग़रे - जम[1] से मेरा जामे - सिफ़ाल[2] अच्छा है
बेतलब दें तो मज़ा उसमें सवा मिलता है
वो गदा, जिसको न हो ख़ूए - सवाल, अच्छा है
उनके देखे से, जो आ जाती है मुंह पर रौनक़
वो समझते हैं कि बीमार का हाल अच्छा है
देखिये पाते हैं उश्शाक़, बुतों से क्या फ़ैज़[3]
इक ब्रेहमन ने कहा है, कि यह साल अच्छा है
हम - सुख़न तेशे ने फ़रहाद को, शीरीं से किया
जिस तरह का भी किसी में हो कमाल, अच्छा है
क़तरा दरिया में जो मिल जाय, तो दरिया हो जाय
काम अच्छा है वो, जिसका कि मआल[4] अच्छा है
ख़िज़्र सुल्तां को रखे, ख़ालिक़े अकबर सरसब्ज़
शाह के बाग़ में, यह ताज़ा निहाल[5] अच्छा है
हमको मालूम है, जन्नत की हक़ीक़त, लेकिन
दिल के ख़ुश रखने को, 'ग़ालिब', ये ख़याल अच्छा है

* * * * *

ग़ैर ले महफ़िल में, बोसे जाम के
हम रहें यों तशना - लब[6], पैग़ाम के

---

१. जमशेद बादशाह का प्याला, २. मिट्टी का प्याला, ३. लाभ, ४. परिणाम, ५. पेड़, ६. प्यासे।

ख़स्तगी का तुमसे क्या शिकवा कि ये
हथकण्डे हैं चर्ख़ - नीली - फ़ाम[1] के

ख़त लिखेंगे, गरचे मतलब कुछ न हो
हम तो आशिक़ हैं, तुम्हारे नाम के

रात पी ज़मज़म पे मैं और सुब्ह - दम[2]
धोये धब्बे जामए - अहराम[3] के

दिल को आंखों ने फंसाया, क्या मगर
ये भी हल्क़े हैं तुम्हारे दाम के

शाह के हैं गुस्ले सेहत की ख़बर
देखिये, दिन कब फिरें हम्माम के

इश्क़ ने, 'ग़ालिब' निकम्मा कर दिया
वरना हम भी आदमी थे काम के

* * * * *

फिर इस अन्दाज़ से बहार आई
कि हुए मेहरो - माह[4] तमाशाई

देखो, ऐ साकिनाने - ख़ित्ताए - ख़ाक[5] !
इसको कहते हैं आलम - आराई[6]

कि ज़मीं हो गई सरतासर[7]
रूकशे - सतहे - चर्ख़ - मीनाई[8]

सब्ज़े को जब कहीं जगह न मिली
बन गया रूए - आब[9] पर काई

---

१. नीले रंग वाले आसमान, २. सुबह के वक्त, ३. हज की पोशाक, ४. चांद-सूरज, ५. दुनिया के वासी, ६. दुनिया को सजाना, ७. सर्वथा, ८. आसमान के समान, ९. पानी की सतह ।

सब्ज़ओ गुल के देखने के लिए
चश्मे - नरगिस को दी है बीनाई
है हवा में शराब की तासीर
बादा - नोशी है बाद - पैमाई[1]
क्यों न दुनिया को हो ख़ुशी, 'ग़ालिब'
शाहे - दीदार ने शफ़ा[2] पाई

✤ ✤ ✤ ✤ ✤

तग़ाफ़ुल दोस्त हूं, मेरा दिमाग़े - इज्ज़ आली है
अगर पहलू - तही कीजे, तो जा मेरी भी ख़ाली है
रहा आबाद आलम, अहले - हिम्मत के न होने से
भरे हैं जिस क़दर जामो सुबू, मैख़ाना ख़ाली है

✤ ✤ ✤ ✤ ✤

कब वो सुनता है कहानी मेरी
और फिर वो भी ज़ुबानी मेरी
ख़लिशे - ग़मज़ए - ख़ूरेज़ न पूछ
देख ख़ूनाबा - फ़िशानी मेरी
क्या बयां करके मेरा, रोयेंगे यार
मगर आशुफ़्ता - बयानी मेरी
हूं ज़ख़ुद - रफ़्तए - बेदाए - ख़याल[3]
भूल जाना है, निशानी मेरी

---

१. हवा मापना, २. सेहत, ३. विचारमग्न।

मुत्तक़ाबिल[1] है, मुक़ाबिल मेरा
रुक गया, देख रवानी मेरी
क़द्रे - संगे - सरे - रह रखता हूं
सख़्त अरज़ां है, गिरानी मेरी
गर्दे बादे - रहे - बेताबी हूं
सरसरे - शौक़[2] है, बानी मेरी
दहन उसका, जो न मालूम हुआ
खुल गई हेच - मदानी[3] मेरी
कर दिया ज़ोफ़ ने आजिज़, 'ग़ालिब'
नंगे - पीरी है, जवानी मेरी

* * * * *

गुलशन को तेरी सोहबत, अज़ बस कि पसन्द आई है
हर ग़ुंचे का गुल होना, आग़ोश - कुशाई है
वां कंगुरे - इस्तग़ना[4], हरदम है बुलन्दी पर
यां नाले को और उल्टा, दावाए रसाई है
अज़बस कि सिखाता है ग़म, ज़ब्त के अन्दाज़े
जो दाग़ नज़र आया इक चश्म - नुमाई[5] है

* * * * *

जिस ज़ख़्म की हो सकती हो तदबीर, रफ़ू की
लिख दीजिये, यारब ! उसे क़िस्मत में उदू की

---

१. मुक़ाबले पर न आने वाला, २. चाह रूपी हवा की ध्वनि, ३. कुछ न जानना, ४. निस्पृहता का कलश, ५. आंख के इशारे से घुड़की देना।

अच्छा है सर - अंगुश्ते - हिनाई[1] का तसव्वुर[2]
दिल में नज़र आती तो है, इक बूंद लहू की
क्यों डरते हो, उश्शाक़ की बे - हौसलगी से
यां तो कोई सुनता नहीं फ़रियाद किसू की
दश्ने[3] ने कभी मुंह न लगाया हो जिगर को
ख़ंजर ने कभी बात न पूछी हो गुलू की
सद हैफ़[4] ! वो नाकाम, कि एक उम्र से, 'ग़ालिब'
हसरत में रहे एक बुते - उरबदा - जू[5] की

* * * * *

सीमाब[6] पुश्ते - गर्मिए - आईना[7] दे कि हम
हैरां किये हुए हैं दिले - बेक़रार के
आग़ोशे - गुल कशूदा[8] बराए विदाअ है
ऐ अन्दलीब[9] ! चल, कि चले दिन बहार के

* * * * *

है वस्ल हिज्र, आलमे - तमकीनो - ज़ब्त में
माशूक़े - शोख़ो - आशिक़े - दीवाना चाहिये
उस लब से मिल ही जायगा बोसा कभी तो, हां
शौक़े - फ़िज़ूलो - जुरअते - रिन्दाना[10] चाहिये

---

१. मेंहदी लगी अंगुली का सिरा, २. कल्पना, ३. चाकू, ४. सख्त अफ़सोस, ५. लड़ाकू प्रेमी, ६. पारा, ७. आईने की पुश्त की गर्मी, ८. खुली हुई, ९. बुलबुल, १०. शराबी का हौसला।

    

चाहिये अच्छों को जितना चाहिये
ये अगर चाहें, तो फिर क्या चाहिये

सोहवते - रिन्दां से वाजिब है, हज़र[1]
जाए में अपने को खींचा चाहिए

चाहने को तेरे क्या समझा था दिल
बारे, अब इससे भी समझा चाहिये

चाक मत कर जेब बे - अय्यामे - गुल[2]
कुछ उधर का भी इशारा चाहिये

दोस्ती का पर्दा, है बेगानगी
मुंह छिपाना हमसे छोड़ा चाहिये

दुश्मनी ने मेरी खोया ग़ैर को
किस क़दर दुश्मन है, देखा चाहिये

अपनी रुस्वाई में क्या चलती है सई
यार ही हंगामा - आरा[3] चाहिये

मुनहसिर[4] मरने पे हो, जिसकी उमीद
नाउमीदी उसकी, देखा चाहिये

ग़ाफ़िल, इन मह - तलअतों के वास्ते
चाहने वाला भी अच्छा चाहिये

चाहते हैं ख़ूबरूओं को 'असद'
आपकी सूरत तो देखा चाहिये

---

१. दूर रहना, २. वसन्त के दिनों के अलावा, ३. हंगामा बरपा करने वाला, ४. निर्भर।

* * * * *

हर क़दम दूरिए मंज़िल है नुमायां मुझसे
मेरी रफ़्तार से भागे है, बयाबां मुझसे
दर्स[1] - उनवाने - तमाशा, बतग़ाफ़ुल ख़ुशतर
है निगह रिश्तए शीराज़ए मिज़गां मुझसे
वहशते - आतिशे - दिल से, शबे - तन्हाई में
सूरते - दूद[2], रहा साया गुरेज़ां[3] मुझसे
ग़मे उश्शाक़ न हो, सादगी - आमोज़े - बुतां[4]
किस क़दर ख़ानए - आईना है वीरां मुझसे
असरे आबला से, जादए - सहराए - जुनूं[5]
सूरते - रिश्तए - गौहर है चिराग़ां मुझसे
बेख़ुदी बिस्तरे - तम्हीदे - फ़राग़त[6] हो जो
पुर है साये की तरह मेरा शबिस्तां[6] मुझसे
शौक़े - दीदार में, गर तू मुझे गर्दन मारे
हो निगह, मिस्ले - गुले - शम्अ[7], परीशां मुझसे
बेकसीहाए शबे - हिज्र की वहशत, है, है !
साया ख़ुर्शीदे - क़यामत में है पिन्हां मुझसे
गर्दिशे - साग़रे - सद - जल्वए - रंगी, तुझसे
आइना - दारिए - यक - दीदए - हैरां, मुझसे
निगहे - गर्म से इक आग टपकती है, 'असद'
है चिराग़ां, ख़सो - ख़ाशाके - गुलिस्तां मुझसे

---

१. पाठ, २. धुएं के सदृश, ३. दूर-दूर, ४. प्रेमियों को सरलता सिखाने वाला, ५. उन्माद के रेगिस्तान का मार्ग, ६. सोने का कमरा, ७. शमआ के गुल के समान।

* * * * *

नुक्ताचीं[1] है, ग़मेदिल उसको सुनाये न बने
क्या बने बात, जहां बात बनाये न बने

मैं बुलाता तो हूं उसको, मगर ऐ जज़्बए-दिल
उसपे बन जाये कुछ ऐसी, कि बिन आये न बने

खेल समझा है, कहीं छोड़ न दे, भूल न जाय
काश, यों भी हो, कि बिन मेरे सताये न बने

ग़ैर फिरता है, लिये यों तेरे ख़त को, कि अगर
कोई पूछे, कि ये क्या है, तो छिपाये न बने

इस नज़ाकत का बुरा हो, वो भले हैं, तो क्या
हाथ आयें, तो उन्हें हाथ लगाये न बने

कह सके कौन, कि ये जल्वागरी किसकी है
पर्दा छोड़ा है वो उसने, कि उठाये न बने

मौत की राह न देखूं, कि बिन आये न रहे
तुमको चाहूं, कि न आओ, तो बुलाये न बने

बोझ वो सर से गिरा है, कि उठाये न उठे
काम वो आन पड़ा है, कि बनाये न बने

इश्क़ पर ज़ोर नहीं, है ये वो आतिश[2], 'ग़ालिब'
कि लगायें न लगे और बुझाये न बने

* * * * *

चाक की ख़्वाहिश, अगर वहशत बउरियानी[3] करे
सुब्हो की मानिन्द, ज़ख़्मे-दिल गरेबानी करे

---

१. आलोचक, २. आग, ३. नग्नता में।

जल्वे का तेरे वो आलम है, कि गर कीजे ख़याल
दीदए-दिल को ज़्यारत-गाहे हैरानी करें
है शिकस्तन से भी दिल नौमीद[1], यारब कब तलक
आबगीना कोह[2] पर अर्ज़ें गरां-जानी करे
मैकदा गर चश्मे मस्तेनाज़ से पाये शिकस्त
मूए-शीशा[3] दीदए-साग़र की मिज़गानी करे
ख़त्ते-आरिज़[4] से, लिखा है ज़ुल्फ़ को उल्फ़त ने अहद
यक क़लम मंज़ूर है, जो कुछ परीशानी करे

* * * * *

वो आके ख़्वाब में, तिस्कीने-इज़्तेराब तो दे
वले मुझे तपिशे-दिल[5] मजाले-ख़्वाब तो दे
करे है क़त्ल, लगावट में तेरा रो देना
तेरी तरह कोई तेग़े-निगाह को आब तो दे
दिखा के जुम्बिशे-लब ही तमाम कर हमको
न दे जो बोसा, तो मुंह से कहीं जवाब तो दे
पिला दे ओक से, साक़ी, जो हमसे नफ़रत है
प्याला गर नहीं देता, न दे, शराब तो दे
'असद', खुशी से मेरे हाथ पांव फूल गये
कहा जो उसने, ज़रा मेरे पांव दाब तो दे

* * * * *

---

१. निराश, २. पहाड़, ३. शीशे पर खरोंच रूपी बाल, ४. गाल के बाल, ५. दिल की जलन ।

ख़तर है, रिश्तए-उल्फ़त रगे-गर्दन न हो जाए
गुरूरे दोस्ती आफ़त है, तू दुश्मन न हो जाए
समझ इस फ़स्ल में कोताहिए-नश्वो-नुमा[1] 'ग़ालिब'
अगर गुल, सर्व के क़ामत पे, पैराहन[2] न हो जाए

✣ ✣ ✣ ✣ ✣

फ़रियाद की कोई लै[3] नहीं है
नाला पाबन्दे-नै नहीं है
क्यों बोते हैं बाग़बां तूंबे
गर बाग़ गदाए-मैं[4] नहीं है
हरचन्द हर एक शै में तू है
पर तुझसी तो कोई शै नहीं है
हां, खाइयो मत फ़रेबे-हस्ती[5]
हर चन्द कहें, कि "है", नहीं है
शादी से गुज़र, कि ग़म न होवे
उरदी जो न हो, तो दै नहीं है
क्यों रदो-क़दह[6] करे है, ज़ाहिद
मै है, ये मगस[7] की कै नहीं है
हस्ती है, न कुछ अदम है 'ग़ालिब'
आख़िर तू क्या है, ऐ, "नहीं है"

✣ ✣ ✣ ✣ ✣

---

१. विकास की कमी, २. पोशाक, ३. स्वर विशेष ४. शराब का भिखारी, ५. अस्तित्व का धोखा, ६. तकरार, ७. मक्खी ।

न पूछ नुसख़ए - मरहम, जराहते - दिल का
कि उसमें रेज़ए - अल्मास जुज़्वे - आज़म[1] है
बहुत दिनों में तग़ाफ़ुल ने तेरे पैदा की
वो इक निगह; कि बज़ाहिर निगाह से कम है

* * * * *

हम रश्क को अपने भी, गवारा नहीं करते
मरते हैं, वले उनकी तमन्ना नहीं करते
दरपर्दा उन्हें ग़ैर से, है रब्ते - निहानी[2]
ज़ाहिर का ये पर्दा है, कि पर्दा नहीं करते
ये बाइसे - नौमीदिए - अरबाबे - हविस है
'ग़ालिब' को बुरा कहते हो, अच्छा नहीं करते

* * * * *

करे है बादा, तेरे लब से कस्बे - रंगे - फ़रोग़[3]
ख़ते - पियाला सरासर निगाहे - गुलचीं है
कभी तो इस दिले - शोरीदा[4] की भी दाद मिले
कि एक उम्र से हसरत परस्तए - बालीं है
बजा है, गर न सुने; नाला हाए - बुलबुले - ज़ार
कि गोशे - गुल, नमे - शबनम[5] से, पंबा - आगीं[6] है
'असद' है नज़ा[7] में, चल बेवफ़ा, बराये ख़ुदा
मक़ामे - तर्के - हिजाबो - विदाए - तमकीं[8] है

---

१. मुख्य अंश, २. भीतरी लगाव, ३. मनोहर रंग लेना, ४. उन्मत्त दिल, ५. ओस की तरी, ६. रुई का फाहा डाले, ७. दम तोड़ने की हालत, ८. घमंड और शर्म त्याग देने का समय ।

✣ ✣ ✣ ✣ ✣

क्यों न हो चश्मे-बुतां महवे तग़ाफ़ुल, क्यों न हो
यानी इस बीमार को नज़्ज़ारे से परहेज़ है
मरते मरते, देखने की आरज़ू रह जाएगी
वाये नाकामी, कि उस काफ़िर का खंजर तेज़ है
आरिज़े-गुल[1] देख, रूए-यार याद आया, 'असद'
जोशिशे-फ़स्ले-बहारी[2] इश्तियाक़-अंगेज़ है

✣ ✣ ✣ ✣ ✣

दिया है दिल अगर उसको, बशर[3] है, क्या कहिये
हुआ रक़ीब, तो हो, नामाबर है, क्या कहिये
ये ज़िद, कि आज न आवे और आये बिन न रहे
क़ज़ा से शिकवा हमें किस क़दर है, क्या कहिये
रहे है यों गहो-बेगह,[4] कि कूए-दोस्त को अब
अगर न कहिये कि दुश्मन का घर है, क्या कहिये
ज़िहे-करिश्मा, कि यों दे रखा है हमको फ़रेब
कि बिन कहे ही उन्हें सब ख़बर है, क्या कहिये
समझ के करते हैं, बाज़ार में वो, पुरसिशे-हाल
कि ये कहे, कि सरे-रहगुज़र है, क्या कहिये
तुम्हें नहीं है सरे-रिश्तए वफ़ा का ख़याल
हमारे हाथ में कुछ है, मगर है क्या, कहिये
उन्हें सवाल पे ज़ोमे-जुनूँ[5] है, क्यों लड़िये
हमें जवाब से क़तए नज़र है, क्या कहिये

---

१. फूल के गाल, २. वसंत ऋतु का निखार, ३. मनुष्य, ४. आन-जाना, ५. उन्माद का घमंड।

हसद, सज़ाए - कमाले - सुख़न है, क्या कीजे
सितम, बहाये - मताए - हुनर[1] है, क्या कहिये
कहा है किसने, कि 'ग़ालिब' बुरा नहीं, लेकिन
सिवाए इसके, कि आशुफ़्ता - सर है, क्या कहिये

* * * * *

कभी नेकी भी उसके जी में गर आ जाये है मुझसे
जफ़ायें करके अपनी याद शर्मा जाये है मुझसे
ख़ुदाया जज़्बए - दिल की मगर तासीर उल्टी है
कि जितना खींचता हूं और खिंचता जाये है मुझसे
वो बदख़ू[2], और मेरी दास्ताने - इश्क़ तूलानी
इबारत मुख़्तसर, क़ासिद भी घबरा जाये है मुझसे
उधर वो बदगुमानी है, इधर यह नातवानी है
न पूछा जाये है उससे, न बोला जाये है मुझसे
संभलने दे मुझे, ऐ नाउमीदी, क्या क़यामत है
कि दामाने - ख़याले - यार, छूटा जाये है मुझसे
तकल्लुफ़ बरतरफ़, नज़्ज़ारगी में भी सही, लेकिन
वो देखा जाये, कब ये ज़ुल्म देखा जाये है मुझसे
हुये हैं पांव ही पहले, नबर्दे - इश्क़[3] में ज़ख़्मी
न भागा जाये है मुझसे, न ठहरा जाये है मुझसे
क़यामत है, कि होवे मुद्दई का हमसफ़र, 'ग़ालिब'
वो काफ़िर, जो ख़ुदा को भी न सौंपा जाये है मुझसे

* * * * *

१. कला की पूँजी, २. बुरी आदत वाला, ३. प्रेम में घूमते हुए।

क्या तअज्जुब है, कि उसको देखकर आजाये रहम
वां तलक कोई किसी हीले से पहुँचा दे मुझे
मुंह न दिखलाये, न दिखला, पर वअन्दाज़े - अताब[1]
खोलकर पर्दा, ज़रा आंखें ही दिखला दे मुझे
यां तलक मेरी गिरफ़्तारी से वो खुश है, कि मैं
ज़ुल्फ़ गर वन जाऊं, तो शाने में उलझा दे मुझे

⁂ ⁂ ⁂ ⁂ ⁂

वाज़ीचए - अतफ़ाल[2] है दुनिया, मेरे आगे
होता है शवो - रोज़ तमाशा, मेरे आगे
इक खेल है औरंगे - सुलेमां[3], मेरे नज़दीक
इक बात है, ऐजाज़े - मसीहा[4], मेरे आगे
जुज़ नाम, नहीं सूरते - आलम मुझे मंज़ूर
जुज़ वहम, नहीं हस्तिए - अशिया[5] मेरे आगे
होता है निहां[6] गर्द में सहरा, मेरे होते
घिसता है जबीं[7] ख़ाक पे दरिया, मेरे आगे
मत पूछ, कि क्या हाल है मेरा, तेरे पीछे
तू देख, कि क्या रंग है तेरा, मेरे आगे
सच कहते हो, खुदवीनो - खुदआरा[8] हूं, न क्यों हूं ?
वैठा है वुते - आईना - सीमा[9] मेरे आगे
फिर देखिये, अन्दाज़े - गुल अफ़शानिए - गुफ़्तार
रख दे कोई, पैमानओ - सहवा मेरे आगे

१. क्रोध के ढंग से, २. बच्चों का खेल, ३. सुलेमान वादशाह का तख्त, ४. मसीहा का चमत्कार, ५. वस्तुओं का अस्तित्व ६. छिपना, ७. माथा, ८. अपने आप को देखने और संवारने वाला, ९. शीशे की तरह चमकते हुए मुख वाला प्रेमी ।

नफ़रत का गुमां गुज़रे है, मैं रश्क से गुज़रा
क्योंकर कहूं, लो नाम न उनका मेरे आगे
ईमां मुझे रोके है, तो खींचे है मुझे कुफ़्र
काबा मेरे पीछे है, कलीसा मेरे आगे
आशिक़ हूं, पे माशूक़ फ़रेबी है मेरा काम
मजनूं को बुरा कहती है लैला, मेरे आगे
खुश होते हैं, पर वस्ल में यों मर नहीं जाते
आई शबे-हिजरां[1] की तमन्ना, मेरे आगे
है मोजज़न इक कुल्ज़मे-खूं,[2] काश, यही हो
आता है, अभी देखिये, क्या क्या, मेरे आगे
गो हाथ को जुम्बिश नहीं, आंखों में तो दम है
रहने दो अभी सागरो-मीना मेरे आगे
हम-पेशओ हम-मशरबो हम-राज़ है मेरा
'ग़ालिब' को बुरा क्यों कहो, अच्छा, मेरे आगे

* * * * *

कहूं जो हाल, तो कहते हो, "मुद्दआ कहिये"
तुम्हीं कहो, कि जो तुम यों कहो, तो क्या कहिए
न कहियो तान से फिर तुम, कि हम "सितमगर" हैं
मुझे तो खू है, कि जो कुछ कहो, बजा कहिये
वो नेश्तर[3] सही, पर दिल में जब उतर जाये
निगाहे-नाज़ को फिर क्यों न आशना कहिये

---

१. वियोग की रात, २. खून का समुद्र, ३. नश्तर।

नहीं ज़रीयए राहत, जराहते - पैकां[1]
वो ज़ख़्मे - तेग़ हैं, जिसको कि दिल - कुशा कहिये
जो मुद्दई बने, उसके न मुद्दई बनिये
जो नासज़ा[2] कहे उसको न नासज़ा कहिये
कहीं हक़ीक़ते - जां - काहिए - मरज़[3] लिखिये
कहीं मुसीबते ना - साज़िए - दवा कहिये
कभी शिकायते - रंजे - गिरां - नशीं[4] कीजे
कभी हिकायते - सब्रे - गुरेज़ - पा[5] कहिये
रहे न जान, तो क़ातिल को ख़ूं बहा दीजे
कटे ज़बान, तो खंजर को मर्हबा कहिये
नहीं निगार को उल्फ़त, न हो, निगार तो है
रवानिए - रविशो - मस्तिए - अदा कहिये
नहीं बहार को फ़ुर्सत, न हो, बहार तो है
तरावते - चमनो - ख़ूबिए - हवा कहिये
सफ़ीना[6] जबकि किनारे पे आ लगा, 'ग़ालिब'
ख़ुदा से क्या सितमो - जौरे नाख़ुदा कहिये

* * * * *

रोने से और इश्क़ में बेबाक हो गये
धोये गये हम ऐसे, कि बस पाक हो गये
सर्फ़े - बहाए - मैं[7] हुये, आलाते - मै - कशी[8]
थे ये ही दो हिसाब, सो यों पाक हो गये

---

१. तीर द्वारा चीर-फाड़, २. अनुचित, ३. रोग के कष्ट की वास्तविकता, ४. भारी दुख की शिकायत, ५. बचाने वाले संतोष की कहानी; ६. नाव, ७. शराब के लिए खर्च, ८. शराब खींचने के यंत्र ।

रुस्वाए - दहर[1] गो हुये, आवारगी से तुम
बारे तबीअतों के तो चालाक हो गये
कहता है कौन नालए - बुलबुल को, बे - असर
परदे में गुल के लाख जिगर चाक हो गये
पूछे है क्या वजूदो - अदम अहले - शौक़ का
आप अपनी आग के ख़सो - ख़ाशाक हो गये
करने गये थे उससे, तग़ाफ़ुल का हम गिला
की एक ही निगाह, कि बस ख़ाक हो गये
इस रंग से उठाई कल उसने 'असद' की लाश
दुश्मन भी जिसको देख के ग़मनाक हो गये

* * * * *

इब्ने - मरियम[2] हुआ करे कोई
मेरे दुख की दवा करे कोई
शरओ - आईन[3] पर मदार सही
ऐसे क़ातिल का क्या करे कोई
चाल, जैसे कड़ी कमां का तीर
दिल में ऐसे कि जा करे कोई
बात पर वां ज़ुबान कटती है
वो कहें और सुना करे कोई
बक रहा हूं जुनूं में क्या क्या कुछ
कुछ न समझे, ख़ुदा करे कोई

---

१. जमाने भर में बदनाम, २. मरियम का बेटा, मसीहा, ३. कायदे कानून।

रोक लो, गर ग़लत चले कोई
बख़्श दो, गर ख़ता करे कोई
कौन है, जो नहीं है हाजतमन्द
किसकी हाजत रवा करे कोई
क्या किया ख़िज़्र ने सिकन्दर से
अब किसे रहनुमा करे कोई
जब तवक़्क़ो ही उठ गई, 'ग़ालिब'
क्यों किसी का गिला करे कोई

* * * * *

बहुत सही ग़मे-गेती, शराब कम क्या है
गुलामे साक़िए कौसर हूं, मुझको ग़म क्या है
तुम्हारी तर्ज़ो-रविश, जानते हैं हम, क्या है
रक़ीब पर है अगर लुत्फ़, तो सितम क्या है
कटे तो शब कहें काटे तो सांप कहलावे
कोई बताओ, कि वो ज़ुल्फ़े-ख़मबख़म क्या है
लिखा करे कोई, अहकामे-तालए-मौलूद[1]
किसे ख़बर है, कि वां जुम्बिशे, क़लम क्या है
न हश्रो-नश्र[2] का क़ायल न केशोमिल्लत[3] का
ख़ुदा के वास्ते, ऐसे की फिर क़सम क्या है
सुख़न में ख़ामए[4]-ग़ालिब की आतिश-अफ़शानी[5]
यक़ीं है हमको भी, लेकिन अब उसमें दम क्या है

---

१. जन्म-स्थान २. कयामत और उसका दंड, ३. धर्म और कौम, ४. क़लम, ५. आग बरसाना।

*   *   *   *   *

बाग़ पाकर ख़फ़क़ानी[1], ये डराता है मुझे
सायए - शाख़े - गुल, अफ़ई[2] नज़र आता है मुझे
जौहरे - तेग़ बसर चश्मए - दीगर मालूम
हूं मैं वो सब्ज़ा, कि ज़हराब[3] उगाता है मुझे
मुद्दआ महवे - तमाशाए - शिकस्ते - दिल है
आईना ख़ाने में कोई लिये जाता है मुझे
ज़िन्दगी में तो वो महफ़िल से उठा देते थे
देखूं, अब मर गये पर, कौन उठाता है मुझे

*   *   *   *   *

रौंदी हुई है, कौकबए - शहरयार[4] की
इतराये क्यों न ख़ाक, सरे - रहगुज़ार की
जब उसके देखने के लिये आयें बादशाह
लोगों में क्यों नमूद न हो, लालाज़ार की
भूके नहीं हैं सैरे - गुलिस्तां के हम, बले
क्योंकर न खाइये, कि हवा है बहार की

*   *   *   *   *

हज़ारों ख़्वाहिशें ऐसी, कि हर ख़्वाहिश पे दम निकले
बहुत निकले मेरे अरमान, लेकिन फिर भी कम निकले
डरे क्यों मेरा क़ातिल, क्या रहेगा उसकी गर्दन पर
वो ख़ूं, जो चश्मेतर से उम्र भर यों दमबदम निकले

---

१. सौदाई, २. सांप, ३. जहर का पानी, ४. हाकिम की जूती।

निकलना खुल्द से आदम का सुनते आये थे, लेकिन
बहुत बेआबरू होकर तेरे कूचे से हम निकले

भरम खुल जाये, ज़ालिम तेरे क़ामत[1] की दराज़ी का
अगर इस तुर्रए पुर पेचोख़म का पेचोख़म निकले

मगर लिखवाए कोई उसको ख़त, तो हमसे लिखवाये
हुई सुबह, और घर से कान पर रखकर क़लम निकले

हुई इस दौर में मंसूब मुझसे बादा - आशामी
फिर आया वो ज़माना, जो जहां में जामोजम निकले

हुई जिनसे तवक़्क़ो, ख़स्तगी की दाद पाने की
वो हमसे भी ज़ियादा ख़स्तए तेग़े सितम निकले

मुहब्बत में नहीं है फ़र्क़, जीने और मरने का
उसी को देखकर जीते हैं, जिस काफ़िर पे दम निकले

ज़रा कर ज़ोर सीने पर कि तीरे पुर सितम निकले
जो वो निकले तो दिल निकले, जो दिल निकले तो दम निकले

ख़ुदा के वास्ते पर्दा न काबे से उठा ज़ालिम
कहीं ऐसा न हो यां भी, वही काफ़िर सनम निकले

कहां मैख़ाने का दरवाज़ा, 'ग़ालिब', और कहां वाइज़
पर इतना जानते हैं, कल वो जाता था, कि हम निकले

* * * * *

हूं मैं भी तमाशाइए - नैरंगे - तमन्ना
मतलब नहीं कुछ इससे, कि मतलब ही बर आये[2]

---

१. क़द, २. पूरा हो।

सियाही जैसे गिर जाये दमे-तहरीर काग़ज़ पर
मेरी क़िस्मत में यों तस्वीर है शबहाए-हिजरां[1] की

* * * * *

ख़मोशियों में तमाशा अदा निकलती है
निगाह, दिल से तेरे, सुर्मा सा निकलती है
फ़िशारे-तंगिए-ख़ल्वत[2] से बनती है शबनम
सबा जो ग़ुंचे के पर्दे में जा निकलती है
न पूछ सीनए-आशिक़ से आबे-तेग़े-निगाह
कि ज़ख़्मे-रौज़ने-दर से हवा निकलती है

* * * * *

छिड़के है शबनम आइनए बर्गे-गुल पर आब
ऐ अन्दलीब, वक़्ते-विदाए-बहार है
पच आ पड़ी है वादए-दिलदार की मुझे
वो आये या न आये पे यां इन्तेज़ार है
बेपरदा सूए-वादिए मजनूं गुज़र न कर
हर ज़र्रे के नक़ाब में दिल बेक़रार है
दिल मत गंवा, ख़बर न सही, सैर ही सही
ऐ बेदिमाग़, आइना तिम्साल-दार[3] है
ग़फ़लत कफ़ीले[4]-उम्रो-'असद' ज़ामिने-निशात
ऐ मर्गे नागहां, तुझे क्या इन्तेज़ार है

---

१. जुदाई की रातें, २. एकांत की संकीर्णता का दबाव, ३. चित्र देने वाला, ४. निर्भर।

* * * * *

आईना क्यों न दूं, कि तमाशा कहें जिसे
ऐसा कहां से लाऊं, कि तुझसा कहें जिसे
हसरत ने ला रखा, तेरी बज़्मे - ख़याल में
गुलदस्तए - निगाह, सवैदा कहें जिसे
फूंका है किसने गोशे - मुहब्बत में, ऐ ख़ुदा
अफ़सूने - इन्तिज़ारे - तमन्ना कहें जिसे
सर पर हुजूमे - दर्दे - ग़रीबी से डालिये
वो एक मुश्ते - ख़ाक, कि सहरा कहें जिसे
है चश्मे - तर में हसरते - दीदार से निहां
शौक़े - इनां - गुसेख़ता[1], दरिया कहें जिसे
दरकार है शगुफ़्तने - गुलहाए - ऐश को
सुबहे - बहार, पम्बए - मीना कहें जिसे
'ग़ालिब' बुरा न मान जो वाइज़ बुरा कहे
ऐसा भी कोई है, कि सब अच्छा कहें जिसे

* * * * *

शोले से न होती, हविसे - शोला ने जो की
जी किस क़दर अफ़सुर्दगिए दिल पे जला है
तिम्साल में तेरी है, वो शोख़ी, कि बसद - ज़ौक़
आइना ब - अन्दाज़े - गुल आग़ोश - कुशा है
मालूम हुआ हाले - शहीदाने - गुज़िश्ता
तेग़े - सितम आईनए - तस्वीर नुमा है

---

१. बेलगाम शौक।

ऐ परतवे-ख़ुर्शीदे-जहां ताब, इधर भी
साये की तरह हम पे अजब वक़्त पड़ा है

नाकरदा[1] गुनाहों की भी हसरत की मिले दाद
यारब ! अगर इन करदा गुनाहों की सज़ा है

बेगानगिए-ख़ल्क़[2] से बेदिल न हो 'ग़ालिब'
कोई नहीं तेरा, तो मेरी जान, ख़ुदा है

* * * * *

मंज़ूर थी ये शक्ल, तजल्ली[3] को नूर की
क़िस्मत खुली तेरे क़दो-रुख़ से ज़हूर की

इक ख़ूंचकां कफ़न में करोड़ों बनाव हैं
पड़ती है आंख, तेरे शहीदों पे, हूर की

वाइज़ न तुम पियो, न किसी को पिला सको
क्या बात है तुम्हारी शराबो-तहूर[4] की

लड़ता है मुझसे हश्र में क़ातिल, कि क्यों उठा
गोया, अभी सुनी नहीं आवाज़ सूर[5] की

आमद बहार की है, जो बुलबुल है नग़मा-संज
उड़ती सी इक ख़बर है, ज़ुबानी तयूर[6] की

गो वां नहीं पे वां के निकाले हुए तो हैं
काबे से इन बुतों को भी निस्बत है दूर की

क्या फ़र्ज़ है, कि सबको मिले एक सा जवाब
आओ न, हम भी सैर करें कोहे-तूर[7] की

---

१. न किये हुए, २. दुनिया की अवज्ञा, ३. प्रकाश, ४. पवित्र शराब जो स्वर्ग में मिलेगी, ५. वह बिगुल जो क़यामत के दिन बजेगा, ६. पक्षी, ७ तूर नामक एक पहाड़ ।

गर्मी सही कलाम में, लेकिन न इस क़दर
की जिससे बात, उसने शिकायत ज़रूर की
'ग़ालिब', गर इस सफ़र में मुझे साथ ले चलें
हज का सवाब नज़्र करूंगा हुज़ूर की

* * * * *

ग़म खाने में बोदा, दिले - नाकाम बहुत है
ये रंज, कि कम है मए - गुलफ़ाम, बहुत है
कहते हुए साक़ी से हया आती है, वरना
है यों, कि मुझे दुर्दे - तहे - जाम[1] बहुत है
नै तीर कमाँ में है, न सैयाद कमीं[2] में
गोशे में क़फ़स के, मुझे आराम बहुत है
हैं अहले - ख़िरद[3] किस रविशे - ख़ास पे नाज़ां
पा बस्तगिये - रस्मो - रहे - आम[4] बहुत है
ज़मज़म ही पे छोड़ो, मुझे क्या तौफ़े - हरम[5] से
आलूदा ब - मै जामए - अहराम[6], बहुत है
है क़ेहर कि अब भी न बने बात, कि उनको
इंकार नहीं और मुझे इब्राम[7] बहुत है
ख़ूँ होके जिगर आंख से टपका नहीं, ऐ मर्ग
रहने दे मुझे यां, कि अभी काम बहुत है
होगा कोई ऐसा भी, कि 'ग़ालिब' को न जाने
शाइर तो वो अच्छा है, पे बदनाम बहुत है

---

१. प्याले की तह पर बची हुई तलछट. २. घात, ३. बुद्धिमान, ४. साधारण रीतिरिवाज की पाबन्दी, ५. काबा की परिक्रमा, ६. हज का पहनावा, ७. इब्राम।

रहा बला में भी मैं मुब्तिलाए - आफ़ते - रश्क
बलाए - जां है अदा तेरी एक जां के लिये

फ़लक न दूर रख उससे मुझे, कि मैं ही नहीं
दराज़ दस्तिए - क़ातिल के इम्तेहां के लिये

मिसाल ये मेरी कोशिश की है, कि मुर्ग़े - असीर
करे क़फ़स में फ़राहम[1] ख़स आशियां के लिये

गदा समझ के वो चुप था, मेरी जो शामत आये
उठा, और उठके क़दम, मैंने पास्वां के लिये

बक़द्रे - शौक़ नहीं, ज़र्फ़े - तंगनाए - ग़ज़ल[2]
कुछ और चाहिये वुसअत मेरे बयां के लिये

ज़ुबां पे बारे - ख़ुदाया ये किसका नाम आया
कि मेरे नुत्क़[3] ने बोसे मेरी ज़ुबां के लिये

ज़माना अहद में उसके है महवे - आराइश[4]
बनेंगे और सितारे अब आसमां के लिये

वरक़ तमाम हुआ और मदह[5] बाक़ी है
सफ़ीना चाहिये इस बहरे - बेकरां[6] के लिये

अदाए - ख़ास से 'ग़ालिब' हुआ है नुक़ता - सरा
सलाए - आम[7] है याराने - नुक्तदां के लिए

क़सीदे

ज़हरे - ग़म कर चुका था मेरा काम
तुझको किसने कहा कि हो बदनाम

---

१. जुटाना, २. गजल का माध्यम, ३. जबान, ४. शृंगार में मस्त, ५. तारीफ, ६. जिसका किनारा नहीं, ७. आम दावत ।

मै है फिर क्यों न मैं पिये जाऊं
ग़म से जब हो गई हो ज़ीस्त[1] हराम
बोसा कैसा ? यही ग़नीमत है
कि न समझें वो लज़्ज़ते दुश्नाम
काबे में जा बजायेंगे नाक़ूस[2]
अब तो बांधा है दैर[3] में अहराम[4]
इस क़दह[5] का है दौर मुझको नक़द
चर्ख़ ने ली है जिससे गर्दिश वाम[6]
बोसा देने में उनको है इन्कार
दिल के लेने में जिनको था इब्राम[7]
छेड़ता हूं कि उनको गुस्सा आये
क्यों रखूं वरना 'ग़ालिब' अपना नाम

❋ ❋ ❋ ❋ ❋

लिख दिया शाहिदों[8] को आशिक़ कुश
लिख दिया आशिक़ों को दुश्मन काम
आस्मां को कहा गया कि कहें
गुम्बदे तेज़ गर्द नीली फ़ाम
हुस्ने - नातिक़ लिखा गया कि लिखे
ख़ाल को दाना और ज़ुल्फ़ को दाम
आतिशो - आबो - बादो - ख़ाक़ ने ली
वज़ए - सोज़ो - नमो - रमो - आराम

---

१. जिंदगी, २. शंख, ३. मंदिर, ४. हज का बेसिला लिबास, ५. प्याला, ६. उधार, ७. हठ, ८. रूप वाले ।

मेहरे - रख़्शां का नाम ख़ुसरवे - रोज़
माहे - तावां का इस्म शहनए - शाम
तेरी तौक़ीए - सल्तनत को भी
दी बदस्तूर सूरते - इरक़ाम[1]
कातिबे - हुक्म ने बमूजिबे - हुक्म
उस रक़म को दिया तराज़े - दवाम
है अज़ल से रवानिए - आग़ाज़
हो अबद तक रसाइए - अंजाम[2]

* * * * *

गये वो दिन कि नादानिस्ता[3] ग़ैरों की वफ़ादारी
किया करते थे तुम तक़रीर हम ख़ामोश रहते थे
बस, अब बिगड़े पे क्या शर्मिन्दगी जाने दो मिल जाओ
क़सम लो हमसे गर ये भी कहें "क्यों हम न कहते थे"

सेहरा

खुश हो ऐ बख़्त[4] कि है आज तेरे सर सेहरा
बांध शहज़ादे जवां बख़्त के सर पर सेहरा
क्या ही इस चान्द से मुखड़े पे भला लगता है
है तेरे हुस्न दिल अफ़रोज़ का ज़ेवर सेहरा
सर पे चढ़ना तुझे फबता[5] है पर, ऐ तरफ़े - कुलाह[6]
मुझको डर है कि न छीने तेरा लम्बर सेहरा

---

१. भाग्य में लिखी गई, २. अनन्त काल तक बना रहे, ३. अनजाने, ४. भाग्य, ५. शोभा देना, ६. कुलाह, पगड़ी के नीचे की विशेष प्रकार की टोपी।

नाव भरकर ही पिरोये गये होंगे मोती
वरना क्यों लाये हैं किश्ती में लगाकर सेहरा
सात दरिया के फ़राहम किये होंगे मोती
तब बना होगा इस अन्दाज़ का गज़ भर सेहरा
रुख़ पे दूल्हा के जो गर्मी से पसीना टपका
है रगे - अब्रे - गुहर बार सरासर सेहरा
ये भी इक बेअदबी थी कि क़बा से बढ़ जाये
रह गया आन के दामन की बराबर सेहरा
जी में इतरायें न मोती कि हमीं है इक चीज़
चाहिये फूलों का भी एक मुकर्रर[1] सेहरा
जबकि अपने में समायें न ख़ुशी के मारे
गूंधे फूलों का भला फिर कोई क्योंकर सेहरा
रुख़े - रौशन की दमक गौहरे - ग़लतां की चमक
क्यों न दिखलाये फ़रोग़े - महोअख़्तर सेहरा
तार रेशम का नहीं है ये रगे - अब्रे - बहार
लायेगा ताबे - गरां बारिए - गौहर सेहरा
हम सुख़न - फ़हम[2] हैं 'ग़ालिब' के तरफ़दार नहीं
देखें कहदे कोई इस सेहरे से बढ़कर सेहरा[3]

    

---

१. और; दूसरा, २. शेर समझने वाला, ३. बादशाह के उस्ताद ज़ौक़ ने इस पंक्ति को अपने लिए चुनौती समझ लिया। उसने उत्तर में एक सेहरा तुरंत लिखा और गायकों द्वारा शेर में गवाया गया। ग़ालिब को भी पता चला और उसने क्षमा-याचना के तौर पर यह कविता बादशाह को लिखकर भेजी।

रुबाइयां

आतिश बाज़ी है जैसे शग़्ले - अत्फ़ाल[1]
है सोज़े जिगर का भी इसी तौर का हाल
था मूजिदे - इश्क़ भी क़यामत कोई
लड़कों के लिये गया है क्या खेल निकाल

⁂ ⁂ ⁂ ⁂ ⁂

दिल था कि जो जाने दर्द तम्हीद[2] सही
बेताबीए - रश्क व हसरते - दीद सही
हम और फ़शुरदन[3] ऐ तजल्ली अफ़सोस
तकरार रवां[4] नहीं तो तजदीद[5] सही

⁂ ⁂ ⁂ ⁂ ⁂

है ख़ल्क़ हसद क़माश लड़ने के लिये
वहशत कदा तलाश लड़ने के लिये
यानी हरबार सूरते - काग़ज़े - बाद[6]
मिलते हैं ये बदमाश लड़ने के लिये

⁂ ⁂ ⁂ ⁂ ⁂

दिल सख़्त नशन्द हो गया है गोया
उससे गिला मन्द हो गया है गोया
पर यार के आगे बोल सकते ही नहीं
'ग़ालिब' मुंह बन्द हो गया है गोया

१. बच्चों का खेल, २. प्रारंभ, ३. निचोड़ना, ४. उचित, ५. फिर शुरू करना, ६. हवारूपी कागज़ ।

✤ ✤ ✤ ✤ ✤

दुख जी के पसन्द हो गया है 'ग़ालिब'
दिल रुक-रुककर बन्द हो गया है 'ग़ालिब'
वल्लाह कि शब को नीन्द आती ही नहीं
सोना सौगन्द हो गया है 'ग़ालिब'

✤ ✤ ✤ ✤ ✤

मुश्किल है ज़बस[1] कलाम मेरा ऐ दिल !
सुन सुन के उसे सुख़न - वराने - कामिल[2]
आसान कहने की करते हैं फ़रमाइश
गोयम मुश्किल वगरना गोयम मुश्किल[3]

✤ ✤ ✤ ✤ ✤

कहते हैं कि अब वो मर्दम - आज़ार[4] कहीं
उश्शाक़ की पुरसिश से उसे आर[5] नहीं
जो हाथ कि ज़ुल्म से उठाया होगा
क्योंकर मानूं कि उसमें तलवार नहीं

✤ ✤ ✤ ✤ ✤

हम गरचे बने सलाम करने वाले
करते हैं दरंग[6] काम करने वाले

---

१. निसंदेह, २. सफल कवि, ३. मैं मुश्किल ही कह सकता हूं वरना मेरे लिए शेर कहना मुश्किल है, ४. मनुष्यों को सताने वाला, ५. लज्जा, ६. परेशान ।

कहते हैं कहो ख़ुदा से अल्लाह अल्लाह !
वो आप हैं सुबह शाम करने वाले

* * * * *

सामाने - ख़ुरो - ख़्वाब[1] कहां से लाऊं !
आराम के असबाब कहां से लाऊं
रोज़ा मेरा ईमान है 'ग़ालिब' लेकिन
ख़स ख़ानओ बर्फ़आब[2] कहां से लाऊं ?

क़तआ

एक अहले - दर्द ने सुनसान जो देखा क़फ़स
यों कहा आती नहीं अब क्यों सदाए - अन्दलीब
बालो पर दो चार दिखलाकर कहा सैयाद ने
ये निशानी रह गई है अब बजाये अन्दलीब

* * * * *

शब को ज़ौक़े - गुफ़्तगू से तेरे दिल बेताब था
शोख़िए - वहशत से अफ़साना फ़सूने - ख़्वाब था
वां हजूमे - नग़महाए - साज़े - इशरत था 'असद'
नाख़ूने - ग़म यां सर तारे नफ़स मिज़राब[3] था

* * * * *

दूद[4] को आज उसके मातम में सियह - पोशी हुई
वो दिले - सोज़ां कि कल तक शम्ए - मातम ख़ाना था

१. खाना और सोना, २. बर्फ़ का पानी, ३. सितार बजाने का यंत्र, ४. धुआं।

शिकवए - यारां गुबारे दिल में पिंहां कर दिया
'ग़ालिब' ऐसे गंज' को शायां यही वीराना था

✤ ✤ ✤ ✤ ✤

फिर वो सूए - चमन आता है खुदा ख़ैर करे
रंग उड़ता है गुलिस्तां के हवा दारों का

✤ ✤ ✤ ✤ ✤

'मीर' के शेर का अहवाल कहूं क्या 'ग़ालिब'
जिसका दीवान कमअज़ गुलशने - कश्मीर नहीं

✤ ✤ ✤ ✤ ✤

अब रोता है कि बज़्मे - तरब आमादा करो
बर्क़ हंसती है कि फुर्सत कोई दम दे हमको

✤ ✤ ✤ ✤ ✤

कमाले - हुस्न अगर मौक़ूफ़े - अन्दाज़े - तग़ाफुल हो
तकल्लुफ़ बर तरफ़ तुझसे तेरी तस्वीर बेहतर है

✤ ✤ ✤ ✤ ✤

चन्द तस्वीरे - बुतां, चन्द हसीनों के ख़तूत
बाद मरने के मेरे घर से ये सामां निकला

◇ ◇ ◇

1278